॥ राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ॥

पोथी

प्रेमबानी राधास्वामी

(दूसरी जिल्द)

चन्द्रप्रभा प्रेस बनारस में छापी गई व

राधास्वामी ट्रस्ट ने शाया की ।

सन् १९०६ ई०

१००० दूसरी बार] [क़ीमत २)

सूचीपत्र शब्द प्रेमबानी।

भाग दूसरा।

टेक			सफ़ा	कड़ी
अ				
अचरज लीला देख मगन मन	...	...	२२	९
अचल घर सजनी सुध लीजे	...	...	४५९	५
अजब राधास्वामी मत न्यारा	...	...	४७८	९
अडोला तेरी महिमा भारी	...	...	४७३	५
अधर चढ़ परख शब्द की धार	...	...	४१४	७
अधर चढ़ सुनी सरस धुन कान	...	...	४१९	७
अधर चढ़ सुनो शब्द की गाज	...	...	४१२	८
अनंता तेरी गत नहिं जानी	...	...	४७२	५
अनामी प्यारे राधास्वामी	...	...	४७१	५
अनेक मत जग में फैल रहे	...	...	५५	१४
अबोला तेरी लीला भारी	...	...	४७३	५
आ				
आज आई सुरत गुरु आरत धार	...	...	३४४	९
आज आई सुरत हिये उमग बढ़ाय	...	...	३७५	७
आज आई सुरत हिये प्रेम जगाय	...	...	३७८	६
आज आई सुरत हिये भाव धार	...	...	३७६	५
आज आई सुरतिया उमंग जगाय	...	...	३८४	११
आज आई सुरतिया उमंग भरी	...	...	३५०	६

टेक			सफ़ा	कड़ी
आज आई सुरतिया उमंग सम्हार	...	...	३५५	६
आज आई सुरतिया दर्द भरी	...	...	३७१	८
आज आई सुरतिया भाव भरी	...	...	३४०	७
आज आई सुरतिया रंग भरी	...	...	३४२	८
आज करो गुरू संग प्रीत सम्हार	...	...	३१८	२१
आज खेलूं कबड्डी घट में आय	...	...	३४३	७
आज खेलै सुरत गुरु चरनन पास	...	...	३४७	८
आज गाजै गगन धुन ओअं सार	...	...	३३३	६
आज गाजै सुरतिया अधर चढ़ी	...	...	३३६	७
आज गावे सुरत गुरु आरत सार	...	...	३४१	६
आज गावो गुरू गुन उमंग जगाय	...	...	३४८	१२
आज गुरु आये जग तारन	...	...	४७४	५
आज गुरु सतसंग क्यों न करै	...	...	४३३	५
आज घट दामिन दमक रही	...	...	४५३	५
आज घट वरषा रिम झिम होत	...	...	४४८	५
आज घट मेघा गरज रहे	...	...	४५२	५
आज घिर आये वादल कारे	...	...	४२०	७
आज चलो पियारी अपने घर	...	...	३१२	७
आज चलो विदेसन अपने देस	...	...	३११	९
आज चलो मनुआं घर की ओर	...	...	४३७	५
आज तजो सुरत निज मन का मान	...	...	३१५	२५
आज नाचे सुरतिया गगन चढ़ी	...	...	३५१	६
आज पकड़ो गुरू के चरन सम्हार	...	...	३२०	७
आज वरसत रिम झिम मेघा कारे	...	...	४२०	५
आज वाजै वीन सतपुर की ओर	...	...	३३१	५

टेक			सफ़ा	कड़ी
आज बाजै भंवर धुन मुरली सार	...	...	३३१	६
आज बाजै मुरलिया प्रेम भरी	...	...	३३०	६
आज बाजै सुन्न में सारंग सार	...	...	३३२	८
आज भींजे सुरत गुरु प्रेम रंग	...	...	३१९	८
आज मन मित्रा भक्ति कमाय	...	...	४३४	६
आज मांगे सुरतिया गुरु का संग	...	...	३५७	७
आज मांगे सुरतिया भक्ती दान	...	...	३५६	७
आज मानो सुरत सतगुरु उपदेश	...	...	३६७	६
आज मेरे मनुआं गुरु संग चल	...	...	४२५	५
आज लाई सुरतिया आरत साज	...	...	३३९	७
आज सजन घर बजत बधावा	...	...	७४	१९
आज सुनत सुरतिया घट में बोल	...	...	३५२	६
आज हंसन का जुड़ा समाज	...	...	२३	१२
आज हुई सुरत गुरु चरन अधीन	...	...	३८४	५
आज होली खेलो गुरू संग आय	...	...	४५१	५
आरत आगे राधास्वामी गाऊं	...	...	६०	१५
आरती गाऊं रंग भरी	...	...	६२	१२
आरती लाया सेवक पूर	...	...	९	७
आवो गुरु दरबार री मेरी प्यारी सुरतिया		...	३९१	६
उ				
उमंग कर धरत सुरत गुरु ध्यान	...	...	४१८	५
उमंग कर सुनो शब्द घट सार	...	...	४५७	७
क				
करो गुरु संग प्यार री मेरी भोली सुरतिया		...	३९०	७

टेक			सफ़ा	कड़ी
कुंवर प्यारा आरत लाया साज	...	...	५७	८
कोइ करो गुरू का सतसंग आज	...	...	३१३	६
कोइ करो गुरू संग हेत सम्हार	...	...	३८३	८
कोइ करो प्रेम से गुरु का संग	...	...	३८०	७
कोइ गहो गुरू की सरन सम्हार	...	...	३७२	२१
कोइ गावे गुरू की महिमां सार	...	...	३७०	८
कोइ चलो आज सतगुर की लार	...	...	३२१	७
कोइ चलो उमंग कर सुन नगरी	...	...	३२५	६
कोइ चलो गुरू संग अगम नगर	...	...	३२८	६
कोइ चेते सुरत जग देख असार	...	...	३६५	७
कोइ जागे सुरत सुन गुरु वचना	...	...	३६३	८
कोइ जाने सुरत गुरु महिमां सार	...	...	३६६	८
कोइ जोड़ो गुरू से नाता आय	...	...	३८१	१७
कोइ झांको झंझरिया विरह सम्हार	...	...	३२३	८
कोइ धारे गुरू के वचन सम्हार	...	...	३६८	८
कोइ धारो गुरू के चरन हिये	...	...	३७७	७
कोइ निरखो अधर चढ़ पिछली रात	...	...	३३७	१५
कोइ परखो गुरू की लीला सार	...	...	३२२	७
कोइ परसो चरन गुरु चढ़ गगना	...	...	३२४	७
कोइ भागे सुरत तज यह संसार	...	...	३६४	८
कोइ मिलो पुरुष से चल सतपुर	...	...	३२७	७
कोइ सुने पिरेमी घट धुन सार	...	...	३४५	७
कोइ सुनो अधर चढ़ गुरु के बैन	...	...	३६९	८
कोइ सुनो गगन धुन धर कर प्यार	...	...	३३४	६
कोइ सुनो प्रेम से गुरु की बात	...	...	३१०	७

टेक	सफ़ा	काड़ी
कोइ सुनो वचन सतगुरु के सार	३८९	६
कोई सुनो हिये में गुरु संदेस	३१४	१
ख		
खिला मेरे घट में आज बसंत	४५२	५
खेल गुरू संग आजरी मेरी प्यारी सुरतिया ...	३८९	६
खेल रही सूरत फाग नई	४६२	५
खोजी सुनो सत्त की बात	४८	१०
ग		
गाओ गाओ री सखी नित राधास्वामी ...	९८	१
गुरु परशाद भीत अब जागी	४१	१
गुरु संग प्रीत करो मेरे वीर	४४३	५
गुरू के चरनन आन पड़ी	११	१२
गुरू मोहि दीना भेद अपारी	८	८
गुरू संग चलना घर की बाट	४४२	५
च		
चढ़ सहस कंवल पद परस हरी	३३५	१
चरन गह जग से हुई न्यारी	४०३	१
चरन गुरु क्यों नहीं धारे मीत	४०४	१
चरन गुरु तन मन क्यों नहिं देत	४२६	५
चरन गुरु दिन दिन बढ़ती प्रीत	३०३	१
चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत	३३	१२

टेक	सफ़ा	कड़ी
चरन गुरु मनुआं काहे न दीन	४२७	५
चरन गुरु मनुआं हो जावो दीन	४३१	५
चरन गुरु सेवा धार रहा	१८	७
चरन गुरु हिये अनुराग सम्हार	१६	१५
चरन गुरु हिये में रही बसाय	४२९	५
चरन गुरु हिरदे आन बसाय	७	७
चरन गुर हिरदे धार रहा	६	७
चलो घर गुरु संग बांध कमर	४५९	५
चलो चढ़ो री सुरत सुन सुन्न की धुन	३२६	७
चेत कर क्यों न चलो गुरु साथ	४०५	७
छ		
छबीले छवि लगे तोरी प्यारी	४६८	३
छोड़ चल सजनी माया धाम	४४२	५
ज		
जगत तोहिं क्यों लागा प्यारा	४०२	७
जगत भय लज्या तज देव मीत	४३८	५
जगत में घेरा डाला काल	३४	२७
जगत संग मनुआं सदा मलीन	४२७	८
जाग री मेरी प्यारी सुरतिया	३८६	६
जांच कर त्यागो भोग असार	४३९	५
जो सच्चा परमारथी तिस को यही उपाय ...	१०१	८
ड		
डगर मेरी रोक रहा मन जार	३९९	८

टेक			सफ़ा	कड़ी
त				
तन मन धन से भक्ति करो री	...	...	४६६	५
त्याग चल सजनी माया देस	...	...	३९७	८
द				
दयाला मोहिं लीजे तारी	...	...	४१०	६
दरस गुरु निस दिन करना सही	...	...	४३०	५
दरस गुरु भाग से मिलिया	...	...	४१५	५
दरस गुरु मनुआं क्यों न खिले	...	...	४२४	५
दरस गुरु हियरे उठत उमंग	...	...	३९४	८
दरस गुरु हिरदे धारा नेम	...	...	२५	१०
दीन दिल आई सुरत गुरु पास	...	...	४१५	७
दीन दिल हिये अनुराग सम्हार	...	...	६४	१५
द्वार घट झांको विरह जगाय	...	...	४४९	७
ध				
धार नर देह किया क्या आय	...	...	४३२	५
ध्यान गुरु हिये में धरना ज़रूर	...	...	४३१	५
ध्यान धर गुरु चरनन चित लाय	...	...	४५५	५
न				
नाम रंग घट में लागा री	...	...	४८५	५
निज घर अपने चालरी मेरी प्यारी सुरतिया		...	३८७	६

टेक			सफ़ा	कड़ी
प				
पकड़ गुरु चरन चलो भौ पार	...	...	३९८	८
परख कर छोड़ो माया धार	...	...	४४१	५
परम गुरु राधास्वामी दातारे	...	...	४४	२१
पियारे मेरे सतगुरु दाता	..	...	४१०	५
प्रीत गुरु चरनन काहे न लाय	...	...	४२३	६
प्रीत गुरु छाय रही तन में	...	...	४	१७
प्रीत नवीन हियि अब जागी	...	...	४२	२१
प्रीत संग गहो गुरू सरना	...	...	४४६	५
प्रीत संग गुरु सेवा धारो	...	...	४४५	५
प्रेम प्रकाशा सूरत जागी	...	...	१४	९
प्रेम बिन चले न घर की चाल	...	...	४४७	५
प्रेम संग आरत करत रहूं	...	...	६९	१५
ब				
बचन गुरु मनुआं लो आज मान	...	...	४३५	६
बचन सतगुरु सुने भारी	...	...	४११	८
बचन सुन बढ़ा हिये अनुराग	...	...	५२	११
बढ़त सतसंग अब दिन दिनें	...	...	४८०	८
बाल समान चरन गुरु आई	...	...	६२	५
बिसारो मनुआं जग की कार	...	...	४५८	५
बोल री मेरी प्यारी मुरलिया	...	...	३२९	५
भ				
भाग जगे गुरु चरनन आई	...	...	१५	११

टेक		सफ़ा	कड़ी
भाव धर करत सुरत गुरु सेव	...	४१७	५
भाव संग गुरू दरशन कीजे	...	४४४	५
भाव संग पकड़ गुरू चरना	...	४४५	६
भूल और भरम बढ़ा जग माहिं	...	११७	१५
म			
मगन मन गुरु सन्मुख आया	...	१०	७
मगन हुई सुरत दरश गुरु पाय	...	५९	८
मान तज चरनन आन पड़ी	...	६७	१७
मान तज प्यारी गुरु से मिल	...	४४८	५
मान मद त्याग करो गुरु संग	...	३९५	८
मिले मोहिं आज गुरु पूरे	...	४७९	८
मेरी लागी गुरू संग प्रीत नई	...	३४६	७
मेरे उठी कलेजे पीर घनी	...	३६२	६
मैं पाया दरस गुरू का	...	५१	८
र			
रंगीले रंग देव चुनर हमारी	...	४६८	५
रसीले छोड़ो अमृत धारा	...	४६९	४
राधास्वामी अगम अनाम अपारे	...	१०९	१७
राधास्वामी गत कोई नहिं जाने	...	१०८	१५
राधास्वामी गुन गाऊं मैं दमदम	...	८९	१७
राधास्वामी चरन दृढ़ कर पकड़े	...	३५९	६
राधास्वामी चरन पर जाऊं बलिहार	...	११६	१६

टेक		सफ़ा	कड़ी
राधास्वामी चरन में मन अटका	...	३५२	८
राधास्वामी चरन में सुर्त लागी	...	३५४	६
राधास्वामी चरन लगे मोहिं प्यारे	...	१०४	१२
राधास्वामी चरन सीस में डारा	...	११३	२१
राधास्वामी दरस दिया मोहिं जब से	...	९१	१९
राधास्वामी धरा जग गुरु अवतार	...	१२२	१२
राधास्वामी नाम की महिमा भारी	...	१२५	१२
राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई	...	९६	७
राधास्वामी नाम सम्हार	...	८५	१५
राधास्वामी परम पुरुष दातारे	...	१२०	१४
राधास्वामी प्रीत जगाऊं निस दिन	...	८२	२७
राधास्वामी प्रीत हिये छाय रही	...	३५४	६
राधास्वामी प्यारे प्रेम निधान	...	९४	७
राधास्वामी मत में धारा नीका	...	१११	१५
राधास्वामी महिमा कस करूँ बरनन	...	९९	१८
राधास्वामी महिमा को सके गाय	...	१२३	१४
राधास्वामी महिमा क्या कहूं भारी	...	१०६	१५
राधास्वामी मुझ पर मेहर करी री	...	११८	१४
राधास्वामी मेरे गुरु दातारे	...	१०३	९
राधास्वामी मेरे प्यारे दाता	...	८७	२१
राधास्वामी सम कोइ मित्र न जग में	...	१२६	१५
राधास्वामी सरन निज कर धारी	...	३५८	७
ल			
लिपट गुरु चरन प्रेम संग आज	...	४००	८

टेक	सफ़ा	कड़ी
स		
सखी देखो आज बहार बसंत ...	४६३	५
सज्जन प्यारे जड़ सँग गांठी खोल ...	४७८	७
सजन प्यारे मनकी कहन न मान ...	४७६	८
सजन संग मनुआं कर आज प्रीत ...	४३६	५
सतगुरु चरन अनुराग पिरेमन हिये धर आई ...	२१	११
सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे ...	४७	११
सतगुरु चरन प्रीत भई पोढ़ा ...	२०	८
सत्तपद खोज मिलो घट आय ...	४१३	७
संत किया सतसंग जगत में ...	४९	१६
संत मत भेद सुना जबही ...	५४	११
संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ...	७७	४५
सरन गुरु आई सुरत धर प्यार ...	४१६	७
सरन गुरु गहो हिये धर प्यार ...	३९६	७
सरन गुरु प्रानी क्यों नहिं ले ...	४२८	५
सरन गुरु सतसंग जिन लीनी ...	२६	१५
सरन गुरु हुआ मोहिं आधार ...	११	९
सुनो धुन घट में सूरत जोड़ ...	४५६	६
सुनो मन घट में गुरु बानी ...	४६०	५
सुरत आई उँमगत गुरु के पास ...	४६४	५
सुरत गत निरमल बुन्द सरूप ...	३१	२७
सुरत गुरु चरनन आन धरी ...	४४०	५
सुरत दृढ़ कर गुरु सरन गही ...	५८	७
सुरत पियारी उमगत आई ...	१९	७

टेक	सफ़ा	कड़ी
सुरत प्यारी गुरु मिल आई जाग ...	२८	२९
सुरत प्यारी चित धर अगम विवेक ...	३९	१७
सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी ...	४०७	८
सुरत प्यारी झांको घट में आय ...	४११	७
सुरत प्यारी झूलत आज हिंडोल ...	४२१	६
सुरत प्यारी मन संग क्यों भरमाय ...	४०९	११
सुरत प्यारी मन से यारी तोड़ ...	४१०	७
सुरत मेरी गुरु चरनन अटकी ...	६६	९
सुरत मेरी गुरु संग हुई निहाल ...	४३५	६
सुरत मेरी प्यारे के चरनन पड़ी ...	४२३	५
सुरत रंगीली सतगुरु प्यारी ...	३७	१५
सुरत हुई मगन दरस गुरु पाय ...	४६५	५
सुरतिया अटक रही ...	१४०	१२
सुरतिया अधर चढ़ी गुरु दई प्रेम की दात ...	२३८	११
सुरतिया अधर चढ़ी धर सतगुरु रूप धियान ...	२७२	१७
सुरतिया अभय हुई ...	२२४	९
सुरतिया अमन हुई ...	२९९	८
सुरतिया अमर हुई ...	१४५	१२
सुरतिया आन पड़ी ...	२२०	८
सुरतिया ओट गही ...	१९२	७
सुरतिया उमंग भरी आज लाई आरती साज ...	२३१	१०
सुरतिया उमंग भरी मिली गुरु से खोल कपाट ...	२९८	८
सुरतिया उमंग भरी रही गुरु चरनन लिपटाय ...	२६४	१५
सुरतिया कहत सुनाय सुनाय ...	१३९	१२
सुरतिया केल करत ...	२०३	५

टेक	सफ़ा	कड़ी
सुरतिया खड़ी रहे	१८५	८
सुरतिया खिलत रही	२०१	५
सुरतिया घूम गई	२५१	१२
सुरतिया खेल रही गुरु चरनन पास ...	२११	७
सुरतिया खेल रही गुरु बाग़न बीच ...	२८०	७
सुरतिया गगन चढ़ी	१५४	११
सुरतिया गाज रही	२५९	१५
सुरतिया गाय रही गुरु महिमा सार ...	२३९	११
सुरतिया गाय रही नित राधास्वामी नाम दयाल...	१२९	५
सुरतिया गाय रही राधास्वामी नाम अपार ...	२०५	५
सुरतिया चटक चली	२४५	१२
सुरतिया चढ़त अधर	२९४	८
सुरतिया चरन गहे	२८१	७
सुरतिया चाख रही	२०३	५
सुरतिया चाह रही	१७२	७
सुरतिया चुप्प रही	२००	५
सुरतिया चेत रही	१४८	२१
सुरतिया छान रही	२२५	१०
सुरतिया छोड़ चली	१३२	८
सुरतिया जाग उठी गुरु नाम सुमिर धर प्यार ...	१३७	१२
सुरतिया जाग उठी सुन बचन गुरू के सार ...	२७६	२१
सुरतिया जाग रही	१६१	११
सुरतिया जाय बसी	३८८	७

टेक	सफ़ा	कड़ी
सुरतिया निरख परख	१६९	१९
सुरतिया निरख रही घट अन्तर	२०८	७
सुरतिया निरख रही घट माहिं...	२३४	११
सुरतिया निरत करत	२२२	८
सुरतिया न्हाय रही	२८७	१२
सुरतिया पकड़ गुरू की बांह	२३६	११
सुरतिया परख परख	१६७	१७
सुरतिया परख रही	२३२	११
सुरतिया परस रही	२०६	५
सुरतिया पियत अमीं	२९३	९
सुरतिया पूज रही	२१७	९
सुरतिया प्यार करत	२१४	७
सुरतिया प्रीत करत	२१८	८
सुरतिया प्रीत भरी	२३५	११
सुरतिया प्रेम भरी	२६३	१५
सुरतिया प्रेम सहित	२१५	७
सुरतिया फड़क रही	२७२	५
सुरतिया फूल रही	१८६	११
सुरतिया वचन सम्हार	२८५	९
सुरतिया बांह गही	१९१	७
सुरतिया बिगस रही	१५३	९
सुरतिया विनय करत	१७१	५
सुरतिया बुंद अंस	३०२	१२
सुरतिया बोल रही	१४३	१२
सुरतिया भक्ति करत	२९६	१७

टेक	सफ़ा	कड़ी
सुरतिया रंग भरी गुरु सन्मुख	२५४	१५
सुरतिया लखत अधर घर	२९५	१०
सुरतिया लाग रही	२६१	१५
सुरतिया लाय रही	२०५	५
सुरतिया लाल हुई	१५१	५
सुरतिया लिपट रही धर शब्द	२५२	१२
सुरतिया लिपट रही मन इन्द्रियन	१४६	१७
सुरतिया लीन हुई	२२९	१०
सुरतिया सज धज से आई	२०४	५
सुरतिया समझ गई	३०४	२५
सुरतिया समझ बूझ	२८६	११
सुरतिया सरन गही	१९७	१२
सुरतिया सरन पड़ी	१९८	१५
सुरतिया साज रही	१७४	१२
सुरतिया सींच रही	२१६	७
सुरतिया सील भरी	२१२	७
सुरतिया सुनत रही धुन शब्द	१५८	११
सुरतिया सुनत रही हित चित	२४२	१२
सुरतिया सुमिर रही	१३१	१२
सुरतिया सेव रही गुरु चरन सम्हार	२४३	१२
सुरतिया सेव करत गुरु चरन हिये ...	१७८	१५
सुरतिया सेव करत गुरु भक्तन	१८४	७
सुरतिया सोच करत	१३६	११
सुरतिया सोच भरी	१७६	१४
सुरतिया सोय रही	२७८	५

टेक	सफ़ा	कड़ी
सुरतिया हरख रही आज गुरु छवि ...	२०९	७
सुरतिया हरख रही गुरु देख जमाल ...	२४६	१२
सुरतिया हरख हरख	२८३	७
श		
शब्द की झड़ियां लाग रहीं	४५०	४
शब्द धुन सुनो त्याग मन काम	४६१	५
शब्द संग मूरत अधर चढ़ाय	४५५	५
ह		
हाल जग देखो दृष्टी खोल	४३९	५
हिंडोला झूले सुर्त प्यारी	४६२	४
हिल मिल गुरु संग करोरी पिरीती	४५४	५
हुआ मन गुरु चरनन आधीन	१२	१५
हे राधास्वामी सतगुरु दयारा	१	१९
होली खेलें सुरत आज हंसन संग	३६१	७
होली खेलें सुरतिया सतगुरु संग	३६०	५

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी जिल्द दूसरी

॥ आरत बानी भाग तीसरा बचन नवां ॥

॥ शब्द १ ॥

हे राधास्वामी सतगुरू दयारा ।
गत तुम्हरी अति अगम अपारा ।
मोहिं निरबल को लीन उबारा ॥ १ ॥
माया भाव हटाया सकला ।
दरशन को मन तड़पत बिकला ।
खैंच चरन में दिया सहारा ॥ २ ॥
गुरू संगत में लीन मिलाई ।
सुरत शब्द दिया भेद सुहाई ।
साध संग मोहिं लीन सुधारा ॥ ३ ॥

राधास्वामी मोहिं अति दीन लखारो ।
दिन दिन मेरी दया बिचारी ।
मेहर दया से लीन संवारा ॥ ४ ॥
सतसंग करत हुआ मन चूरा ।
करम भरम सब कीने दूरा ।
काल बिघन सब दीन निकारा ॥ ५ ॥
सेवा करत प्रीत नई जागी ।
सुरत निरत गुरु चरनन पागी ।
गुरु सरूप लागा अति प्यारा ॥ ६ ॥
गुरु छबि देख हुई मतवारी ।
तन मन धन चरनन पर वारी ।
दरशन पर जाऊं बलिहारा ॥ ७ ॥
गुरु की दया कहूं कस गाई ।
बालक सम मोहिं गोद बिठाई ।
औगुन मेरे कुछ न बिचारा ॥ ८ ॥
गुरु परतीत हिये में छाई ।
दिन दिन होती प्रीत सवाई ।
राधास्वामी सरन अब मिला अधारा ॥९॥

जग ब्यौहार लगा अब फीका।
तज जग भोग प्रेम रस चीखा।
झूठ लगा सब काल पसारा ॥१०॥
सुरत शब्द अभ्यास कराई।
गुरू बल सूरत अधर चढ़ाई।
निरखी घट में अजब बहारा ॥ ११ ॥
राधास्वामी मेहर कहूं मैं कैसे।
सहजहि मोहिं उबारा जैसे।
छिन छिन करती शुकर पुकारा ॥१२॥
छिन छिन हियरे उमंग बढ़ावत।
कर सिंगार करूं गुरु आरत।
नई नई सामां कर बिस्तारा ॥ १३ ॥
भूषन बस्तर अजब बनाये।
कर सनमान गुरू पहिनाये।
अचरज सोभा निरख निहारा ॥१४॥
अनेक पदारथ किये तैयारा।
गुरू आगे धरे साज संवारा।
सोभा बाढ़ी गुरू दरबारा ॥१५॥

बिंजन अनेक थाल भर लाई ।
सतगुरु सन्मुख भोग धराई ।
मान लिया गुरु कर अति प्यारा ॥१६॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।
देख समां चित में हरखाये ।
सब मिल गावें गुरु गुन सारा ॥१७॥
आरत धूम मची अब भारी ।
सतगुरु चरनन आरत धारी ।
गगन मंडल में बजा नगारा ॥१८॥
राधास्वामी दया सेव बन आई ।
भाग आपना कहा सराही ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपारा ॥१९॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीत गुरु छाय रही तन में ।
ध्यान गुरु लाय रही मन में ॥ १ ॥
गाय रही राधास्वामी गुन छिन में ।
सुमिर रही राधास्वामी पल खिन में ॥२॥

परख रही मेहर गुरू जिये में ।
सुनत रही राधास्वामी धुन हिये में ॥३॥
दया की गुरु ने कीनी दात ।
शब्द रस लेत सुरत दिन रात ॥ ४ ॥
सरस धुन घट में बाज रही ।
त्याग दई मन से मान मई ॥ ५ ॥
सुरत मन चालत निज घर बाट ।
अहंग मम छोड़ दिया निज घाट ॥६॥
सुनत रही घंटा संख पुकार ।
झांक रही सूरत जोत अकार ॥ ७ ॥
बंक धस निरखा त्रिकुटी धाम ।
समझ लई महिमा मैं गुरु नाम ॥ ८ ॥
दसम दर पहुंची पाट खुलाय ।
अमीं रस छिन छिन पियत अघाय ॥९॥
महासुन पार गई गुरु लार ।
सुनत रही गुप्त शब्द धुन चार ॥१०॥
भंवर गढ़ कीना जाय निवास ।
करत धुन मुरली संग बिलास ॥ ११ ॥

अमरपुर जाय सुनी धुन बीन ।
मगन हुई सतगुरु लीला चीन ॥ १२ ॥
अलखपुर पहुंची लगन बढ़ाय ।
पुरुष का दरशन अद्भुत पाय ॥ १३ ॥
अगमपुर निरखा जाय समाज ।
करत जहां अगम पुरुष कुल राज ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार ।
उमंग कर आई आरत धार ॥ १५ ॥
चरन में दिये वार तन मन ।
हुए राधास्वामी गुरु परसन ॥ १६ ॥
मेहर से लीना अंग लगाय ।
कहूं क्या आनंद बरना न जाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

चरन गुर हिरदे धार रहा ।
दया राधास्वामी मांग रहा ॥ १ ॥
नित्त गुरु दर्शन करता आय ।
हिये में छिन छिन प्रीत बढ़ाय ॥ २ ॥

उमंग कर परशादी लेता।
चरन गुरु हिरदे में सेता ॥ ३ ॥
प्रेम संग गुरु बानी गाता।
नाम राधास्वामी नित ध्याता ॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।
हिये में दृढ़ निश्चय धरता ॥ ५ ॥
गावता गुरु गुन उमंग उमंग।
प्रीत से करता सतगुरु संग ॥ ६ ॥
आरती गाई तन मन वार।
मेहर राधास्वामी पाई सार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

चरन गुरु हिरदे आन बसाय।
सरन में निस दिन उमगत धाय ॥ १ ॥
गुरू से हरदम करता प्यार।
बचन उन धरता हिये मंझार ॥ २ ॥
आरती गावत उमँग उमंग।
गुरू का करता निस दिन संग ॥ ३ ॥

मगन होय नये नये बस्तर लाय।
गुरू को देता आप पहिनाय ॥ ४ ॥
गुरू की सोभा निरख निहार।
हिये में नित्त बढ़ाता प्यार ॥ ५ ॥
गुरू संग खेलत दिन और रात।
निरख छबि गुरु के बल बल जात ॥६॥
उमंग कर लेता गुरु परशाद।
चरन राधास्वामी रखता याद ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरू मोहिं दीना भेद अपारी।
शब्द धुन सुन हुआ आनंद भारी ॥१॥
सुरत की लागी घट में ताड़ी।
धुनन की होत जहां भनकारी ॥ २ ॥
चरन में निस दिन प्रेम बढ़ारी।
मेहर गुरु कीनीं मनुआं हारी ॥ ३ ॥
थकित होय बैठी माया नारी।
सुरत रही पियत अमीं रस सारी ॥४॥

छोड़ नभ चढ़ गई गगन अटारी।
चंद्र लख सेत सूर निरखारी ॥ ५ ॥
अमरपुर दर्शन पुर्ष निहारी।
सुनत रही मधुर बीन धुन सारी ॥ ६ ॥
अलख और अगम प्यार कीना री।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी ॥ ७ ॥
संत मोपै मेहर करी अति भारी।
दई मोहिं परशादी कर प्यारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

आरती लाया सेवक पूर।
चरन गुरु प्रेम रहा भर पूर ॥ १ ॥
हिये का लीना थाल सजाय।
प्रीत की लीनी जोत जगाय ॥ २ ॥
आरती गावत सहित उमंग।
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग ॥ ३ ॥
बजत रहा घट अनहद बाजा।
संख और घंटा धुन साजा ॥ ४ ॥

सुनत रहा गरज मेघ मिरदंग।
सुन्न में बाजी धुन सारंग ॥ ५ ॥
मधुर धुन मुरली बाज रही।
अमरपुर बीना गाज रही ॥ ६ ॥
मेहर गुरु दीना यह साजा।
सरन राधास्वामी पाय राजा ॥७॥

॥ शब्द ७ ॥

मगन मन गुरु सन्मुख आया।
आरती प्रेम सहित लाया ॥१॥
पदारथ नये नये हित से लाय।
धरे गुरु सन्मुख थाल भराय ॥२॥
सजा गुरु भक्ती की थाली।
प्रीत गुरु जीत लई बाली ॥३॥
आरती हंसन संग गाता।
उमंग अब नई नई दिखलाता ॥४॥
धूम आरत की हुई भारी।
स्वामी ने मेहर करी न्यारी ॥५॥

शब्द धुन घट में डाला शोर ।
घटा अब काल करम का ज़ोर ॥६॥
मेहर सतगुरु परशादी पाय ।
चरन राधास्वामी परसे आय ॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु हुआ मोहिं आधार ।
चरन में आई धर कर प्यार ॥१॥
करूं नित दर्शन दृष्टि सम्हार ।
पिऊं मैं चरन अमीं रस सार ॥२॥
करूं गुरु आरत नित्त नवीन ।
रहूं गुरु चरनन दीन अधीन ॥३॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते ।
निरख गुरु छबि हिये मगनाते ॥४॥
बजत घट बाजे घंटा संख ।
सुरत धस चढ़ती नाली बंक ॥५॥
गगन में धुन मिरदंग सुनाय ।
दसम दर चन्द्र रूप दरसाय ॥६॥

भंवर में सेत सूर परकास।
करूं धुन मुरली संग बिलास ॥७॥
अमरपुर होय अलख लखिया।
परे चढ़ दरस अगम तकिया ॥८॥
वहां से राधास्वामी धाम गई।
उमंग कर राधास्वामी चरन पई ॥९॥

॥ शब्द ९ ॥

हुआ मन गुरु चरनन आधीन।
लखी गुरु मूरत घट में चीन ॥१॥
भरोसा गुरु चरनन में लाय।
प्रेम गुरु छिन छिन रहूं जगाय ॥२॥
टेक गुरु धारी कर बिस्वास।
मगन होय करता चरन निवास ॥३॥
जपत रहुं निस दिन राधास्वामी नाम।
धार रहूं हिये में भक्ति अकाम ॥४॥
करें गुरु सब बिधि मेरा काज।
देयं मोहिं बख्शिश भक्ती राज ॥५॥

उमंग मन गुरु सेवा में लाग ।
बढ़ावत छिन छिन अपना भाग ॥६॥
मेरे मन चिन्ता यही समाय ।
लेउं मैं किस बिधि गुरू रिझाय ॥७॥
दीन अंग मांगूं गुरु की मेहर ।
हटाऊं मन की सबही लहर ॥८॥
चरन में चित नित जोड़ रहूं ।
शब्द धुन सुन नभ फोड़ चढ़ूं ॥९॥
निरख फिर घट में जोत उजार ।
गगन गुरु धारूं हिये में प्यार ॥१०॥
सुन्न चढ़ लखा भवंर अस्थान ।
लगा धुन मुरली से अब ध्यान ॥११॥
अमरपुर किये सतगुरु दर्शन ।
वार रही तन मन गुरु चरनन ॥१२॥
अलख गुरु लीना चरन मिलाय ।
अगम गुरु मेहर करी अधिकाय ॥१३॥
दया राधास्वामी की गहिरी ।
सुरत जाय उन चरनन ठहरी ॥१४॥

परम पद संतन का यह धाम।
उठत जहां छिन छिन धुन निज नाम ॥१५॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम प्रकाशा सूरत जागी।
शब्द गुरू के चरनन लागी ॥१॥
सील छिमा चित आय समाई।
काम क्रोध अब गये नसाई ॥२॥
सतसंग में मन चित्त खिलाना।
दरस अमीरस नित्त पिलाना ॥३॥
मन हुआ लीन गुरू चरनन में।
सुरत लगी अब जाय धुनन में ॥४॥
घट भीतर अब देख उजारी।
तन मन की गई सुद्ध बिसारी ॥५॥
जोत निरख फिर देखा सूर।
सारंग सुनत हुआ मन चूर ॥६॥
मुरली धुन चढ़ गुफा बजाई।
अमर लोक सतशब्द सुनाई ॥७॥

अलख अगम चढ़ पहुंची छिन में ।
रली जाय राधास्वामी चरनन में ॥८॥
वहां आरती प्रेम सिंगारी ।
राधास्वामी दया करी कर प्यारी ॥९॥

॥ शब्द ११ ॥

भाग जगे गुरु चरनन आई ।
राधास्वामी संगत सेवा पाई ॥१॥
दई जनाय गुरु हितकारी ।
परमारथ की महिमां भारी ॥२॥
दिन दिन प्रीत नवीन जगाता ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाता ॥३॥
सतसंगियन संग प्रीत बढ़ाता ।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाता ॥४॥
सुरत शब्द का पाया भेद ।
जनम जनम के मिट गये खेद ॥५॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा ।
करम भरम का कूड़ा झाड़ा ॥६॥

गुरु परतीत पकाऊं दिन दिन।
राधास्वामी प्रेम जगाऊं छिन छिन ॥७॥
जगत भाव सब ही तज डारूं।
उमंग सहित गुरु आरत धारूं ॥८॥
बिनय सुनो गुरु दया बिचारी।
सत संगत में रहूं सदारी ॥९॥
निस दिन दरस गुरू का पाऊं।
चरनामृत परशादी खाऊं ॥१०॥
नित गुन गाऊं चरन धियाऊं।
राधास्वामी २ सदा मनाऊं ॥११॥

॥ शब्द १२ ॥

चरन गुरु हिये अनुराग सम्हार।
सुरत प्यारी आई गुरु दरबार ॥१॥
जगत का भय और भाव निकार।
बचन गुरु सुनती चित्त सम्हार ॥२॥
दरस कर होत मगन हर बार।
ताक गुरु नैन बढ़ावत प्यार ॥३॥

गुरू से ले अचरज उपदेश ।
तजत अब छिन २ माया देश ॥ ४ ॥
अधर घर प्रीत लगी सारी ।
लगी कृत फीकी संसारी ॥ ५ ॥
शब्द धुन सुनत हुआ मन चूर ।
प्रेम गुरु रहा हदे में पूर ॥ ६ ॥
जगत के दुख सुख बिसरत-जायं ।
चरन गुरू धारत हिरदे माहिं ॥ ७ ॥
कहूं क्या महिमां गुरु सतसंग ।
उलट कर फेरे मन के अंग ॥ ८ ॥
पड़ा था भोगन में बीमार ।
हुआ अब चरनन रस आधार ॥ ९ ॥
भरमता जग में इच्छा लार ।
उलट कर धारा गुरु रंग सार ॥१०॥
पिरेमी जन लागें प्यारे ।
संग उन गुरु सेवा धारे ॥११॥
समझ में आई सतसंग रीत ।
जगी गुरु चरनन नई परतीत ॥१२॥

निरख गुरु संगत की लीला ।
भरम तज हुए मन चित सीला ॥१३॥
गुरू का सतसंग नित चाहूं ।
प्रीत नई हिये में उमगाऊं ॥१४॥
मेहर मोपै कीजे दीन दयार ।
रहूं नित राधास्वामी चरनन लार ॥१५॥

॥ शब्द १३ ॥

चरन गुरु सेवा धार रहा ।
बिघन मन सहज निकार रहा ॥ १ ॥
पड़ा था सतसंग से मैं दूर ।
भाग से पाया दरस हजूर ॥ २ ॥
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।
कुटंब सब लीना चरन लगाय ॥ ३ ॥
पिरेमी जन के दर्शन पाय ।
मगन होय करता सेवा धाय ॥ ४ ॥
देख नित गुरु सतसंग बिलास ।
उमंग मन चाहत चरन निवास ॥ ५ ॥

चित्त में धारूं गुरु उपदेस ।
सुनत रहूं महिमा सतगुरु देस ॥ ६ ॥
नित्त गुरु बानी पढ़त रहूं ।
नाम राधास्वामी जपत रहूं ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत पियारी उमगत आई ।
राधास्वामी चरनन सीस नवाई ॥ १ ॥
सतसंग की अभिलाख बढ़ाई ।
राधास्वामी नाम जपत सुख पाई ॥ २ ॥
नित गुरु दरशन धावत करती ।
रूप सोहावन हिये में धरती ॥ ३ ॥
आरत गावत होत अनंदा ।
करम भरम का काटा फंदा ॥ ४ ॥
सतसंगियन से करती मेल ।
मन इंद्री संग तजती केल ॥ ५ ॥
उमंग बढ़ावत प्रेम जगावत ।
आरत बानी नित नित गावत ॥ ६ ॥

नित गुन गावत जागे भाग ।
राधास्वामी चरन सुरत रही लाग ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु चरन प्रीत भई पोढ़ा ।
लाय रही अब सूरत डोरा ॥ १ ॥
नित्त बिलास नवीन निरखती ।
मेहर दया घट माहिं परखती ॥ २ ॥
मन और सूरत अधर सरकते ।
शब्द अमीं रस पाय फड़कते ॥ ३ ॥
गुरु दयाल की दया निहारत ।
छिन छिन जग भय भाव बिसारत ॥४॥
घंटा संख सुनत मगनानी ।
त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप दिखानी ॥ ५ ॥
सुन में जाय किये अस्नान ।
हंसन रूप देख हरखान ॥ ६ ॥
गुफा परे जाय सुनी बीन धुन ।
अलख अगम दरशन किया पुन पुन ॥७॥

राधास्वामी धाम गई पुन धाई ।
मेहर हुई सुत चरन समाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु चरन अनुराग ।
पिरेमन हिये धर आई ॥ १ ॥
जग भय लज्या त्याग ।
सुरत गुरु चरनन धाई ॥ २ ॥
जगा मेरा अचरज भाग ।
मेहर गुरु करी है बनाई ॥ ३ ॥
जगत भोग और राग ।
तजत मन सोच न लाई ॥ ४ ॥
सूरत छिन छिन जाग ।
शब्द संग अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
सुन घट धुन और राग ।
सुरत मन अति हरखाई ॥ ६ ॥
निरखत नभ काला नाग ।
गुरू बल मार गिराई ॥ ७ ॥

छूट गई संगत मन काग।
हंस संग मेल मिलाई ॥ ८ ॥
अब मिट गए कल मल दाग।
मेहर गुरु कीन सफ़ाई ॥ ९ ॥
गुरु दीना शब्द सोहाग।
अधर पद रहूं लौ लाई ॥ १० ॥
राधास्वामी आरत धार।
प्रेम से निस दिन गाई ॥ ११ ॥

॥ शब्द १७ ॥

अचरज लीला देख मगन मन।
उमंग उमंग करती गुरु दरशन ॥ १ ॥
हरख हरख गावत गुरु बानी।
परख परख गुरु मेहर निशानी ॥ २ ॥
नित नित सुनती अनहद तूर।
खटपट मन की करती दूर ॥ ३ ॥
झटपट सुरत अधर को जाती।
लटपट धुन सुन माहिं समाती ॥ ४ ॥

चमन चमन फुलवार दिखानी।
बाग़ बाग़ हिये माहिं खिलानी ॥ ५ ॥
सुरत शब्द संग करती मेला।
त्रिकुटी धाम करत नित केला ॥ ६ ॥
गुरु के रंग रंगी स्रुत प्यारी।
आगे चढ़ सत शब्द सम्हारी ॥ ७ ॥
अलख अगम के चढ़ गई पार।
राधास्वामी चरन किया दीदार ॥ ८ ॥
राधास्वामी मेहर पाई मैं आज।
सहज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥

॥ शब्द १८ ॥

आज हंसन का जुड़ा समाज।
पिरेमी लाया आरत साज ॥ १ ॥
बिरह की थाली कर धारी।
जुगत की जोत जगी न्यारी ॥ २ ॥
भाव के बिंजन लिए सजाय।
प्रीत के बस्तर गुरु पहिनाय ॥ ३ ॥

उमंग उठी हिरदे में भारी।
प्रेम संग आरत गुरु धारी ॥ ४ ॥
बना आरत का अद्भुत साज।
दया गुरु शब्द रहा घट गाज ॥ ५ ॥
होत अस घट में धुन बन बन।
धन्य राधास्वामी गुरु धन धन ॥ ६ ॥
सुनी फिर और धुन्न घन घन।
मगन होय त्रिकुटी धाया मन ॥ ७ ॥
बोल रही जहां निज धुन मिरदंग।
सुन्न चढ़ जागी धुन सारंग ॥ ८ ॥
भंवर में मुरली रही पुकार।
अमरपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ९ ॥
अलखपुर सुनी गुप्त धुन जाय।
अगमपुर दरस अगम पुर्ष पाय ॥१०॥
उमंग कर पहुंची राधास्वामी धाम।
परम गुरु अकह अपार अनाम ॥११॥
दरस कर सूरत पाई शांत।
भीड़ तज होगई अब एकांत ॥१२॥

॥ शब्द १९ ॥

दरस गुरु हिरदे धारा नेम।
जगाती निस दिन घट में प्रेम ॥ १ ॥
भोग ले नित सन्मुख आती।
उमंग कर परशादी खाती ॥ २ ॥
देख गुरु द्वारे नया विलास।
हाज़री देती निस और बास ॥ ३ ॥
पिरेमी आवें नित गुरु पास।
देख उन मन में होत हुलास ॥ ४ ॥
बढ़त नित सतसंग की महिमां।
तरत सब जिव लग गुरु चरना ॥ ५ ॥
शब्द ने घट घट डाली धूम।
सुरत लगी चढ़ने इत से घूम ॥ ६ ॥
देखती घट में बिमल बहार।
डारती तन मन गुरु पर वार ॥ ७ ॥
रहें सब राधास्वामी के गुन गाय।
सुरत से राधास्वामी नाम जपाय ॥ ८ ॥

अमल रस परमारथ पीते।
गुरू बल मन इंद्री जीते ॥ ९ ॥
मेहर राधास्वामी करी बनाय।
दिया सब हंसन पार लगाय ॥१०॥

॥ शब्द २० ॥

सरन गुरु सतसंग जिन लीनी।
हुए मन सुरत चरन लीनी ॥ १ ॥
कहें सब महिमां सतसंग गाय।
भेद निज वहां का कोइ नहिं पाय ॥२॥
संत की महिमां जहां होई।
भेद निज घर का कहें सोई ॥ ३ ॥
शब्द का मारग जो गावें।
सुरत का रस्ता बतलावें ॥ ४ ॥
प्रेम गुरु देवें हिये दृढ़ाय।
सरन गुरु महिमां कहें सुनाय ॥ ५ ॥
सोई सतसंग सच्चा जानो।
जीव का कारज वहां मानो ॥ ६ ॥

मेहर से सतसंग अस मिलिया।
सुरत मन गुरू चरनन रलिया ॥ ७ ॥
सराहूं भाग अपना दम दम।
नाम गुरू जपत रहूं हरदम ॥ ८ ॥
कहूं क्या मन मोहिं धोखा दीन।
भोग रस इंद्री छिन छिन लीन ॥ ९ ॥
भूल कर अति दुख मैं पाया।
किए पर अपने पछताया ॥१०॥
इसी से रहता नित मुरझाय।
पुकारूं गुरू चरनन में जाय ॥११॥
मेहर मोपै कीजै गुरू दयाल।
काट दो माया का जंजाल ॥१२॥
शब्द रस पीवे मन होय लीन।
चरन में गुरू के दीन अधीन ॥१३॥
रहूं नित आरत गुरू की गाय।
सरन राधास्वामी हिये बसाय ॥१४॥
दया से कीजै कारज पूर।
रहूं नित चरन कंवल की धूर ॥१५॥

॥ शब्द २१ ॥

सुरत प्यारी गुरु मिल आई जाग।
बढ़त अब दिन दिन घट अनुराग ॥१॥
प्रेम का राधास्वामी दीना साज।
छोड़ दिया जग का भय और लाज ॥२॥
सुरत और शब्द मिला उपदेश।
धार रही सूरत हंसा भेस ॥ ३ ॥
कुमत अब घट से दीनी टार।
सुमत का लीना सहज बिचार ॥ ४ ॥
करत रहूं नित अभ्यास सम्हार।
निरख रही गुरु की मेहर अपार ॥ ५ ॥
अगम गत राधास्वामी की जानी।
जगत जिव क्योंकर पहिचानी ॥ ६ ॥
शब्द की कीनी घट पहिचान।
सुरत मन धुन संग सहज मिलान ॥ ७ ॥
नाम की महिमां जानी सार।
जपत रहूं राधास्वामी नाम अगार ॥८॥

संत मत बिन नहिं जीव उबार।
नहीं कोइ पावे निज घरबार ॥ ९ ॥
अटक रहे सब जिव करमन में।
भटक रहे अगिनत भरमन में ॥१०॥
लीक में बंध रहे अज्ञानी।
टेक पिछलो की मन ठानी ॥११॥
बिना सतगुरु और बिन सतसंग।
छुटे नहिं कबही माया रंग ॥१२॥
भाग मेरा धुर का जागा आय।
मिला मैं राधास्वामी संगत जाय ॥१३॥
पाय निज भेद हुई शांती।
दूर हुई मन की सब भ्रांती ॥१४॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।
बचन गुरु हिये अंतर धरता ॥१५॥
ध्यान गुरु रूप हिये में लाय।
सुरत मन छिन छिन चरन समाय ॥१६॥
मगन रहूं हरदम मन के मांहि।
गुरू की दृढ़ कर पकड़ी बांह ॥१७॥

मेहर राधास्वामी चाहूं नित्त।
चरन में जोड़ूं हित से चित्त ॥१८॥
भरोसा राधास्वामी मन में राख।
कहूं मैं जीवन से अस भाख ॥१९॥
सरन में राधास्वामी आवो धाय।
भाग परमारथ लेव जगाय ॥२०॥
मेहर मोपै राधास्वामी कीन अपार।
शुकर उन करता रहूं हर बार ॥२१॥
मेहर और इतनी करो बनाय।
देव मन सूरत अधर चढ़ाय ॥२२॥
झांक तिल खिड़की जाऊं पार।
सुनूं धुन घंटा नभ के द्वार ॥२३॥
वहां से त्रिकुटी पहुंचूं धाय।
गरज संग ओअंग नाद सुनाय ॥२४॥
सुन्न चढ़ हंसन संग कर प्यार।
बजाऊं किंगरी सारंग सार ॥२५॥
महासुन धाऊं सतगुरु संग
भंवर चढ़ गाऊं धुन सोहंग ॥२६॥

अमर पुर सुनूं बीन धुन सार ।
पुरुष का दरशन करूं निहार ॥२७॥
अलख और अगम का दरशन पाय ।
चरन राधास्वामी परसूं जाय ॥२८॥
करूं नित आरत प्रेम सम्हार ।
चरन राधास्वामी मोर अधार ॥२९॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरत गत निरमल बुंद सरूप ।
सिंध तज आई भौ के कूप ॥ १ ॥
व्याल घर करती नित्त निवास ।
जगत में आय किया तन बास ॥ २ ॥
भरम रही इंद्रिन संग नौ वार ।
दुक्ख सुख भोगत मन के लार ॥ ३ ॥
देख जग जीवन हालत ज़ार ।
दया कर राधास्वामी परम उदार ॥४॥
जगत में आये धर औतार ।
हंस जीवन को लिया उबार ॥ ५ ॥

भक्ति गुरु रीती समझाई।
काल मत भेद भिन्न गाई ॥ ६ ॥
सुरत और शब्द किया उपदेश।
सुनाई महिमां संतन देश ॥ ७ ॥
बचन उन जिन हित से माना।
दिया उन प्रेम भक्ति दाना ॥ ८ ॥
काल के फंदे दिये खुलाय।
जाल माया का दिया कटाय ॥ ९ ॥
पुर्ष का दामन दिया पकड़ाय।
शब्द से पौड़ी शब्द चढ़ाय ॥१०॥
सुरत मन अस अस अधर चढ़ाय।
मेहर कर दिया निज घर पहुंचाय ॥११॥
प्रेम की मुझ को देकर दात।
कराई भक्ती दिन और रात ॥१२॥
सिखाई नई नई भक्ती रीत।
धरी मेरे हिरदे दृढ़ परतीत ॥१३॥
धूम गुरु भक्ती हुई भारी।
जगत जिव कोटिन लिए तारी ॥१४॥

बढ़ावत दिन दिन अचरज भाग।
बसाया हिये में बिरह अनुराग ॥१५॥
सुरत मन चढ़त अधर की गैल।
मगन होय करते घट में सैल ॥१६॥
फोड़ नभ त्रिकुटी को धावत।
निरख गुरु मूरत हरखावत ॥१७॥
मानसर किये असनान सम्हार।
भंवर चढ़ खोली खिड़की पार ॥१८॥
चौक लख दरस पुरुष का कीन।
सुनी वहां मधुर मधुर धुन बीन ॥१९॥
अलख और अगम दया धारी।
अनामी धाम लखा सारी ॥२०॥
यहीं से उतरी सूरत धार।
उलट फिर आई चरन सम्हार ॥२१॥
अनेक बिधि जग जीवन का काज।
संवारा देकर भक्ती साज ॥२२॥
किया यह राधास्वामी आपहि काम।
मेहर से दिया चरनन बिसराम ॥२३॥

गाऊं कस राधास्वामी गत भारी।
कहत रही रचना थक सारी ॥२४॥
करूं उन आरत हित धर चित्त।
चरन में राधास्वामी खेलूं नित्त ॥२५॥

॥ शब्द २३ ॥

जगत में घेरा डाला काल।
बिछाया माया ने जंजाल ॥ १ ॥
जीव सब फंस रहे भोगन में।
बिकल हुए सोग और रोगन में ॥ २ ॥
करम और धरम का कीन पसार।
पूज रहे देबी देवा झाड़ ॥ ३ ॥
संत मत भेद नहीं पाया।
काल मत सब जिव भरमाया ॥ ४ ॥
भेख और पंडित रहे अजान।
जगत में माया संग भुलान ॥ ५ ॥
कोई दिन मैं भी रहा भरमाय।
देव किरतम की पूजा लाय ॥६ ॥

सुनी जब संत मते की बात ।
हरखिया मन और फड़का गात ॥ ७ ॥
धाय कर सतसंग में आया ।
मगन हुआ गुरु दरशन पाया ॥ ८ ॥
बचन सुन मन निश्चल हूआ ।
ध्यान धर चित निरमल हूआ ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द जुगत को पाय ।
प्रेम अंग नित अभ्यास कराय ॥१०॥
शब्द रस घट में पियत रहूं ।
दरस गुरु निरखत जियत रहूं ॥११॥
संत मत सब से बढ़ जाना ।
और मत मग में अटकाना ॥१२॥
मेरे मन हूआ अस बिस्वास ।
संत बिन कोइ नहिं पुजवे आस ॥१३॥
कहूं मैं सब से यही पुकार ।
चरन राधास्वामी धारो प्यार ॥१४॥
संत मत धारो हिये परतीत ।
चरन में गुरु के लावो प्रीत ॥१५॥

सुरत और शब्द कमावो कार ।
होय तब तुम्हरा जीव उबार ॥१६॥
नहीं तो पड़े रहो नौवार ।
काल की फिर फिर खावो मार ॥१७॥
सराहूं छिन छिन अपना भाग ।
गुरू मोहिं दीना अचल सुहाग ॥१८॥
नीच मन जग में रहा भरमाय ।
गुरू मोहिं लिया अपनी सरनाय ॥१९॥
गुरू की गत मत मैं नहिं जान ।
दरस दे खैंच लिये मन प्रान ॥२०॥
जगत का नहिं भावे अब ढंग ।
लगा अब फीका माया रंग ॥२१॥
पिरेमी जन संग लागा नेह ।
टूट गया जग जिव संग सनेह ॥२२॥
गुरू संगत में नित खेलूं ।
पिरेमी जन संग मन मेलूं ॥२३॥
दरस गुरु छिन छिन बढ़ता चाव ।
चरन में निस दिन बढ़ता भाव ॥२४॥

गुरू बल नभ में पहुंचूं आज।
गगन चढ़ सुनूं नाम की गाज ॥२५॥
सुन्न चढ़ भंवर गुफा को धाय।
लोक सत अलख अगम दरसाय ॥२६॥
चरन राधास्वामी सेव रहूं।
उमंग अंग दृढ़ कर सरन गहूं ॥२७॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरत रंगीली सतगुरु प्यारी।
लाई आरती धार ॥ १ ॥
भूषन बस्तर अनेक लाय कर।
कीन्हा गुरु सिंगार ॥ २ ॥
अचरज रूपी सोभा बाढ़ी।
उमंगा हिये अति प्यार ॥ ३ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आए।
देखें बिमल बहार ॥ ४ ॥
हरख हरख सब नाचें गावें।
बाढ़ी उमंग अपार ॥ ५ ॥

राधास्वामी दया दृष्ट अब कीनी ।
मगन हुए नर नार ॥ ६ ॥
सीत प्रसाद की बरखा कीनी ।
पावत सब मिल झाड़ ॥ ७ ॥
अनहद बाजे गाजन लागे ।
बरसत अमृत धार ॥ ८ ॥
भींजत मन सीझत स्रुत प्यारी ।
गावत गुरु गुन सार ॥ ९ ॥
चढ़त अधर पहुंची दस द्वारे ।
मानसरोवर मैल उतार ॥१०॥
परे जाय मुरली धुन पाई ।
सतपुर दरशन पुर्ष निहार ॥११॥
अलख अगम की सुन सुन बतियां ।
होय गई अब सब से न्यार ॥१२॥
राधास्वामी रूप निरख हिये नैना ।
मगन हुई अब सूरत नार ॥१३॥
हैरत हैरत हैरत धामा ।
अचरज अचरज सोभा धार ॥१४॥

होय निचिंत चरन गह बैठी ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥१५॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरत प्यारी चित धर अगम बिबेक ।
प्रेम अंग राधास्वामी धारी टेक ॥ १ ॥
जगत का देख सकल ब्योहार ।
डार दई चित से समझ असार ॥ २ ॥
परख कर मन की चाल अनेक ।
कामना जग की डारी छेक ॥ ३ ॥
निरख कर इंद्रियन चाल कुचाल ।
जुगत से छिन छिन राख सम्हाल ॥४॥
चरन गुरु छिन छिन चित्त लगाय ।
रूप गुरु पल पल हिये बसाय ॥ ५ ॥
होत अस दिन दिन निरमल अंग ।
चरन गुरु बाढ़त प्रेम सुरंग ॥ ६ ॥
दया गुरु काटे सकल कुरंग ।
गावती गुरु गुन उमंग उमंग ॥ ७ ॥

उमंग कर करती गुरु सिंगार ।
हरखती अचरज रूप निहार ॥ ८ ॥
देख गुरु लीला अजब बहार ।
चरन गुरु चित में बढ़ता प्यार ॥ ९ ॥
अजब गत गुरु की कर पहिचान ।
शब्द गुरु हिये में धरती ध्यान ॥१०॥
उलट मन इंद्री घट में लाग ।
शब्द धुन सुनती सहित अनुराग ॥११॥
निरखती नभ चढ़ जोत अकार ।
गगन में गुरु मूरत उजियार ॥१२॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय ।
गुफा धुन मुरली सुनी बनाय ॥१३॥
अमरपुर दरस पुरुष का लीन ।
अधर चढ़ अलख अगम गत चीन ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय ।
दरस कर लीना भाग जगाय ॥१५॥
दीन अंग आरत चरनन लाय ।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥१६॥

दया कर लीना अंग लगाय।
दिया मेरा सब बिध काज बनाय ॥१७॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु परशाद प्रीत अब जागी।
उमंग उमंग सुर्त चरनन लागी ॥ १ ॥
मन हुआ मगन पाय गुरु दरशन।
तन मन धन कीन्हा गुरु अरपन ॥ २ ॥
गुरु का रूप अधिक मन भाता।
कर सिंगार हिये हुलसाता ॥ ३ ॥
निस दिन गुरु संग करत बिलासा।
लीला देखत बढ़त हुलासा ॥ ४ ॥
आरत नई बिध लीन सजाई।
मन सूरत गुरु प्रेम रंगाई ॥ ५ ॥
सतसंगियन संग गावत आरत।
प्रीत प्रतीत हिये बिच धारत ॥ ६ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला।
हुए प्रसन्न और किया निहाला ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

प्रीत नवीन हिये अब जागी ।
गुरु चरनन में सूरत लागी ॥ १ ॥
सतसंग करत मगन हुआ मन में ।
फूला नाहिं समावत तन में ॥ २ ॥
संत मते की महिमां जानी ।
राधास्वामी गत अति अगम बखानी ॥ ३ ॥
दया मेहर का लीना आसर ।
राधास्वामी जपूं नाम निस बासर ॥ ४ ॥
भजन करत हिये बढ़त उमंगा ।
सरन धार भौ पार उलंघा ॥ ५ ॥
दरशन करत बढ़त नित प्यारा ।
बचन सुनत हिये होत उजारा ॥ ६ ॥
जग ब्योहार लगत अति रूखा ।
मन इंद्री मानो तन में सूखा ॥ ७ ॥
भोगन की आसा तज दीनी ।
मन हुआ गुरु चरनन में लीनी ॥ ८ ॥

गुरु बिस्वास हिये में छाया ।
थक रहे काल करम और माया ॥९॥
भरम उड़ाय हुआ मन निरमल ।
गुरु चरनन में चित हुआ निश्चल ॥१०॥
राधास्वामी चरन बसे अब हिये में ।
प्रीत प्रतीत बढ़ी अब जिये में ॥११॥
आस भरोस धरा गुरु चरना ।
सुरत शब्द में निस दिन भरना ॥१२॥
घट में सुनता अनहद घोर ।
काम क्रोध का घट गया ज़ोर ॥१३॥
घंटा संख सुनी धुन नभ में ।
गुरु सरूप निरखा गगना में ॥१४॥
सुन में निरखा चंद्र उजारा ।
सुनी भंवर धुन सोहंग सारा ॥१५॥
सतपुर लखा पुरुष का रूप ।
तिस परे अलख अगम कुल भूप ॥१६॥
वहां से आगे सुरत चढ़ाई ।
निरखा राधास्वामी धाम सुहाई ॥१७॥

उमंग उठी हिये में अति भारी।
गुरु चरनन में आरत धारी ॥१८॥
प्रेम प्रीत से सामां लाया।
माता संग गुरु सन्मुख आया ॥१९॥
परम गुरू राधास्वामी प्यारे।
सब रचना के प्रान अधारे ॥२०॥
हुए परसन्न मेहर की भारी।
मो से अधम को लिया उबारी ॥२१॥

॥ शब्द २८ ॥

परम गुरू राधास्वामी दातारे।
वही मेरे जिय के आधारे ॥ १ ॥
गाऊं कस उन महिमा भारी।
करी मोपै मेहर दया न्यारी ॥ २ ॥
सुरत मन चरनन खैंच लगाय।
लिया मोहिं किरपा कर अपनाय ॥ ३ ॥
धरी मेरे हिये में दृढ़ परतीत।
दई चरनन में गहिरी प्रीत ॥ ४ ॥

शब्द की गत मत अगम अपार।
लखाई घट में किरपा धार ॥ ५ ॥
दिखा कर मन के सभी बिकार।
दया कर देते सहज निकार ॥ ६ ॥
जगत के भोग सभी दिखलाय।
भाव उन चित से दिया हटाय ॥ ७ ॥
पकड़ मेरी ढीली कर तन मन।
कराये गुरु चरनन अरपन ॥ ८ ॥
दया मोपै अंतर जस कीनी।
परख मोहिं वाकी वहीं दीनी ॥ ९ ॥
घात माया ने की बहु भांत।
निरख दे वोहीं बख़्शी शांत ॥१०॥
कहूं क्या अस अस मेहर कराय।
राह मेरी राधास्वामी दीन चलाय ॥११॥
शुकर उन क्योंकर गाऊं मैं।
चरन उन छिन छिन ध्याऊं मैं ॥१२॥
ग़ौर कर देखा जग का हाल।
रहे फंस सब जिव माया जाल ॥१३॥

करम का नित्त बढ़ाते भार।
काल की खाते निस दिन मार ॥१४॥
सोचते कुछ नहिं लाभ और हान।
रहे सब माया संग भरमान ॥१५॥
सुनें नहिं चित दे सतगुरु बात।
कहो कस यह परमारथ पात ॥१६॥
संग इन जीवन नहिं चाहूं।
सरन में राधास्वामी के धाऊं ॥१७॥
भाग मेरा जागा अजब निदान।
मिला मोहिं सतगुरु चरन ठिकान ॥१८॥
जिऊं मैं नित गुरु शब्द सम्हार।
पिऊं मैं चरन अमीरस सार ॥१९॥
मगन रहूं राधास्वामी के गुन गाय।
चरन में छिन छिन सुरत समाय ॥२०॥
दयानिधि राधास्वामी गुरु प्यारे।
मेहर कर लीना मोहिं तारे ॥२१॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु चरन पकड़ दृढ़ प्यारे ।
क्यों जम हाट बिकाय ॥ १ ॥
करम धरम में सब जिव अटके ।
गुरु संग हेत न कोई लाय ॥ २ ॥
भाग हीन सब पड़े काल बस ।
गुरु दयाल की सरन न आय ॥ ३ ॥
जिन पर मेहर करें राधास्वामी ।
उन हिरदे यह बचन समाय ॥ ४ ॥
गुरु चरनन की क्या कहूं महिमां ।
बिरले प्रेमी ध्यावत ताय ॥ ५ ॥
भाव भक्ति कोइ क्या दिखलावे ।
निज कर रहे चरन लिपटाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप निरख हिये अंतर ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ७ ॥
ऐसी सुरत पिरेमी जाकी ।
तिन गुरु मेहर मिली अधिकाय ॥ ८ ॥

जोगी ज्ञानी और बैरागी।
यह सब झूंठे ठौर न पाय ॥ ९ ॥
बड़ा भाग उन प्रेमी जागा।
जिन को लिया गुरू गोद बिठाय ॥१०॥
राधास्वामी चरन धार हिये अंतर।
यह आरत अनुरागी गाय ॥११॥

॥ शब्द ३० ॥

खोजी सुनो सत्त की बात ॥ टेक ॥
सतसंग करो चित्त दे गुरू का।
और बचन उन हिये समात ॥ १ ॥
भेद भाव जब गुरू सुनावें।
सुन सुन मन चरनन उमगात ॥ २ ॥
जस लोभी को दाम पियारा।
अस खोजी को गुरू की बात ॥ ३ ॥
सोवत जागत याद न बिसरत।
गुरु दरशन को मन अकुलात ॥ ४ ॥

दरद उठे छिन छिन हिये माहीं।
नित्त बढ़े परमारथ चाट ॥ ५ ॥
ऐसी लगन लाय जो खोजी।
सो सतगुरु से पावे दात ॥ ६ ॥
जब लग लगन न होवे सांची।
हिरसी कपटी जानो जात ॥ ७ ॥
माया चेरा गुरु का नाहीं।
सो कस प्रेम की दौलत पात ॥ ८ ॥
काल करम के धक्के खावे।
जम खूंदे नित धर धर लात ॥ ९ ॥
जगत मोह तज सांचे मन से।
अब राधास्वामी का कर तू साथ ॥१०॥

॥ शब्द ३१ ॥

संत किया सतसंग जगत में।
निज घर भेद सुनाये ॥ १ ॥
जिन २ धारा बचन प्रेम से।
तिन पर दया कराये ॥ २ ॥

ले उपदेश उन जुगत कमाई।
अंतर ध्यान धराये ॥ ३ ॥
गुरू का रूप बसा अब घट में।
दरशन कर मगनाये ॥ ४ ॥
बिन गुरु चरन बिकल मन रहता।
दम दम तार लगाये ॥ ५ ॥
जब गुरू परचा देयं मेहर से।
फूलत तन न समाये ॥ ६ ॥
ऐसी लगन लगी जिन हिये में।
सो गुरू चरन समाये ॥ ७ ॥
उमंग उमंग गुरू दरशन लागी।
जग और देह बिसराये ॥ ८ ॥
नित्त बिलास करै अब घट में।
धुन झनकार सुनाये ॥ ९ ॥
अस गुरू रूप ध्यान धरा जिन जिन।
तिन घट पाट खुलाये ॥१०॥
मीन मगन रहे जस जल माहीं।
अस सुन शब्द समाये ॥११॥

मन से छूट सुरत हुई निरमल ।
तब सत शब्द लगाये ॥१२॥
सत्तपुरुष का दरशन पाकर ।
अलख अगम दरसाये ॥१३॥
भर भर प्रेम आरती गावत ।
राधास्वामी सन्मुख आये ॥१४॥
पूरन मेहर करी राधास्वामी ।
पूरा काज बनाये ॥१५॥
मगन होय स्रुत चरनन लागी ।
अब कुछ कहा न जाये ॥१६॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं पाया दरस गुरू का ।
मैं परसा चरन गुरू का ॥ १ ॥
मैं ध्याऊं रूप गुरू का ।
मैं गाऊं नाम गुरू का ॥ २ ॥
मैं सेऊं चरन गुरू का ।
मैं दासन दास गुरू का ॥ ३ ॥

मेरे हिये बसा शब्द गुरू का।
मैं धारा रंग गुरू का ॥ ४ ॥
मैं जग तज हुआ गुरू का।
मैं सचमुच हुआ गुरू का ॥ ५ ॥
मोपै हो गया करम[१] गुरू का।
मोहिं बख़्शा प्रेम गुरू का ॥ ६ ॥
मैं पकड़ा संग गुरू का।
मैं धारा ढंग गुरू का ॥ ७ ॥
प्यारे राधास्वामी नाम गुरू का।
सब के परे धाम गुरू का ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बचन सुन बढ़ा हिये अनुराग।
पिरेमी सुरत उठी अब जाग ॥ १ ॥
दरस गुरु पियत अमीरस सार।
निरख छबि तन मन सुद्ध बिसार ॥ २ ॥
गाय रही गुरु महिमां छिन छिन।
नाम गुरु जपत रही निस दिन ॥ ३ ॥

(१) करम = बख़्शिश

बढ़ावत नित चरनन में प्यार।
रूप गुरु धारत हिये संम्हार ॥ ४ ॥
सुरत और शब्द का ले अभ्यास।
निरख रही घट में नित्त बिलास ॥ ५ ॥
जगावत नित गुरु प्रीत नवीन।
मगन रहे गुरु संग ज्यों जल मीन ॥ ६ ॥
धावती सेवा को हर बार।
देह की सुध बुध रही बिसार ॥ ७ ॥
उमंग रही मन अंतर में छाय।
प्रेम गुरु हियरे रहा बसाय ॥ ८ ॥
जगत का ख़्याल नहीं मन लाय।
कुटम्ब की याद न चित्त समाय ॥ ९ ॥
बासना भोगन की दई त्याग।
बढ़ा गुरु आरत का अनुराग ॥ १० ॥
गाऊं राधास्वामी आरत सार।
जिऊं मैं राधास्वामी नाम अधार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

संत मत भेद सुना जबही ।
खिले मेरे मन बुद्धी तबही ॥ १ ॥
शब्द की महिमां गुरु गाई ।
भेद रचना का समझाई ॥ २ ॥
सुरत का बंधन तन मन संग ।
हुआ कस अब कस होय असंग ॥ ३ ॥
जुगत सुन मन निश्चय धारा ।
गुरू को परखा सच यारा ॥ ४ ॥
करत मन सतसंग हुआ सरशार ।
चरन में राधास्वामी जागा प्यार ॥ ५ ॥
हुआ कम मन से जग का भाव ।
जगा अब परमारथ का चाव ॥ ६ ॥
भक्त जन दीखें सुखियारे ।
जगत जिव सबही दुखियारे ॥ ७ ॥
नित्त गुरु दरशन चाहत मन ।
करत गुरु सेवा फड़कत तन ॥ ८ ॥

उमंग मन लई गुरु शिक्षा सार।
करूं मैं नित अभ्यास सम्हार ॥ ९ ॥
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार।
लिया मोहिं जग से आज उबार ॥१०॥
भाव संग आरत उन गाऊं।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊं ॥११॥

॥ शब्द ३५ ॥

अनेक मत जग में फैल रहे।
टेक सब पिछली धार रहे ॥ १ ॥
ख़बर नहिं को है सच करतार।
कहां है जिव का निज घरबार ॥ २ ॥
कौन बिधि जग बंधन टूटै।
कौन बिधि दुख सुख से छूटै ॥ ३ ॥
अमर सुख कस और कहां पावे।
कौन जुगती कर वहां जावे ॥ ४ ॥
तपत रहा संसय में दिन रात।
किसी ने कही न सांची बात ॥ ५ ॥

भाग से गुरु संगत में आय।
तपन मेरी सबही गई बुझाय ॥ ६ ॥
भेद सच्च मालिक का पाया।
सुरत का निज घर बतलाया ॥ ७ ॥
शब्द का मारग दरसाया।
जतन बिधिपूर्वक समझाया ॥ ८ ॥
प्रीत मेरे हिये में दई जगाय।
मोह जग काटन जुगत बताय ॥ ९ ॥
दया का बल हिरदे में धार।
करूं मैं नित अभ्यास सम्हार ॥१०॥
गुरू बल मोह जगत का टार।
बढ़ाऊं चरनन में नित प्यार ॥११॥
सरन में राधास्वामी आया धाय।
करूं उन आरत साज सजाय ॥१२॥
मेहर का दीजे मोहिं परसाद।
रहूं तुम चरनन में दिल शाद ॥१३॥
नाम राधास्वामी सुमिर रहूं।
चरन राधास्वामी पकड़ रहूं ॥१४॥

॥ शब्द ३६ ॥

कुंवर प्यारा आरत लाया साज ।
हुए राधास्वामी परसन आज ॥ १ ॥
उमंग से करता गुरू सिंगार ।
हिये में धरता चरनन प्यार ॥ २ ॥
गावता आरत प्रीत सहित ।
दया राधास्वामी छिन छिन चहित ॥ ३ ॥
दरस गुरु करता दृष्टी जोड़ ।
बिसारत जग का मोर और तोर ॥ ४ ॥
सुरत मन सिमटावत हर दम ।
गगन चढ़ सुनता धुन घमघम ॥ ५ ॥
गावता गुरू महिमा हर बार ।
चरन राधास्वामी का आधार ॥ ६ ॥
मेहर से दीना गुरु परशाद ।
कटी मेरी जन्म जन्म की ब्याध ॥ ७ ॥
जगत का दीना भाव निकार ।
नाम राधास्वामी पाया सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरत दृढ़ कर गुरु सरन गही ।
आरती गावत आज नई ॥ १ ॥

चरन गुरु धारी गहिरी प्रीत ।
बसाई हिये में दृढ़ परतीत ॥ २ ॥

मगन होय खेलत गुरु के पास ।
करत नित चरनन संग बिलास ॥ ३ ॥

करत गुरु आरत उमंग उमंग ।
सखी सब गावें नाचें संग ॥ ४ ॥

समां यह अचरज रूप बंधाय ।
कौन कहे सोभा गुरु की गाय ॥ ५ ॥

आरती अद्भुत अब साजी ।
हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी ॥ ६ ॥

मेहर से दिया सतगुरु परशाद ।
रहूं उन चरनन में दिलशाद ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

मगन हुई सुरत दरस गुरु पाय ।
सरन गह रही चरन लिपटाय ॥ १ ॥
कहूं क्या सुख गुरु संग भारी ।
पियत रही सुरत अमीं सारी ॥ २ ॥
बचन की बरखा होती नित्त ।
भींज रहे गुरु रंग मन और सुर्त ॥ ३ ॥
करत गुरु सेवा उमंग उमंग ।
हरख संग फूल रहा अंग अंग ॥ ४ ॥
सुनत नित महिमां सत गुरु देस ।
त्याग दिया करम भरम का लेस ॥ ५ ॥
शब्द का मारग पाया सार ।
नेम से करूं अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
ध्यान गुरु रूप हिये में लाय ।
रहूं मैं छिन छिन प्रेम जगाय ॥ ७ ॥
नाम गुरु जपत रहूं हर दम ।
चरन में राखूं चित कर सम ॥ ८ ॥

चरन गुरु हुई अब दृढ़ परतीत ।
दया से बढ़ती निस दिन प्रीत ॥ ९ ॥
प्रीत की ले कर में थाली ।
बिरह की जोत लई बाली ॥१०॥
आरती राधास्वामी की गाऊं ।
रूप राधास्वामी नित ध्याऊं ॥११॥

॥ शब्द ३९ ॥

आरत आगे राधास्वामी गाऊं ।
हिये में प्रेम नवीन जगाऊं ॥ १ ॥
उमंग उमंग कर सन्मुख आऊं ।
चित चरनन में जोड़ धराऊं ॥ २ ॥
भटक भटक बहु भटका जग में ।
मेहर हुई आया चरनन में ॥ ३ ॥
भेद दिया गुरु धुर पद सारा ।
सुरत शब्द मारग में धारा ॥ ४ ॥
अनेक बिधी गुरु दई बताई ।
मन और सूरत चरन लगाई ॥ ५ ॥

उमंग सहित कीना अभ्यास ।
घट में पाया परम बिलास ॥ ६ ॥
बहु बिधि कर मैं निश्चय धारा ।
राधास्वामी मत है सब का सारा ॥ ७ ॥
जीव उबार इसी से होई ।
राधास्वामी बिन सब गये बिगोई ॥ ८ ॥
जो जो राधास्वामी नाम सम्हारे ।
सहजहि जाय भौसागर पारे ॥ ९ ॥
जप तप संजम तीरथ कीना ।
ज्ञान जोग बिधि सब हम चीन्हा ॥१०॥
और अनेक जतन किये भाई ।
ख़ाली रहा कुछ हाथ न आई ॥११॥
जब राधास्वामी संगत में आया ।
निज पद का सत मारग पाया ॥१२॥
सरन लई राधास्वामी संता ।
निरभय हुआ मिटी सब चिन्ता ॥१३॥
मगन रहूं गुरु चरन धिआऊं ।
सुरत शब्द में सहज लगाऊं ॥१४॥

गुन गाऊं राधास्वामी प्यारे।
दया करी मोहिं लिया उबारे ॥१५॥

॥ शब्द ४० ॥

बाल समान चरन गुरु आई।
देख दरस अति कर हरखाई ॥ १ ॥
खेलूं गुरु सन्मुख धर प्यार।
सुनत रहूं गुरु बानी सार ॥ २ ॥
आरत धारूं उमंग प्रेम से।
जपत रहूं गुरु नाम नेम से ॥ ३ ॥
गुरु की लीला निरख निहार।
बिगसत मन और बढ़त पियार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना भक्ति साज।
चरन सरन हिये धारी आज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

आरती गाऊं रंग भरी।
सुरत गुरु चरनन तान धरी ॥ १ ॥

लगाये मन ने बहु अटकाव ।
करम ने दीने बहु भरमाव ॥ २ ॥
दीन लख गुरू दया धारी ।
करम और भरम दिये टारी ॥ ३ ॥
हुआ मन बहु बिधि कर अब तंग ।
चढ़ाया गुरु ने अपना रंग ॥ ४ ॥
भोग तज घट में लाग रही ।
शब्द धुन सुन सुन जाग रही ॥ ५ ॥
जगत का झूठ लगा ब्योहार ।
लगा अब फीका सब संसार ॥ ६ ॥
उमंग अस उठती बारम्बार ।
करूं दृढ़ भक्ती गुरु दरबार ॥ ७ ॥
चरन में निज कर सुरत लगाय ।
अमीरस पीऊं प्रेम जगाय ॥ ८ ॥
दया गुरु चढ़ूं आज गगना ।
दरस गुरु दृष्ट जोड़ तकना ॥ ९ ॥
सुन्न चढ़ महासुन्न धस पार ।
भंवर में सुनूं सोहंग धुन सार ॥१०॥

सत्तपुर अलख अगम के पार।
रहूं राधास्वामी दरस निहार ॥११॥
आरती प्रेम सहित रहूं गाय।
दया प्यारे राधास्वामी करी बनाय ॥१२॥

॥ शब्द ४२ ॥

दीन दिल हिये अनुराग सम्हार।
दास करे आरत साज संवार ॥ १ ॥
हिये का थाल सजाऊं आज।
बिरह की जोत जगाऊं साज ॥ २ ॥
गाऊं गुरु आरत उमंग सम्हार।
दरस गुरु निरखूं नैन निहार ॥ ३ ॥
दृष्ट घट उलटूं नैन झुमाय।
सुरत की ताड़ी धुन संग लाय ॥ ४ ॥
मेहर की दृष्टी गुरु की पाय।
सुरत मन नभ में पहुंचे धाय ॥ ५ ॥
काल अंग मन से दिया निकार।
भाव भय जग का दीना टार ॥ ६ ॥

प्रेम की गुरू ने की बरखा ।
मिटी मन सूरत की तिरखा ॥ ७ ॥
शब्द धुन बाज रही घनघोर ।
संख और घंटा डाला शोर ॥ ८ ॥
निरख रही सूरत जोत उजार ।
गुरू गुन गावत बारम्बार ॥ ९ ॥
हिये में बढ़ता अब अनुराग ।
सुरत रही शब्द गुरू से लाग ॥१०॥
गगन चढ़ सुनती धुन ओंकार ।
लाल रंग देखा सूर अकार ॥११॥
दसम दर खोला पाट हटाय ।
बिमल हुई मानसरोवर न्हाय ॥१२॥
महासुन गई गुरू संग दौड़ ।
भंवर चढ़ मिटी रैन हुआ भोर ॥१३॥
बीन धुन सुन कर गई सतलोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥१४॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार ।
अभय होय बैठी सरन सम्हार ॥१५॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरत मेरी गुरु चरनन अटकी।
जगत से छिन छिन अब झटकी ॥ १ ॥
बहुत दिन माया संग भटकी।
प्रीत गुरु अब हिये में खटकी ॥ २ ॥
करम और धरम दिये पटकी।
पकड़ धुन सुरत गगन सटकी ॥ ३ ॥
उलट मन कला खाय नट की।
चांदनी घट अंतर छिटकी ॥ ४ ॥
ख़बर लई जाय दसम पट की।
सुरत अक्षर धुन संग लटकी ॥ ५ ॥
संत बिन को कहे या बट की।
भंवर धुन सुन सूरत चटकी ॥ ६ ॥
परे चढ़ सुनी धुन्न सत की।
सुरत वहां मगन होय मटकी ॥ ७ ॥
बेद क्या जाने सत मत की।
ख़बर वह देता खट पट की ॥ ८ ॥

दया मोपै राधास्वामी झटपट की।
सुरत चरनन में चटपट ली ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

मान तज चरनन आन पड़ी।
सुरत करे आरत उमंग भरी ॥ १ ॥
दीन दिल लीना थाल सजाय।
प्रेम गुरु चरनन जोत जगाय ॥ २ ॥
गुरू का सन्मुख कर दीदार।
हुआ मन मगन हिये धर प्यार ॥ ३ ॥
तान कर दृष्टी तिल में जोड़।
सुनत रही अनहद धुन घनघोर ॥ ४ ॥
बिरह हिये राधास्वामी चरन जगाय।
सुरत मन उमंग अधर को धाय ॥ ५ ॥
अबल मन राधास्वामी सरन सम्हार।
दया गुरु मांगत बारम्बार ॥ ६ ॥
मेहर बिन कस घट में चाले।
बिघन बहु माया ने डाले ॥ ७ ॥

काल ने लीना मारग घेर।
मोह जग डाला भारी फेर॥ ८॥
काम और क्रोध रहे भरमाय।
अनेक बिधि माया संग भुलाय॥ ९॥
गुरू बिन कौन हटावे काल।
दया कर वेही काटें जाल॥१०॥
सुरत मन घट में होय निसंक।
चढ़ें तब उमंग २ धुन संग॥११॥
फोड़ तिल सुनें शब्द की गाज।
सहसदल कंवल में देख समाज॥१२॥
परे चढ़ निरखें गुरू लीला।
सुन्न चढ़ होवे चित सीला॥१३॥
भंवर धुन सुन कर हुई मगन।
सत्तपुर किया पुरुष दरशन॥१४॥
निरख कर अलख अगम का नूर।
मिला राधास्वामी दरस हजूर॥१५॥
प्रेम का मिला अजब भंडार।
सुरत हुई हैरत संग सरशार॥१६॥

दया राधास्वामी निरख अपार ।
गाय रही महिमां उनकी सार ॥१७॥

॥ शब्द ४५ ॥

प्रेम संग आरत करत रहूं ।
चरन में हित से लिपट रहूं ॥ १ ॥
गुरू का रूप बसा हिये में ।
गुरू की प्रीत धसी जिये में ॥ २ ॥
सुरत से सेऊं दिन राती ।
चरन गुरु नित्त रहूं राती ॥ ३ ॥
भाग से जब दरशन मिलते ।
सुरत मन फड़क २ खिलते ॥ ४ ॥
देह की सुध बुध सब बिसराय ।
मगन रहूं गुरु के सन्मुख आय ॥ ५ ॥
उमंग हिये माहिं नवीन जगाय ।
करत गुरु सेवा भाग बढ़ाय ॥ ६ ॥
बिना गुरु और न मानूं कोय ।
मौज गुरु जो कुछ होय सो होय ॥७॥

गुरू से करता यही पुकार ।
चढ़ाओ सूरत नौ के पार ॥ ८ ॥
होय तब तन मन से न्यारी ।
गगन चढ़ निरखूं उजियारी ॥ ९ ॥
दसम दर खोल अधर को धाय ।
भंवर चढ़ सतपुर पहुंचूं जाय ॥१०॥
पुरुष का अचरज रूप निहार ।
करूं फिर अलख अगम से प्यार ॥११॥
वहां से निरख अनामी धाम ।
चरन में राधास्वामी पाउं बिस्राम ॥१२॥
कोई नहिं जाने यह मत सार ।
बहे सब काल करम की धार ॥१३॥
भाग बिन नहिं पावे मत संत ।
दया बिन नहिं जावे घर अंत ॥१४॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग ।
सरन गह रहा उन चरनन लाग ॥१५॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरू के चरनन आन पड़ी।
सुरत मांगे सरना मेहर भरी ॥ १ ॥
काल मोहिं दीन्हे दुख बहु भांत।
करम संग लागी भारी सांट ॥ २ ॥
जाल बहु माया दीन बिछाय।
अनेक बिधि मो को तंग रखाय ॥ ३ ॥
बिना राधास्वामी नहिं कोइ और।
हटावे काल करम का ज़ोर ॥ ४ ॥
सरन गह चरनन में रहुं लाग।
जगावें राधास्वामी मेरा भाग ॥ ५ ॥
मगन होय सुनता गुरू बचना।
चाह जग सहज २ तजना ॥ ६ ॥
चरन में नित्त बढ़ाता प्यार।
बिघन मन इंद्री दूर निकार ॥ ७ ॥
सुरत को नित घट में भरना।
रूप गुरू हिरदे में धरना ॥ ८ ॥

भरोसा राधास्वामी मन में लाय ।
चरन राधास्वामी छिन २ ध्याय ॥ ९ ॥
दुःख सुख जग से नहिं डरना ।
दया ले बैरियन से लड़ना ॥१०॥
करें राधास्वामी मोर सहाय ।
करम फल सहजहि देहिं भोगाय ॥११॥
दया कर देवें घट में शांत ।
रहे नहिं मन में कोई भ्रांत ॥१२॥
लगावें मन सूरत को जोड़ ।
सुनावें घट में अनहद शोर ॥१३॥
चढ़े तब सहसकंवल दरसै ।
गगन में गुरु सूरत परसै ॥१४॥
सुन्न में मानसरोवर न्हाय ।
भंवर चढ़ मुरली बीन बजाय ॥१५॥
सत्तपुर अलख अगम के पार ।
मिला राधास्वामी का दीदार ॥१६॥
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ।
करी वहां आरत प्रेम जगाय ॥१७॥

॥ शब्द ४७ ॥

चरन गुरु पकड़े अब मज़बूत ।
छोड़ दई सब निस्फल करतूत ॥ १ ॥
बहुत दिन माया संग लुभाय ।
जगत में जहां तहां रहा भरमाय ॥ २ ॥
भटक में हुआ मैं अति हैरान ।
न पाया सत का कहीं निशान ॥ ३ ॥
भाग से संत मते का भेद ।
मिला और हट गये मन के खेद ॥ ४ ॥
नित्त मैं करता रहूं अभ्यास ।
हरख रहूं घट में निरख बिलास ॥ ५ ॥
अजब गत राधास्वामी मत की जान ।
हुआ गुरु चरनन पर कुरबान ॥ ६ ॥
रहा मन धावत से अब हार ।
पियत रहा घट में धुन रस सार ॥ ७ ॥
प्रेम गुरु हिरदे माहिं जगाय ।
शब्द संग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ८ ॥

लखूं मैं घट में जोत उजार।
गगन में सुनता धुन ओंकार ॥ ९ ॥
सुन्न में सारंग सुनी कर प्रीत।
अधर मुरली संग गाता गीत ॥१०॥
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय।
पड़ा राधास्वामी चरनन धाय ॥११॥
मेहर राधास्वामी नित चाहूं।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊं ॥१२॥

॥ शब्द ४८ ॥

आज सजन घर बजत बधावा।
सतगुरु मिले परम सुख देवा ॥ १ ॥
परस चरन हिया कंवल खिलाना।
दीन होय मन सरन समाना ॥ २ ॥
प्रेम भाव हिये माहिं बसाई।
संसय भरम अब दूर पराई ॥ ३ ॥
दरशन करत जगत सुध भूली।
तज दई डार गही दृढ़ मूली ॥ ४ ॥

कृपा दृष्टि सतगुरु जब कीनी ।
गाजा गगन सुरत हुई लीनी ॥ ५ ॥
अमीं धार लागी अब झिरने ।
सुरत निरत घट अंतर घिरने ॥ ६ ॥
धुन झनकार सुनत सरसाई ।
उमंग उमंग मन गगन समाई ॥ ७ ॥
सुरत छड़ी अब चढ़त अगाड़ी ।
सुन में जाय लखी फुलवारी ॥ ८ ॥
ऋतु बसंत चहुं दिस रही छाई ।
हंसन संग बिलास सुहाई ॥ ९ ॥
महासुन्न घाटी चढ़ आई ।
भंवरगुफा सोहंग धुन पाई ॥१०॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में ।
धुन बीना जहां पड़ी श्रवन में ॥११॥
कोटिन चंद्र सूर उजियारा ।
सतगुरु के इक रोम पसारा ॥१२॥
सतगुरु महिमा कही न जाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाई ॥१३॥

राधास्वामी दया भाग मेरा जागा।
तब सतगुरू के चरनन लागा ॥१४॥
चरन अधार जिऊं मैं निस दिन।
राधास्वामी २ गाऊं छिन छिन ॥१५॥
सब जीवों को कहूं पुकारी।
सतगुरु खोजो होव सुखारी ॥१६॥
तन मन धन चरनन पर वारो।
घट में गुरु का रूप निहारो ॥१७॥
राधास्वामी चरन सरन गहो भाई।
प्रेम सहित करो आरत आई ॥१८॥
राधास्वामी दया करें जब तुम पर।
करम काट पहुंचावें निज घर ॥१९॥

बचन दसवां प्रेम बिलास

भाग पहिला

नाम माला

॥ शब्द १ ॥

संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।
आय जगत में जीव उबारे ॥ १ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेसा ।
जनम मरन का गया अंदेसा ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
राधास्वामी तिन को लीन उबारी ॥३॥
राधास्वामी भेद अगाध सुनाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट में राह लखाई ।
भेद मंज़िल का भिन २ गाई ॥ ५ ॥
दीन होय जो चरनन आई ।
राधास्वामी तिस को लिया अपनाई ॥६॥

प्रेम प्रीत नित हिये में बाढ़ी।
राधास्वामी चरनन सूरत साजी ॥ ७ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई।
राधास्वामी दई घट गैल लखाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया फोड़ तिल चाली।
आगे निरखी जोत उजाली ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग गई गगनापुर।
मगन हुई लख रूप शब्द गुर ॥१०॥
वहां से भी फिर अधर चढ़ाई।
राधास्वामी अक्षर रूप लखाई ॥११॥
महासुन्न गई राधास्वामी लार।
सुनी भंवर धुन मुरली सार ॥१२॥
सत्तलोक गई राधास्वामी संग।
सत्तपुरुष का धारा रंग ॥१३॥
राधास्वामी दया अलख दर्श पाई।
वहां से अगम लोक को धाई ॥१४॥
राधास्वामी मेहर मिला धुर धाम।
पाया राधास्वामी अचरज नाम ॥१५॥

राधास्वामी चरन किया बिसराम ।
राधास्वामी कीना पूरन काम ॥१६॥
राधास्वामी दीना अचरज ठांव ।
राधास्वामी गुन मैं कस कस गांव ॥१७॥
कहूं पुकार जगत जीवन से ।
राधास्वामी २ गाओ मन से ॥१८॥
करम धरम और भरम हटाओ ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाओ ॥१९॥
दया तुम्हार मोर मन आई ।
तासे राधास्वामी सरन जनाई ॥२०॥
राधास्वामी बिना कोई नहिं बाचे ।
दुख पावे चौरासी नाचे ॥२१॥
राधास्वामी मत है ऊंच से ऊंचा ।
और मता कोइ वहां न पहुंचा ॥२२॥
सब मत रहे रस्ते में थाके ।
राधास्वामी भेद न कोई भाखे ॥२३॥
परमातम सब कहें बखाना ।
राधास्वामी भेद न उनहूं जाना ॥२४॥

ब्रह्म और पारब्रह्म कहें गाई ।
राधास्वामी भेद न इनहूं पाई ॥२५॥
राधास्वामी भेद सबन से न्यारा ।
संत सतगुरू कहें पुकारा ॥२६॥
संत बचन को जो कोइ माने ।
राधास्वामी मत को सो सच जाने ॥२७॥
सच्चा बिरही खोजी कोई ।
राधास्वामी मत मानेगा सोई ॥२८॥
सतसंग करे समझ तब आवे ।
राधास्वामी भाव जब हिये बसावे ॥२९॥
मूरख जीव जगत के अंधे ।
राधास्वामी शब्द बिना रहें गंदे ॥३०॥
वे क्या जानें संत की गत को ।
कस समझें राधास्वामी मत को ॥३१॥
खान पान में रहे भुलाने ।
राधास्वामी महिमा नेक न जाने ॥३२॥
मरने का डर चित न समाय ।
राधास्वामी चरन भाव कस आय ॥३३॥

राधास्वामी हैं सच्चे करतार ।
यह नहिं मानें बड़े गंवार ॥३४॥
सत्त सिंध से सब जिव आये ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाये ॥३५॥
जो चाहे सच्चा निरवार ।
राधास्वामी चरनन लावे प्यार ॥३६॥
शब्द डोर गह सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी चरनन बासा पावे ॥३७॥
दीन होय गुरू सरनी आवे ।
राधास्वामी दया दृष्टि तब पावे ॥३८॥
शब्द बिना नहिं होय उधार ।
बिन राधास्वामी सहे जम की मार ॥३९॥
यह सब बचन सत्त कर गाया ।
राधास्वामी सरन उबार बताया ॥४०॥
मूरख जीव न मानें बात ।
राधास्वामी सरन न चित्त समात ॥४१॥
भाग हीन बहें काल की धार ।
राधास्वामी मत नहिं मानें सार ॥४२॥

निंद्या कर सिर पाप बढ़ावें ।
राधास्वामी बिन जम धक्के खावें ॥४३॥
जब लग धुर की मेहर न होई ।
राधास्वामी मत माने नहिं कोई ॥४४॥
राधास्वामी से अब करूं पुकार ।
मेहर करो जिव लेव उबार ॥४५॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी प्रीत जगाऊं निस दिन ।
राधास्वामी रूप धियाऊं छिन छिन ॥१॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं हित से ।
राधास्वामी शब्द सुनूं मैं चित से ॥२॥
राधास्वामी संग करूं मैं मन से ।
राधास्वामी सेव करूं मैं तन से ॥ ३ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न जानूं ।
राधास्वामी सम कोइ और न मानूं ॥४॥
राधास्वामी बिन कोइ और न आसा ।
राधास्वामी चरन चहूं नित बासा ॥५॥

राधास्वामी चरन भरोसा भारा।
राधास्वामी सम कोइ और न प्यारा ॥६॥
राधास्वामी मेरे नैन उजारा।
राधास्वामी बिन जग में अंधियारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेरे प्रान अधारा।
राधास्वामी बिन कोइ नाहिं सहारा ॥ ८ ॥
राधास्वामी जग से लिया उबारी।
राधास्वामी पर जाऊं बलिहारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कीना कारज पूर।
राधास्वामी चरनन धारी धूर ॥१०॥
राधास्वामी पकड़ा मेरा हाथ।
राधास्वामी का अब तजूं न साथ ॥११॥
राधास्वामी दीना धुन का भेद।
राधास्वामी मेटे करमन खेद ॥१२॥
राधास्वामी कीनी मेहर अपार।
राधास्वामी किया भौसागर पार ॥१३॥
राधास्वामी काट दई कल फांसी।
राधास्वामी मेट दई चौरासी ॥१४॥

राधास्वामी परम पुरुष दातार ।
राधास्वामी धरा गुरू औतार ॥१५॥
राधास्वामी कीना जीव उबार ।
राधास्वामी काटा माया जार ॥१६॥
राधास्वामी मेरा भाग जगाया ।
राधास्वामी मोहिं निज दास बनाया ॥१७॥
राधास्वामी कीनी भारी मेहर ।
राधास्वामी मेटा काल का क़हर ॥१८॥
राधास्वामी लिया बचा करमन से ।
राधास्वामी दिया हटा भरमन से ॥१९॥
राधास्वामी महिमां कस कस गाऊं ।
राधास्वामी २ सदा धियाऊं ॥२०॥
राधास्वामी चरन अधार जिऊं मैं ।
राधास्वामी अमृत सार पिऊं मैं ॥२१॥
राधास्वामी घट का परदा खोल ।
मोहिं सुनाये बचन अमोल ॥२२॥
राधास्वामी घंटा संख सुनाय ।
त्रिकुटी लाल सूर दरसाय ॥२३॥

राधास्वामी दसवां द्वार खुलाया।
चंद्र चांदनी चौक दिखाया ॥२४॥
भंवरगुफा गई राधास्वामी संग।
मुरली धुन जहां सुनी निसंक ॥२५॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया।
राधास्वामी अलख अगम परसाया ॥२६॥
राधास्वामी चरन परस हरखाई।
राधास्वामी मेहर से निज घर पाई ॥२७॥

॥ शब्द ३ ॥

राधास्वामी नाम सम्हार।
चित से सुर्त प्यारी ॥ १ ॥
राधास्वामी का कर आधार।
जग से हो न्यारी ॥ २ ॥
राधास्वामी रूप निहार।
हिये बिच धर सारी ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम पुकार।
निस दिन कर यारी ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सम्हार ।
लाय घट में तारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी दरस निहार ।
होय घट उजियारी ॥६॥
राधास्वामी प्रेम सिंगार ।
दिया मोहिं कर प्यारी ॥७॥
राधास्वामी पुर्ष अपार ।
मेहर कर लिया तारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी प्रान अधार ।
मिले मोहिं दया धारी ॥ ९ ॥
राधास्वामी कुल करतार ।
रची रचना सारी ॥१०॥
राधास्वामी पै जाऊं बलिहार ।
करी किरपा भारी ॥११॥
राधास्वामी से करले प्यार ।
तन मन धन वारी ॥१२॥
राधास्वामी कुल दातार ।
दया उन ले सारी ॥१३॥

राधास्वामी दीन दयाल।
करें भौ से पारी ॥१४॥
राधास्वामी की महिमां सार।
गाऊं सन्मुख ठाढ़ी ॥१५॥

॥ शब्द ४ ॥

राधास्वामी मेरे प्यारे दाता।
उन चरनन के रहूं नित साथा ॥ १ ॥
राधास्वामी प्यारे पिता हमारे।
उन के चरन संग रहूं सदारे ॥ २ ॥
राधास्वामी प्यारे दीन दयाला।
राधास्वामी सब को करें निहाला ॥३॥
राधास्वामी प्यारे अगम अनामी।
राधास्वामी गत कस जाय बखानी ॥४॥
राधास्वामी प्यारे दया करी री।
खैंच सुरत मेरी चरन धरी री ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद सुनाया सारा।
राधास्वामी दिया चरन में प्यारा ॥ ६ ॥

राधास्वामी लिया मोहिं खैंच बुलाई ।
सतसंग में लिया आप लगाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी खोल दई हिये आंखी ।
राधास्वामी मूरत घट में झांकी ॥ ८ ॥
राधास्वामी सेवा करूं प्रेम से ।
राधास्वामी चरन धियाऊं नेम से ॥९॥
राधास्वामी प्यारे कुल करतार ।
राधास्वामी सतगुरु परम उदार ॥१०॥
राधास्वामी दया जीव जो चावे ।
काल जाल का फंद कटावे ॥११॥
राधास्वामी जिस पर दया करें री ।
चरन ओट दे पार करें री ॥१२॥
राधास्वामी नाम गाय जो कोई ।
भेद पाय घर जावे सोई ॥१३॥
राधास्वामी दीनी तपन बुझाय ।
चरनन लग हुई सीतल आय ॥१४॥
राधास्वामी संग होय जीव उबार ।
राधास्वामी भरम निकालें झार ॥१५॥

राधास्वामी घट का पाट खुलावें ।
करम धरम सब दूर हटावें ॥१६॥
राधास्वामी धाम ऊंच से ऊंचा ।
राधास्वामी नाम सूच से सूचा ॥१७॥
राधास्वामी मात पिता पति प्यारे ।
राधास्वामी जीव और प्रान अधारे ॥१८॥
राधास्वामी देवें भक्ती साज ।
चार लोक का बख़्शें राज ॥१९॥
राधास्वामी बिन कुछ काज न सरई ।
राधास्वामी चरन चित्त अब धरई ॥२०॥
याते राधास्वामी २ गावो ।
राधास्वामी बिन कोइ और न ध्यावो ॥२१॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी गुन गाऊं मैं दम दम ।
राधास्वामी दूर करी मेरी हमहम ॥ १ ॥
राधास्वामी सा कोइ और न हमदम ।
राधास्वामी नाम जपूं मैं हर दम ॥२॥

राधास्वामी दिये निकार बिकार।
राधास्वामी लिया मोहिं आज सुधार ॥३॥
राधास्वामी सब बिध तोड़ा मान।
मारे ताक बचन के बान ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीना सब बल तोड़।
राधास्वामी लीना मन को मोड़ ॥ ५ ॥
राधास्वामी मुझ पर हुए दयाल।
राधास्वामी लिया मोहिं आप सम्हाल ॥ ६ ॥
राधास्वामी लिया भक्ती रीत सिखाई।
राधास्वामी घट में प्रेम जगाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी जग से लिया छुड़ाई।
सतसंग में मोहिं लिया मिलाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी करम धरम दिया काट।
भरा प्रेम से मन का माट ॥ ९ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेस।
सुरत शब्द का किया उपदेश ॥ १० ॥
राधास्वामी दीनी सुरत चढ़ाय।
सहस कंवल में बैठी जाय ॥ ११ ॥

राधास्वामी बंक नाल दिखलाई ।
त्रिकुटी शब्द सुनाया आई ॥ १२ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई ।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी किया महासुन पार ।
सेत सूर निरखा उजियार ॥ १४ ॥
राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया ।
सत्तपुरुष का दरशन पाया ॥ १५ ॥
राधास्वामी अलख लोक दरसाई ।
अगम पुरुष का भेद जनाई ॥ १६ ॥
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई ।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

राधास्वामी दरस दिया मोहिं जब से ।
राधास्वामी पर मोहित हुई तब से ॥ १ ॥
राधास्वामी भक्ति भाव मोहिं दीना ।
राधास्वामी चरन सरन में लीना ॥ २ ॥

राधास्वामी घट का भेद जनाई ।
धुन संग सूरत दीन लगाई ॥ ३ ॥
राधास्वामी सूरत घट में चीन ।
पियत अमीरस मन हुआ लीन ॥ ४ ॥
निस दिन घट में देख बिलास ।
राधास्वामी चरन हुई निज दास ॥ ५ ॥
राधास्वामी काट दिये सब भरम ।
गुरु भक्ती अब हुई निज धरम ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन आसरा लीन ।
पिछली टेक सबहि तज दीन ॥ ७ ॥
राधास्वामी सरन भरोसा भारी ।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी लिया अब मोहिं अपनाई ।
अटक भटक सब दीन छुड़ाई ॥ ९ ॥
राधास्वामी सेवा करत रहूं री ।
राधास्वामी मुखड़ा ताक रहूं री ॥ १० ॥
राधास्वामी सोभा निरख हरखती ।
राधास्वामी दया घट माहिं परखती ॥ ११ ॥

राधास्वामी छबि पर तन मन वारूं ।
राधास्वामी चरन हिये में धारूं ॥१२॥
राधास्वामी दया सुर्त घट में चढ़ती ।
जोत रूप लख आगे बढ़ती ॥१३॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत ।
राधास्वामी दया हुइ निरमल सूरत ॥१४॥
राधास्वामी दीना घाट चढ़ाय ।
सुन में जाय मानसर न्हाय ॥१५॥
राधास्वामी महासुन्न दिखलाय ।
मुरली धुन दई गुफा सुनाय ॥१६॥
राधास्वामी मेहर सुनी धुन वीन ।
भेद अलख और अगम का चीन ॥१७॥
पूरन मेहर करी राधास्वामी ।
जाय लखा धुर धाम अनामी ॥१८॥
राधास्वामी गुन कस करूं बखान ।
राधास्वामी चरन अब मिला ठिकान ॥१९॥

॥ शब्द ७ ॥

राधास्वामी प्यारे प्रेम निधान ।
राधास्वामी प्यारे पुरुष सुजान ॥
प्रेम सहित राधास्वामी गुन गाऊं ।
हर दम राधास्वामी नाम धियाऊं ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी किया मोर उपकार ।
राधास्वामी मोहिं उतारा पार ॥
राधास्वामी लें सब जीव उबार ।
जो कोइ सुमिरे नाम दयार ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
दीन होय जो सरना आवे ।
आरत कर राधास्वामी रिझावे ॥
भेद पाय मन सुरत चढ़ावे ।
राधास्वामी दया अगम गत पावे ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥

घर परतीत करे सतसंगा ।
राधास्वामी नाम सुमिर चित चंगा ॥
सेवा करत चढ़े नित रंगा ।
राधास्वामी दया भरम सब भंगा ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिन नहिं जीव उधार ।
खुले नहीं कभी मोक्ष दुआर ॥
राधास्वामी बिन पद लखे न सार ।
भरमत रहें नित नौ के वार ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
याते सब जिव समझो भाई ।
राधास्वामी भेद लेव घट आई ॥
राधास्वामी से नित प्रीत बढ़ाई ।
राधास्वामी दें सब काज बनाई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥
राधास्वामी से अब करूं पुकारा ।
हे मेरे प्यारे पिता दयारा ॥

मुझ निकाम को लेव सम्हारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई ।
राधास्वामी नाम सुनो घट आई ॥
हर दम चरनन सुरत लगाई ।
राधास्वामी गत तब कुछ नजर आई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारो ।
ध्यान धरत उन रूप निहारो ॥
राधास्वामी करें तोहि जग पारो ।
राधास्वामी नाम कभी न बिसारो ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
राधास्वामी भेद नाद दरसावें ।
राधास्वामी घर की राह लखावें ॥

मंज़िल के सब नाम बतावें।
धुन और रूप भिन्न कर गावें॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ३॥
राधास्वामी पिछली टेक छुड़ावें।
राधास्वामी करम और भरम उड़ावें॥
राधास्वामी काल को दूर हटावें।
करम काट जिव घर पहुंचावें॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ४॥
राधास्वामी मन को मोड़ धरावें।
राधास्वामी घट में सुरत चढ़ावें॥
श्याम कंज का पाट खुलावें।
नभपुर जोत रूप दरसावें॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ५॥
राधास्वामी सुरत गगन पहुंचावें।
तिरबेनी अश्नान करावें॥
महासुन्न के पार करावें।
भंवरगुफा मुरली सुनवावें॥
राधास्वामी ३॥ राधास्वामी ३॥ ६॥

राधास्वामी संग अमरपुर आई ।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी २ दरशन पाई ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

गाओ गाओ री सखी नित राधास्वामी
ध्याओ २ री सखी नित राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥
सुनो २ री सखी धुन राधास्वामी ।
गुनो २ री सखी गुन राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ २ ॥
देखो २ री सखी छबि राधास्वामी ।
आओ २ री सरन सब राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ३ ॥
परखो २ री सखी गत राधास्वामी ।
मानो २ री सखी मत राधास्वामी ॥

राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ४ ॥
सेवो २ री सखी गुरु राधास्वामी ।
बसें २ री सखी धुर राधास्वामी ।
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ५ ॥
धारो २ री सखी बल राधास्वामी ।
मिलो २ री सखी चल राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥
निरखो २ री सखी पिया राधास्वामी ।
पाओ २ री सखी दया राधास्वामी ॥
राधास्वामी ३ ॥ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

राधास्वामी महिमां कस करूं बरनन ।
राधास्वामी लिया लगा मोहिं चरनन ॥१॥
राधास्वामी काटे करम और धर्मा ।
राधास्वामी दूर किये सब भर्मा ॥ २ ॥
राधास्वामी जग से लिया निकार ।
राधास्वामी धोये सबहि विकार ॥ ३ ॥

राधास्वामी अपनी टेक बंधाई ।
किरतम इष्ट सब दिये छुड़ाई ॥ ४ ॥
राधास्वामी दइ मोहिं प्रीत चरन में ।
राधास्वामी दइ परतीत सरन में ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद दिया निज नाम ।
राधास्वामी भक्ती दई निस्काम ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीना चरन अधार ।
राधास्वामी किया भौजल से पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दुरमत कीनी दूर ।
राधास्वामी दिया प्रेम भरपूर ॥ ८ ॥
राधास्वामी कीनी सूरत सूर ।
बाजे घट में अनहद तूर ॥ ९ ॥
राधास्वामी निस दिन नाम जपाई ।
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाई ॥१०॥
तिल अंदर सूरत को जोड़ ।
राधास्वामी संग पहुंची नभ ओर ॥११॥
राधास्वामी जोत रूप दरसाया ।
राधास्वामी त्रिकुटी शब्द सुनाया ॥१२॥

राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई ।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥१३॥
राधास्वामी दया गुफा में जाय ।
सोहंग मुरली सुनी बनाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया लखा सत रूप ।
सुरत धरा अब हंस सरूप ॥ १५ ॥
राधास्वामी दया अलखपुर झांका ।
अगम पुरुष का दरशन ताका ॥ १६ ॥
राधास्वामी मेहर गई धुर धाम ।
निरखा पूरन पुरुष अनाम ॥ १७ ॥
राधास्वामी कीना पूरन काज ।
प्रेम भक्ति का पाया साज ॥ १८ ॥

॥ शब्द ११ ॥

जो सच्चा परमारथी ।
तिस को यही उपाय ॥
कुल मालिक का खोज कर ।
राधास्वामी संगत आय ॥ १ ॥

कुल्ल मते संसार के ।
थाक रहे मग माहिं ॥
राधास्वामी पद नहिं पाइया ।
रहे काल की ठाहिं ॥ २ ॥
याते सतगुरु खोज कर ।
करना उन से प्रीत ॥
राधास्वामी मत का भेद ले ।
धर चरनन परतीत ॥ ३ ॥
उमंग सहित अभ्यास कर ।
मन और सुरत लगाय ॥
राधास्वामी दया कर ।
देवें शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
मगन होय धुन शब्द सुन ।
नित्त भजन कर नेम ॥
राधास्वामी मेहर से ।
जागे घट में प्रेम ॥ ५ ॥
सुरत चढ़े तब अधर में ।
जोत रूप दरसाय ॥

राधास्वामी मेहर से।
त्रिकुटी शब्द सुनाय ॥ ६ ॥
सुन में देखा चांदना।
भंवर सेत उजियार ॥
सत्त अलख और अगम लख।
राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
परम गुरू दातार ॥
दया करो मुझ दास पर।
दीना सरन अधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राधास्वामी मेरे गुरू दातारे।
राधास्वामी मेरे प्रान पियारे ॥ १ ॥
अगम रूप राधास्वामी धारा।
राधास्वामी हुए अलख पुर्ष न्यारा ॥ २ ॥
राधास्वामी धारा सत्त सरूप।
सोभा उनकी अजब अनूप ॥ ३ ॥

राधास्वामी धरें सन्त अवतार ।
राधास्वामी करें जीव उद्धार ॥ ४ ॥
राधास्वामी घट का भेद सुनावें ।
सुरत शब्द मारग दरसावें ॥ ५ ॥
राधास्वामी सिक्षा जो जिव धारे ।
भौ सागर के जावे पारे ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बने निज करनी ।
सुरत शब्द में छिन २ धरनी ॥ ७ ॥
दीन होय जो सरनी आवे ।
राधास्वामी दया मेहर तब पावे ॥ ८ ॥
याते राधास्वामी चरन धियाओ ।
राधास्वामी २ निस दिन गाओ ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३ ॥

राधास्वामी चरन लगे मोहिं प्यारे ।
राधास्वामी सरन मिला आधारे ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन सुने धर प्यार ।
मोह रही मैं देख दीदार ॥ २ ॥

राधास्वामी सेव उमंग से करती।
राधास्वामी भेद हिये में धरती ॥ ३ ॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं उमंग से।
राधास्वामी रूप धियाऊं रंग से ॥ ४ ॥
राधास्वामी भजन करूं मैं चित से।
राधास्वामी नाम जपूं मैं हित से ॥ ५ ॥
राधास्वामी २ कहत रहूं री।
राधास्वामी २ सुनत रहूं री ॥ ६ ॥
राधास्वामी पर मैं हिया जिया वारूं।
जग भय लाज सभी तज डारूं ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन लगाय लियारी।
राधास्वामी मोहिं निज भेद दियारी ॥८॥
राधास्वामी संग तपन हुई दूर।
घट में बाजे अनहद तूर ॥ ९ ॥
राधास्वामी संग हुआ मन चूर।
राधास्वामी संग सुरत हुई सूर ॥१०॥
राधास्वामी संग पाई घट शांत।
निरखी घट में धुन की क्रांत ॥११॥

राधास्वामी किया परम उपकार।
भौ जल से दिया पार उतार ॥१२॥

॥ शब्द १४ ॥

राधास्वामी महिमा क्या कहूं भारी।
राधास्वामी करें जीव उपकारी ॥ १ ॥
राधास्वामी खैंच लिया चरनन में।
राधास्वामी रूप बसा नैनन में ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन मिला आलंबा।
राधास्वामी बचन सुनत भ्रम भंगा ॥ ३ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहिं जबही।
राधास्वामी पर बल गई मैं तबही ॥४॥
राधास्वामी दीनी सुरत लखाय।
राधास्वामी दीना शब्द जगाय ॥ ५ ॥
प्रीत बढ़ी राधास्वामी चरना।
धर परतीत गही उन सरना ॥ ६ ॥
राधास्वामी सत मत अजब निहारा।
राधास्वामी गत अति अगम अपारा ॥७॥

राधास्वामी लिया मेरा भाग जगाय ।
राधास्वामी घट में शब्द सुनाय ॥ ८ ॥
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाय ।
तिल पट में दई जोत लखाय ॥ ९ ॥
धुन घंटा और संख सुनाय ।
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाय ॥१०॥
गरज मृदंग मचाया शोर ।
राधास्वामी दिया काल बल तोड़ ॥११॥
राधास्वामी खोला दसवां द्वार ।
सुन धुन सूरत हो गई सार ॥१२॥
राधास्वामी भंवरगुफा दिखलाय ।
सतपुर दीनी बीन सुनाय ॥१३॥
अलख अगम का नाका तोड़ ।
राधास्वामी चरन सुरत लई जोड़ ॥१४॥
मेहर करी मोपै राधास्वामी ।
परस चरन अति कर मगनानी ॥१५॥

॥ शब्द १५ ॥

राधास्वामी गत कोई नहिं जाने ।
राधास्वामी मत कैसे पहिचाने ॥ १ ॥
राधास्वामी भेद न कोई पावे ।
राधास्वामी चरन प्रीत कस लावे ॥ २ ॥
राधास्वामी मत है अति कर गहिरा ।
प्रेमी जन बिन कोइ न हेरा ॥ ३ ॥
जगत भाव में रहे भुलाई ।
राधास्वामी मत की समझ न आई ॥४॥
याते सब को कहूं बुझाई ।
राधास्वामी बिन जग में भरमाई ॥ ५ ॥
मौत खड़ी सिर ऊपर गाजे ।
राधास्वामी बिन नहिं कोई बाचे ॥ ६ ॥
रोग सोग जग में सहो भारा ।
राधास्वामी बिन नहिं और सहारा ॥७॥
याते चेतो समझो भाई ।
राधास्वामी सरन दौड़ कर आई ॥ ८ ॥

मान बड़ाई जग की त्याग ।
राधास्वामी चरन रहो तुम लाग ॥ ९ ॥
बचन सुनो हिरदे में धारो ।
छिन २ राधास्वामी नाम पुकारो ॥१०॥
जग का भय और लाज बिसारो ।
राधास्वामी चरन प्रीत हिये धारो ॥११॥
सुरत शब्द का मारग ताको ।
मन से राधास्वामी २ भाखो ॥१२॥
राधास्वामी रूप ध्यान में लाय ।
निस दिन घट में प्रेम जगाय ॥१३॥
तब होवे तुम जीव उबार ।
राधास्वामी लीला देखो सार ॥१४॥
हिम्मत बांध गिरो चरनन में ।
राधास्वामी दया करें छिन २ में ॥१५॥

॥ शब्द १६ ॥

राधास्वामी अगम अनाम अपारे ।
उन चरनन में रहूं सदारे ॥ १ ॥

राधास्वामी माता पिता पियारे ।
राधास्वामी बिन नहिं और अधारे ॥२॥
राधास्वामी संग चहूं नित बास ।
राधास्वामी संग नित करूं बिलास ॥३॥
राधास्वामी खोल दई हिये आंखी ।
राधास्वामी चरन अमीरस चाखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहिं घट का ।
राधास्वामी चरन मोर मन अटका ॥५॥
राधास्वामी दिया काल को झटका ।
मेट दिया झगड़ा खट पट का ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम धुंध उजियारा ।
राधास्वामी बिन जग बिच अंधियारा ॥७॥
राधास्वामी सेवा करत रहूं री ।
राधास्वामी २ जपत रहूं री ॥ ८ ॥
राधास्वामी काल और करम हटाये ।
राधास्वामी संसय भरम नसाये ॥ ९ ॥
राधास्वामी सतसंग बचन सुनाये ।
राधास्वामी प्यारे सजन सुहाये ॥१०॥

राधास्वामी घट का भेद सुनाई ।
राधास्वामी धुन संग सुरत लगाई ॥११॥
राधास्वामी तिल पट खोल दिखाई ।
राधास्वामी घंटा संख सुनाई ॥१२॥
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाई ।
राधास्वामी चंद्र रूप दरसाई ॥१३॥
राधास्वामी भंवरगुफा दिखलाई ।
मुरली धुन जहां बजे सुहाई ॥१४॥
राधास्वामी सतगुरु रूप लखाया ।
राधास्वामी अलख अगम दरसाया ॥१५॥
राधास्वामी धाम मिला मोहिं भारी ।
महिमां ताकी अकह अपारी ॥१६॥
दया हुई पद मिला इकंत ।
राधास्वामी कीना मोहिं निचिंत ॥१७॥

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी मत मैं धारा नीका ।
राधास्वामी मत है सब का टीका ॥ १ ॥

राधास्वामी हैं अगम अनामा ।
राधास्वामी बसें अधर धुर धामा ॥२॥
ज्ञानी जोगी और सन्यासी ।
राधास्वामी मत परतीत न लाय ॥ ३॥
वेदांती और सूफ़ी भाई ।
राधास्वामी धाम का खोज न पाय ॥४॥
बुध चतुराई सबहिन कीनी ।
राधास्वामी चरन प्रीत नहिं लाय ॥ ५ ॥
विद्या में सब गये भुलाई ।
राधास्वामी भक्ती रीत न पाय ॥ ६ ॥
दृष्टी का कुछ साधन करते ।
राधास्वामी जुगत न चित्त समाय ॥ ७॥
निरख प्रकाश फूल रहे मन में ।
राधास्वामी बिन सब धोखा खाय ॥८॥
यह प्रकाश माया की छाया ।
राधास्वामी नूर धार नहिं पाय ॥ ९ ॥
बाहरमुखी और मत सारे ।
राधास्वामी भेद न सुनिया आय ॥१०॥

काल फन्द में सब मत फन्दे।
राधास्वामी बिन को जाल कटाय ॥११॥
मेरा भाग जगा अब भारी।
राधास्वामी चर्नन मिलिया आय ॥१२॥
दया मेहर से बचन सुनाये।
राधास्वामी घट का भेद लखाय ॥१३॥
शब्द पकड़ सुर्त घट में चढ़ती।
राधास्वामी चरन अमीरस पाय ॥१४॥
दया मेहर से एक दिन मुझको।
राधास्वामी दें धुर घर पहुंचाय ॥१५॥

॥ शब्द १८ ॥

राधास्वामी चरन सीस में डारा।
राधास्वामी कीन मोर उपकारा ॥ १ ॥
राधास्वामी छिन में लेहिं सुधार।
राधास्वामी दें पद अगम अपार ॥ २ ॥
राधास्वामी सरन जीव जो आवें।
राधास्वामी धुर तक उन्हें निभावें ॥ ३ ॥

राधास्वामी मेहर न जाय बखानी ।
राधास्वामी जम से जीव छुटानी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
सोई घर जावे धुन सुन कर ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीना अगम संदेस ।
दूर हटाया माया लेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी घर की बाट लखाई ।
काल से लीने जीव बचाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी देकर अपना हाथ ।
राखा मोहिं निज चरनन साथ ॥ ८ ॥
राधास्वामी अचरज दया करी री ।
उमंग २ उन चरन पड़ी री ॥ ९ ॥
राधास्वामी धुर से मेहर कराई ।
बालपने से चरन लगाई ॥१०॥
राधास्वामी दिया मोहिं भक्ती दान ।
घट में प्रीत जगाई आन ॥११॥
निस दिन रहूं राधास्वामी अधार ।
राधास्वामी करें मेरा काज सम्हार ॥१२॥

राधास्वामी शरन भरोसा भारी।
राधास्वामी सरन सहारा भारी ॥१३॥
राधास्वामी चरन बसे मेरे मन में।
राधास्वामी नाम जपूं नित तन में ॥१४॥
राधास्वामी महिमां क्या कहूं गाई।
मोहिं निर्गुन को लिया अपनाई ॥१५॥
आस बास मेरा राधास्वामी चरना।
लाज काज मेरा राधास्वामी सरना ॥१६॥
राधास्वामी बिन कोइ नज़र न आवे।
राधास्वामी संग चित थिरता पावे ॥१७॥
मैं सब बिध हूं औगुनहारा।
राधास्वामी दिया मोहिं चरन सहारा ॥१८॥
राधास्वामी सब बिध दया करी री।
गुन उनका कस गाऊं अली री ॥१९॥
मैं राधास्वामी बिन और न जानूं।
राधास्वामी बिन कोइ और न मानूं ॥२०॥
कहां तक महिमां राधास्वामी गाऊं।
सीस चरन धर चुप्प रहाऊं ॥२१॥

॥ शब्द १९ ॥

राधास्वामी चरन पर जाऊं बलिहार ॥१॥
राधास्वामी सरन मम हिरदे धार ॥२॥
राधास्वामी दरस रहूं नित्त निहार ॥३॥
राधास्वामी बचन सुनूं चित्त सम्हार ॥४॥
राधास्वामी से पाऊं भेद अपार ॥ ५ ॥
राधास्वामी उतारें भौ जल पार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सुनावें घंटा सार ॥ ७ ॥
राधास्वामी चढ़ावें गगन मंझार ॥ ८ ॥
राधास्वामी लखावें चंद्र उजार ॥ ९ ॥
राधास्वामी सुनावें सोहंग सार ॥१०॥
राधास्वामी दिखावें सत दरबार ॥११॥
राधास्वामी करावें अलख दीदार ॥१२॥
राधास्वामी बढ़ावें अगम से प्यार ॥१३॥
राधास्वामी पहुचावें निज घरबार ॥१४॥
राधास्वामी की रहूं नित शुकर गुज़ार ॥१५॥
राधास्वामी मिटाये सब दुख भार ॥१६॥

॥ शब्द २० ॥

भूल और भरम बढ़ा जग माहिं।
संत मत राधास्वामी मानें नाहिं ॥ १ ॥
जीव सब माया के बंदे।
बिना राधास्वामी रहें गंदे ॥ २ ॥
काल के जाल फंसे सब आय।
बिना राधास्वामी कौन छुटाय ॥ ३ ॥
भेद राधास्वामी मत कोई सुनाय।
भरम कर नहिं सुनते चित लाय ॥ ४ ॥
खोज निज घर का दीना त्याग।
बचन में राधास्वामी मन नहिं लाग ॥ ५ ॥
दुक्ख सुख सहते बहु भांती।
चरन राधास्वामी बिन नहिं शांती ॥ ६ ॥
काल संग नित धोखा खाते।
दया राधास्वामी नहिं पाते ॥ ७ ॥
समझ तौभी नहिं चित लाते।
नाम राधास्वामी नहिं गाते ॥ ८ ॥

होय इन जीवन का तब काम।
करें जब राधास्वामी मेहर तमाम॥ ९॥
भाग मैं अपना रहूं सराय।
लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय॥१०॥
मेहर से दीनी सुरत जगाय।
दिया मोहिं राधास्वामी शब्द लखाय॥११॥
सिखाई भाव भक्ति की रीत।
दई मोहिं राधास्वामी घट परतीत॥१२॥
करूं मैं निस दिन राधास्वामी संग।
चरन में धारूं ढंग उमंग॥१३॥
करें राधास्वामी मेरी सहाय।
चरन में दिन २ प्रीत बढ़ाय॥१४॥
गाऊं मैं राधास्वामी गुन दम दम।
नहीं कोइ राधास्वामी सा हम दम॥१५॥

॥ शब्द २१ ॥

राधास्वामी मुझ पर मेहर करी री।
मन और सूरत पकड़ धरे री॥ १॥

राधास्वामी लिया मोहिं खैंच बुलाय ।
राधास्वामी दिया घट भेद सुनाय ॥२॥
राधास्वामी लिया लगा चरनन से ।
राधास्वामी लिया छुटा करमन से ॥३॥
राधास्वामी दीनी भूल मिटाय ।
राधास्वामी दीने भरम बहाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दिया मोहिं सतसंग ।
दिये जनाय मोहिं भक्ती ढंग ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीने सब मल धोय ।
राधास्वामी दिये बिकार सब खोय ॥ ६ ॥
राधास्वामी छुटा लिया मोहिं जग से ।
राधास्वामी बचा लिया मोहिं ठग से ॥७॥
राधास्वामी गुन नहिं बिसरूं कबही ।
राधास्वामी चरन न छोड़ूं कबही ॥८॥
राधास्वामी बचन बिचार रहूं री ।
राधास्वामी नाम पुकार रहूं री ॥ ९ ॥
राधास्वामी जुगत कमाय रहूं री ।
राधास्वामी भक्ति जगाय रहूं री ॥१०॥

राधास्वामी धुन में सुरत लगाऊं ।
राधास्वामी बल मन गगन चढ़ाऊं ॥११॥
राधास्वामी दया गुरु मूरत ताकूं ।
राधास्वामी मया सतगुरु पद झांकूं ॥१२॥
राधास्वामी बल मैं अलख लखूं री ।
राधास्वामी दया घर अगम धसूं री ॥१३॥
राधास्वामी चरनन जाय मिलूं री ।
राधास्वामी धुन में जाय रलूं री ॥१४॥

॥ शब्द २२॥

राधास्वामी परम पुरुष दातारे ।
राधास्वामी पूरन धनी हमारे ॥ १ ॥
राधास्वामी सतगुरु परम पियारे ।
राधास्वामी प्रीतम प्रान अधारे ॥ २ ॥
राधास्वामी चरन हिये में धारे ।
राधास्वामी सरन पकाय सम्हारे ॥ ३ ॥
राधास्वामी भक्ती साज दिया री ।
राधास्वामी जीव उबार लिया री ॥४॥

राधास्वामी मत क्या करूं बड़ाई।
निज घर सब से ऊंच दिखाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी सहज जोग बतलाया।
सुरत शब्द संजोग कराया ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया हुआ मन निश्चल।
राधास्वामी मेहर हुआ चित निरमल ॥ ७ ॥
राधास्वामी दई घट में परतीत।
राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीत ॥ ८ ॥
राधास्वामी घट का पाट खुलाय।
राधास्वामी अंतर बाट लखाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी दिये मन सुरत चढ़ाय।
गगन सिंघासन बैठे जाय ॥१०॥
राधास्वामी बल गई सूरत दौड़।
पहुंची जाय सतपुर की ओर ॥११॥
राधास्वामी लीना चरन मिलाय।
धाम अनामी निरखा जाय ॥१२॥
राधास्वामी दई मेरी सुरत संवार।
मेट दई सब जग की कार ॥१३॥

राधास्वामी के रहूं नित गुन गाय ।
राधास्वामी दिया मेरा काज बनाय ॥१४॥

॥ शब्द २३ ॥

राधास्वामी धरा जग गुरु अवतार ।
राधास्वामी उतारें सब को पार ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन दृढ़ पकड़ूं आज ।
राधास्वामी दिया मोहिं भक्ती साज ॥२॥
राधास्वामी सुनाई घट में धुन ।
राधास्वामी चढ़ाई सूरत सुन ॥ ३ ॥
राधास्वामी सुनाई मुरली सार ।
राधास्वामी दिखाया सत दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी अलख और अगम लखाय ।
निज घर दीनी सुरत चढ़ाय ॥ ५ ॥
कर बिसराम हुई मगनानी ।
राधास्वामी गुन नित रहूं बखानी ॥६॥
सब जीवों को कहूं संदेस ।
राधास्वामी से मिल करो अदेस ॥ ७ ॥

धाओ पकड़ो राधास्वामी चरना।
जस तस आओ राधास्वामी सरना॥ ८॥
सतसंग कर राधास्वामी रंग धारो।
मन की सबहि उचंग बिसारो॥ ९॥
राधास्वामी सम नहिं कोइ हितकारी।
राधास्वामी तुम को लेहिं सुधारी॥१०॥
ले उपदेश करो सतसंग।
राधास्वामी बल तज जगत कुरंग॥११॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
राधास्वामी काज करें तब छिन में॥१२॥

॥ शब्द २४ ॥

राधास्वामी महिमा को सके गाय।
बेद कतेब रहे भरमाय॥ १॥
राधास्वामी भेद न कोई जाने।
शेष महेश सब रहे भुलाने॥ २॥
राधास्वामी धाम अति अगम अपारा।
ब्रह्म और पारब्रह्म रहे वारा॥ ३॥

नारद सारद बिश्नु महेशा ।
राधास्वामी पद कोइ सुना न देखा ॥४॥
राधास्वामी घर कोइ प्रेमी जावे ।
जोत निरंजन दखल न पावे ॥ ५ ॥
जिसको मिलें भाग से सतगुरु ।
सोई जावे राधास्वामी धुर पुर ॥ ६ ॥
राधास्वामी देस है सब से न्यारा ।
पहुंचे वहां सतगुरु का प्यारा ॥ ७ ॥
सतसंग कर सेवा को धावे ।
राधास्वामी चरनन ध्यान लगावे ॥८॥
सुरत शब्द का मारग धारे ।
निस दिन राधास्वामी नाम पुकारे ॥९॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावे दिन दिन ।
राधास्वामी चरन पै वारे तन मन ॥१०॥
राधास्वामी आज्ञा चित से माने ।
राधास्वामी सम कोइ और न आने ॥११॥
अस २ जो कोई कार कमावे ।
दया मेहर राधास्वामी की पावे ॥१२॥

राधास्वामी उसका काज बनावें।
छिन २ सूरत अधर चढ़ावें ॥१३॥
इक दिन पहुंचावें धुरधाम।
राधास्वामी चरन मिलै बिस्राम ॥ १४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

राधास्वामी नाम की महिमां भारी।
राधास्वामी धाम अथाह अपारी ॥ १ ॥
राधास्वामी धार उतर कर आई।
सत्तलोक तक रचन रचाई ॥ २ ॥
राधास्वामी दयाल देस रच लीना।
महिमां वाकी काहु नहिं चीना ॥ ३ ॥
ऐसा अद्भुत राधास्वामी देसा।
नहिं व्यापै वहां काल कलेशा ॥ ४ ॥
सब जीवों को कहूं सुनाई।
राधास्वामी पद का निश्चय लाई ॥ ५ ॥
सतसंग करो बूझ तब पाई।
करनी कर जग भरम नसाई ॥ ६ ॥

दीन होय धारो उपदेशा ।
चरन पकड़ जाओ राधास्वामी देसा ॥ ७ ॥
राधास्वामी की धारो जुगती ।
तब पाओ तुम सच्ची मुक्ती ॥ ८ ॥
मेरे मन आनंद घनेरा ।
राधास्वामी चरन हुआ मैं चेरा ॥ ९ ॥
जब से राधास्वामी चरन गहे री ।
करम भरम सब आप दहे री ॥ १० ॥
सुरत शब्द का मारग ताकूं ।
राधास्वामी दया अधर घर झांकूं ॥ ११ ॥
राधास्वामी दाता दीन दयाला ।
मेहर करी मोहिं किया निहाला ॥ १२ ॥

॥ शब्द २६ ॥

राधास्वामी सम कोइ मित्र न जग में ।
राधास्वामी प्रीत बसी रग २ में ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन मेरे चित्त बसे री ।
राधास्वामी बिन जिव फांस फसे री ॥ २ ॥

राधास्वामी दिया मोहिं शब्द सिंगार ।
राधास्वामी लई मेरी सुरत निकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दिये मेरे बंधन तोड़ ।
राधास्वामी लिया मन चरनन जोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दई जम फांसी काट ।
राधास्वामी खोली घट में बाट ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेट दिये कल अंक ।
राधास्वामी चित से किया निसंक ॥ ६ ॥
राधास्वामी दिया शब्द परखाय ।
घट में सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी खोल दिये हिये नैना ।
मोहिं सुनाये घट में बैना ॥ ८ ॥
राधास्वामी पिरथम पाट खुलाया ।
जोत निरंजन पद दरसाया ॥ ९ ॥
राधास्वामी वहां से गगन चढ़ाई ।
शब्द गुरू से मेल कराई ॥ १० ॥
राधास्वामी अक्षर पुरुष लखाया ।
सुन में सारंग शब्द सुनाया ॥ ११ ॥

राधास्वामी भंवरगुफा दरसाई ।
मोहन मुरली बजै सुहाई ॥ १२ ॥
राधास्वामी दया फिर सतपुर लीना ।
अलख अगम का दरशन कीना ॥ १३ ॥
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई ।
निज चरनन में लिया मिलाई ॥ १४ ॥
क्या बिध कर राधास्वामी गुन गाऊं ।
हार मान अब चरन समाऊं ॥ १५ ॥

॥ बचन दसवां प्रेम बिलास भाग दूसरा ॥

सुरतिया

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया गाय रही ।
नित राधास्वामी नाम दयाल ॥ १ ॥
नाम बिना कोइ ठौर न पावे ।
नाम बिना सब बिरथा घाल ॥ २ ॥
नामहिं से नामी को लखिये ।
नाम करे सब की प्रतिपाल ॥ ३ ॥
नाम कहो चाहे शब्द बखानो ।
शब्द का निरखो नूर जमाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी शब्द खोजती चाली ।
सुन २ धुन अब हुई निहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

सुरतिया रही पुकार पुकार ।
सरन में सतगुरु के आओ ॥ १ ॥
जो यह बचन न मानो मेरा ।
तो जमपुर जाय पछताओ ॥ २ ॥
बारम्बार धरी तुम देही ।
दुख सुख संग नित भरमाओ ॥ ३ ॥
जीव काज अपना कुछ सोचो ।
संत चरन में चित लाओ ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की करो कमाई ।
घट अंतर कुछ सुख पाओ ॥ ५ ॥
गुरु चरनन में करो पिरीती ।
भाग आपना जगवाओ ॥ ६ ॥
सेवा कर प्रसन्नता लेवो ।
सुरत अधर में चढ़वाओ ॥ ७ ॥
जीव काज तब होवे तुम्हरा ।
राधास्वामी चरनन जाय समाओ ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया सुमिर रही ।
सतगुरु का छिन २ नाम ॥ १ ॥
प्रेम अंग ले पकड़े चरना ।
बिसर गये सब जग के काम ॥ २ ॥
सतसंग में चित अति हुलसाना ।
पाया वहां आराम ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन बिन चैन न आवे ।
निरखत रहूं छबि आठों जाम ॥ ४ ॥
हित कर करत बीनती गुरु से ।
देव गुरू अस अमृत जाम ॥ ५ ॥
रहूं अचिंत होय मस्ताना ।
सुरत चढ़ाय लखूं गुरुधाम ॥ ६ ॥
मेहर करो अस राधास्वामी प्यारे ।
मैं तुम्हरी चेरी बिन दाम ॥ ७ ॥

मेहर करी गुरु भेद सुनाया ।
शब्द २ का कहा मुक़ाम ॥ ८ ॥
बिरह अंग ले करो अभ्यासा ।
सुरत लगाओ होय निस्काम ॥९॥
सहज २ चढ़ चलो अधर में ।
निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम ॥१०॥
वहां से सतगुरु दरस निहारो ।
राधास्वामी चरन करो बिस्राम ॥११॥
दया मेहर बिन काज न होई ।
राधास्वामी दया लेव संग साम ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरतिया छोड़ चली ।
अब छिन छिन माया देस ॥ १ ॥
नैन नगर में बसी आय कोइ दिन ।
पाया करम कलेस ॥ २ ॥
करम भरम में बहु बिध उलझी ।
भूल गई निज देस ॥ ३ ॥

जाल बिछाया काल कराला।
फांस लिये जिव गहि कर केस ॥ ४ ॥
कोई जीव बचने नहिं पावे।
बिन सतगुरु उपदेस ॥ ५ ॥
याते प्यारी कहना मानो।
कर गुरु की आदेस ॥ ६ ॥
दीन होय ले भेद गुरू से।
सुरत शब्द संदेस ॥ ७ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।
पहुंचो पद निज शेश ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

सुरतिया मेल करत।
गुरु प्रेमी जन के साथ ॥ १ ॥
दीन दिल गुरु संग करती हेत।
प्रेमी जन की सुन सुन बात ॥ २ ॥
भक्ति की रीती दई बताय।
करत गुरु सेवा दिन और रात ॥ ३ ॥

चित्त धर सतसंग के बचना।
चरन गुरु हिरदे में नित ध्यात ॥ ४ ॥
शब्द धुन से रही चित को जोड़।
निरख गुरु लीला घट मुसक्यात ॥ ५ ॥
हुआ अस निश्चय मन मेरे।
बिना गुरु सबही धोखा खात ॥ ६ ॥
प्रीत जो गुरु चरनन लावे।
साध संग में जो चित्त बसात ॥ ७ ॥
वही जन मेहर गुरू पावे।
बचावे काल करम की घात ॥ ८ ॥
उलट मन चढ़े गगन पर धाय।
शब्द में सूरत सहज समात ॥ ९ ॥
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
सत्तपुर जावे पावे शांत ॥ १० ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरतिया दीन हुई।
लख राधास्वामी दया अपार ॥ १ ॥

जगत भाव में रही भरमाती ।
धर मन में अहंकार ॥ २ ॥
मान बड़ाई भोग बासना ।
याही कारन करती कार ॥ ३ ॥
परमारथ की सुध नहिं लाती ।
गुरु भक्तन संग किया न प्यार ॥ ४ ॥
निंद्या कर कर पाप बढ़ाती ।
मन के छोड़त नहीं बिकार ॥ ५ ॥
औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनाए गुरु ने सार ॥ ६ ॥
जनम मरन नरकन के दुख सुख ।
गुरु ने दरसाये कर प्यार ॥ ७ ॥
तुच्छ देख इंद्रिन के भोगा ।
झूठा लागा जगत असार ॥ ८ ॥
दीन चित्त होय पड़ी गुरु चरना ।
मेहर करी सतगुरु दातार ॥ ९ ॥
भेद जनाय कराया सतसंग ।
सुरत लगी अब धुन की लार ॥ १० ॥

चरन सरन गुरु हिये में धारी ।
राधास्वामी मेहर से कीन्हा पार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरतिया सोच करत ।
अब किस बिध उतरूं पार ॥ १ ॥
गुरु भेदी ने पता बताया ।
सुरत शब्द मारग रहो धार ॥ २ ॥
सतसंग करो बचन चित धारो ।
मन इंद्रिन को रोको झार ॥ ३ ॥
गुरु परतीत प्रीत हिये धर कर ।
करनी करो सम्हार ॥ ४ ॥
सुन अस बचन उमंग हुई भारी ।
पहुंची गुर दरबार ॥ ५ ॥
बचन सुनत मन निश्चय बाढ़ा ।
संशय भरम निकार ॥ ६ ॥
भेद पाय अभ्यास करूं नित ।
तन मन गुरु पर वार ॥ ७ ॥

सरन सम्हार चरन दृढ़ पकडूं।
सहजहि होय उद्धार ॥ ८ ॥
राधास्वामी गत मत अगम अपारा।
राधास्वामी शब्द सार का सार ॥ ९ ॥
यह निज घर बड़भागी पावे।
सब से होय नियार ॥ १० ॥
मुझ ग़रीब की खूब सुधारी।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुरतिया जाग उठी।
गुरु नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥
बहु दिन जग संग भरमत बीते।
खोज न कीन्हा निज घर बार ॥ २ ॥
मन इंद्री संग रही भुलानी।
सुध नहिं कीनी को करतार ॥ ३ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दया कर।
उन घट भेद सुनाया सार ॥ ४ ॥

काल करम बहु अटक लगाये।
मन और सुरत बहत रहे वार ॥ ५ ॥
गुरू दयाल मेरी फिर सुध लीनी।
खैंच लगाया सतसंग लार ॥ ६ ॥
अमृत रूपी बचन सुनाये।
दर्शन दे कीना निरवार ॥ ७ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत हिये में।
चरन सरन बख़्शा आधार ॥ ८ ॥
सुमिरन ध्यान शब्द अभ्यासा।
जुगत सुनाई किरपा धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी रूप धिआऊं निस दिन।
राधास्वामी गाऊं नाम अपार ॥१०॥
राधास्वामी दया संग ले घट में।
सुरत चढ़ाऊं गगन मंझार ॥११॥
सतपुर सत्त शब्द धुन सुन कर।
परसूं राधास्वामी चरन सम्हार ॥१२॥

॥ शब्द ९ ॥

सुरतिया कहत सुनाय सुनाय ।
चरन गुरू गहो सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
क्यों माया संग भूले भाई ।
क्यों निज घर को दिया बिसार ॥ २ ॥
यह ग़फ़लत फिर बहुत सतावे ।
जल्दी करो होव हुशियार ॥ ३ ॥
खोजो सतगुरु अधर ठिकानी ।
उनके चरन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
प्रीत भाव से करो सतसंगत ।
बचन सुनो हिये उमंग सम्हार ॥ ५ ॥
भेद पाय तुम धरो धियाना ।
निरखो घट में एक गुलज़ार ॥ ६ ॥
शब्द गुरू संग आरत करना ।
घट में अद्भुत दरस निहार ॥ ७ ॥
गुरू का बल ले चढ़ो अधर में ।
सुन और महासुन्न के पार ॥ ८ ॥

मुरली बीन बजावत चाली ।
पहुंची अलख अगम दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दरस निहारत ।
चरन सरन गह बैठी हार ॥१०॥
ऐसी दुर्लभ भक्ति कमाई ।
राधास्वामी कीन्ही दया अपार ॥११॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
सहज लिया मोहिं अधम उबार ॥१२॥

॥ शब्द १० ॥

सुरतिया अटक रही ।
धर माया प्यार ॥ १ ॥
अनेक पदारथ और रस भोगा ।
काल रचाये कर बिस्तार ॥ २ ॥
मन इच्छा दोउ प्यादे उसके ।
रहें सुरत पर नित असवार ॥ ३ ॥
जित चाहे तित उसे घुमावें ।
भरमत रहे सदा नौवार ॥ ४ ॥

सुरत अजान न बूझै फंदा।
रच पच माया बिछाया जार ॥ ५ ॥
निज घर की कोइ सुध नहिं पावे।
माया के नहिं जावे पार ॥ ६ ॥
जो जिव संत सरन में आवें।
उनका मेहर से करें उबार ॥ ७ ॥
मेरा भाग जगा अब धुर का।
राधास्वामी संगत पाई सार ॥ ८ ॥
मेहर करी सतसंग मिलाया।
सूझ बूझ दई किरपा धार ॥ ९ ॥
निज घर का मोहिं भेद सुनाया।
सुरत शब्द दिया मारग सार ॥१०॥
बिरह उमंग ले करूं कमाई।
चरन सरन गुरु हिये सम्हार ॥११॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी।
सहज उतारें मुझको पार ॥ १२ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सुरतिया मान तजत ।
आज सतसंग में रस पाय ॥ १ ॥
मन का संग कर हुई दिवानी ।
भोगन में लिपटाय ॥ २ ॥
जगत बासना नित्त बढ़ावत ।
दुक्ख सहत फिर २ पछताय ॥ ३ ॥
करम धरम संग हुई बावरी ।
देवी देव पुजाय ॥ ४ ॥
तीरथ बर्त जगत ब्योहारा ।
नित्त करे सिर करम चढ़ाय ॥ ५ ॥
संतन की बानी नहिं पढ़ती ।
मोह जाल में रही फसाय ॥ ६ ॥
भाग जगा गुरू सन्मुख आई ।
निज घर का उन भेद सुनाय ॥ ७ ॥
जग का झूठा खेल पसारा ।
बहु बिध गुरू ने दिया समझाय ॥ ८ ॥
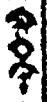
समझ बूझ सतसंग में लागी ।
मान बड़ाई तज दई आय ॥ ९ ॥
गुरु से प्रीत करत अब सांची ।
सुरत शब्द की कार कमाय ॥ १० ॥
घट में निरख बिलास नवीना ।
गुरु चरनन परतीत बढ़ाय ॥ ११ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
लीना अपना काज बनाय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुरतिया बोल रही ।
जीवन को हेला मार ॥ १ ॥
जो चाहो सच्चा निरवारा ।
सतगुरु सरन आओ धर प्यार ॥ २ ॥
सतसंग कर गुरु बचन सम्हारो ।
जग का भय और भाव निकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरनन धारो आसा ।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ ४ ॥
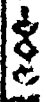
करम भरम सब निस्फल जानो ।
बहिरमुख करनी देव बिसार ॥ ५ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
घट में करनी करो सम्हार ॥ ६ ॥
भोग बासना चित से टारो ।
त्यागो मन के सबही बिकार ॥ ७ ॥
धर परतीत करो गुरु सेवा ।
दिन दिन प्रेम जगाओ सार ॥ ८ ॥
तब मन सुरत लगें घट धुन में ।
देखैं अंतर बिमल बहार ॥ ९ ॥
गुरु बल हिये धर चढ़ैं अधर में ।
मगन होंय सुन धुन झनकार ॥१०॥
शब्द शब्द का निरख प्रकाशा ।
पहुंचे सुरत सेत दरबार ॥ ११ ॥
तब होवै सच्चा उद्धारा ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ १२ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुरतिया अमर हुई ।
अब संत धाम में जाय ॥ १ ॥
या जग में कोइ ठहर न पावे ।
काल सबन को खाय ॥ २ ॥
धन और मान भोग इन्द्री के ।
छिनभंगी कोइ थिर न रहाय ॥ ३ ॥
याते जतन करो सब कोई ।
जासे जनम मरन छुट जाय ॥ ४ ॥
सुरत शब्द बिन बचे न कोई ।
बिन सतगुरु कोइ बाट न पाय ॥ ५ ॥
जब लग सुरत न पहुंचे सतपुर ।
काल देस में रहे भरमाय ॥ ६ ॥
याते चरन गहो सतगुरु के ।
दीन होय उन सरनी आय ॥ ७ ॥
सेवा कर सतसंग कर उनका ।
परमारथ का भाग जगाय ॥ ८ ॥

प्रीत प्रतीत धार उन चरना ।
सुरत शब्द में नित्त लगाय ॥ ९ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे ।
दया करें सुर्त अधर चढ़ाय ॥ १० ॥
सतपुर जाय अमीं रस पीवे ।
मगन होय धुन बीन बजाय ॥ ११ ॥
जनम मरन की त्रास नसाई ।
राधास्वामी धाम मिला निज आय ॥ १२ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
मन इंद्रियन नाल ॥ १ ॥
काल शिकारी घेरा डाला ।
माया आन बिछाया जाल ॥ २ ॥
सब जिव उनकी फांस फंसाने ।
भूल गये निज घर की चाल ॥ ३ ॥
करम भरम संग हुए बावरे ।
चौरासी में पड़े बेहाल ॥ ४ ॥

करम भोग दुख सहैं घनेरा ।
को काटै उनका जंजाल ॥ ५ ॥
जो जिव आये सतगुरु सरना ।
छूट गये उनके दुख साल ॥ ६ ॥
मेरा भाग उदय हुआ भारी ।
सतगुरु संत चरन परसाल ॥ ७ ॥
निज घर भेद दया से दीना ।
सुरत शब्द मारग दरसाल ॥ ८ ॥
सतसंग में मोहिं लिया मिलाई ।
अचरज बचन सुनाये हाल ॥ ९ ॥
दृढ़ परतीत धरी चरनन में ।
मिला प्रेम का धन और माल ॥ १० ॥
दीन निरख मोहिं राधास्वामी प्यारे ।
मेहर दया से सुरत चढ़ाल ॥ ११ ॥
नभ में होय गई गगनापुर ।
मार दिया दल काल कराल ॥ १२ ॥
अनहद बाजे बाजन लागे ॥
निरख रही स्रुत सूरज लाल ॥ १३ ॥

अक्षर धुन सुन आगे चाली ।
केल करत वहां हंसन नाल ॥ १४ ॥
भंवरगुफा चढ़ अधर सिधारी ।
हैरां रहा देख महाकाल ॥ १५ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष दयाल ॥ १६ ॥
आरत कर गह राधास्वामी चरना ।
आनंद पाय हुई तृप्ताल ॥ १७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सुरतिया चेत रही ।
गुरु बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥
परमारथ चित धार हेत कर ।
पढ़त सुनत रही बानी सार ॥ २ ॥
राधास्वामी दया करी मोपै धुर से ।
दीना मुझ को अगम बिचार ॥ ३ ॥
समझ समझ कर सुने बचन गुरु ।
बूझा परम तत्त निज सार ॥ ४ ॥

शब्द बिना नहिं मारग सूझै।
प्रेम बिना नहिं खुलै दुआर ॥ ५ ॥
बिन सतगुरु कोई राह न पावे।
गत मत उनकी अगम अपार ॥ ६ ॥
ऐसी समझ धार कर हिये में।
लीना राधास्वामी चरन अधार ॥ ७ ॥
और तरह कोई बाच न पावे।
कर्म और काल बड़ बरियार ॥ ८ ॥
नीच ऊंच जोनी में भरमे।
कभी न होवे जीव उबार ॥ ९ ॥
याते सब को कहूं सुनाई।
सरन गहो सतगुरु दरबार ॥ १० ॥
मै बड़ भाग कहूं क्या अपना।
राधास्वामी लिया मोहिं गोद बिठार ॥११॥
बचन सार मोहिं भाख सुनाये।
दरस दिया निज किरपा धार ॥१२॥
सुरत शब्द का भेद अमोला।
सुमिरन ध्यान जुगत कही सार ॥१३॥

मन इंद्री को रोक अंदर में ।
शब्द को परखूं घट में धार ॥१४॥
मन चंचल की चाल निहारूं ।
दूर हटाऊं सबही बिकार ॥१५॥
प्रीत प्रतीत जगाय हिये में ।
नित प्रति निरखूं नई बहार ॥१६॥
राधास्वामी बल हिरदे धर अपने ।
सुरत चढ़ाऊं गगन मंझार ॥१७॥
सहसकंवल त्रिकुटी लख लीला ।
सुन्न और महासुन्न धस पार ॥१८॥
भंवरगुफा का ताक़ उघारूं ।
सत्त अलख और अगम निहार ॥१९॥
राधास्वामी धाम अपारा ।
परस चरन रहूं आरत धार ॥२०॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा ।
चरनन में लिया मोहिं कर प्यार ॥२१॥

भेद का अंग

॥ शब्द १६ ॥

सुरतिया लाल हुई।
चढ़ गगन निरख गुरु रूप ॥ १ ॥
घंटा संख गरज धुन सुनकर।
छोड़ दिया भौ कूप ॥ २ ॥
आसा तृष्ना मन्सा जग की।
फटक दई ले गुरु का सूप ॥ ३ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा।
निरखा सूरज सेत सरूप ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का दर्शन करके।
पहुंची राधास्वामी धाम अरूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरतिया झांक रही।
गुर दरस अनूप ॥ १ ॥
मन और सुरत साध कर घट में।
नभ चढ़ निरखा जोत सरूप ॥ २ ॥

अधर चढ़त पहुंची गगना पुर।
जहां छांह नहिं खिल रही धूप ॥ ३ ॥
भंवरगुफा के हो गई पारा।
निरखा जाय पुरुष सतरूप ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु यह धाम न पावे।
जीव पड़े सब माया कूप ॥ ५ ॥
अलख पुरुष के दरशन करके।
अगम पुरुष निरखा कुल भूप ॥ ६ ॥
अचरज दरशन राधास्वामी पाये।
अकह अपार अनाम अरूप ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरतिया झूल रही।
आज धरन गगन के बीच ॥ १ ॥
घेर फेर मन घट में लाई।
सुरत अधर में खींच ॥ २ ॥
गगन तख़्त पर गुरू बिराजे।
मेहर करी मोहिं लीना ईंच ॥ ३ ॥

माया दल थक रहा डगर में ।
काल करम दोउ डाले भींच ॥ ४ ॥
होय निसंक चढ़ूँ नित घट में ।
सैर करूं पद ऊंच और नीच ॥ ५ ॥
सुन सतशब्द गई अमरापुर ।
छोड़ दई संगत मन नीच ॥ ६ ॥
घट में भक्ती पौद खिलानी ।
प्रेम रूप जल से रही सींच ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन पाय बिस्रामा ।
निर्भय सोऊं आखें मीच ॥ ८ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरतिया बिगस रही ।
लख कंवल कली ॥ १ ॥
उलटत दृष्टि जोड़ तिल अंदर ।
नभ की ओर चली ॥ २ ॥
सहसकंवल जाय वासा कीना ।
जहां वहां जोत बली ॥ ३ ॥

घंटा संख तजी धुन दोई ।
निरखी आगे गगन गली ॥ ४ ॥
माया थाक रही मग मांहीं ।
हार रहा अब काल बली ॥ ५ ॥
अक्षर निःअक्षर के पारा ।
सत्त शब्द में जाय रली ॥ ६ ॥
संत मते की सार न जानी ।
बेद कतेब रहे हार तली ॥ ७ ॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ८ ॥
मेहर दया जस मोपर कीनी ।
गुन उनका कस गाऊं अली ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

सुरतिया गगन चढ़ी ।
सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
बिरह दरद ले सन्मुख आई ।
लीना भेद सम्हार ॥ २ ॥

मन को मोड़ इंदिरी रोकत।
दिये विकार निकार ॥ ३ ॥
सुरत शब्द संग चढ़त अधर में।
खोला मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
घंटा संख शब्द सुन हरखी।
निरखा जोत उजार ॥ ५ ॥
वहां से चल पहुंची त्रिकुटी में।
सुनी गरज धुन ओअंकार ॥ ६ ॥
सुन में लखा चंद्र उजियारा।
सुनत रही सारंगी सार ॥ ७ ॥
सुरत धरा अब हंस सरूपा।
चुगती मुक्ता सार ॥ ८ ॥
महासुन्न के चढ़ गई पारा।
सुनी भंवर में सोहंग सार ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनी धुन बीना।
अलख अगम के होगई पार ॥ १० ॥
राधास्वामी दरस पाय मगनानी।
होय गई अब सूरत सार ॥ ११ ॥

बिरह का अंग

॥ शब्द २१ ॥

सुरतिया तड़प रही।
गुरु दरस बिना ॥ १ ॥
बिरह अगिन हिये में नित सुलगत।
चैन न पावत रैन दिना ॥ २ ॥
ब्याकुल मन और चित्त उदासा।
जगत फिरत संग सहूं तपना ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती।
दर्शन दो मोहिं कर अपना ॥ ४ ॥
जिस दिन दरस भाग से पाऊं।
तन मन वारूं और धना ॥ ५ ॥
या जग में मोहिं जान पड़ी अब।
राधास्वामी बिन नहिं कोइ अपना ॥ ६ ॥
याते सरन गहूं राधास्वामी।
सेवा करूं गुरु भक्त जनां ॥ ७ ॥

यही उपाव कहा संतन ने।
यही जतन कर मेरे मना ॥ ८ ॥
राधास्वामी भाग जगाया मेरा।
सुख पाया मैं आज घना ॥ ९ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सुरतिया भाव भरी।
अब आई गुरु के घाट ॥ १ ॥
सतसंग करत मैल मन धोवत।
परमारथ की पाई चाट ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारत।
खोजत घर की बाट ॥ ३ ॥
सुमिरन ध्यान करत निस बासर।
माँजत मन का माट ॥ ४ ॥
शब्द संग अब सुरत लगावत।
खोलत घट का पाट ॥ ५ ॥
धुन की डोर पकड़ सुर्त चालत।
सहसकंवल में बांधत ठाट ॥ ६ ॥

घंटा संख शब्द धुन गाजे ।
जहां बलत जोत की लाट ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
दिये करम सब काट ॥ ८ ॥
चरन सरन दे मोहिं अपनाया ।
खोल दिये अब सभी कपाट ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन धार अब हिये में ।
निरभय सोऊं बिछाये खाट ॥ १० ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
धुन शब्द निरख नभ द्वार ॥ १ ॥
संत बचन को गुनती हर दम ।
शब्द का करत बिचार ॥ २ ॥
घट का भेद दिया नहिं कोई ।
खोजत रही सब से हरबार ॥ ३ ॥
साध मिले जब गुरु के भेदी ।
उन कहा संत मत सार ॥ ४ ॥

ले जुगती करती अभ्यासा ।
मन और सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन में पूरी शान्त न पाई ।
आई गुरू दरबार ॥ ६ ॥
सुन सुन भेद मगन हुई मन में ।
घट मे पाया मारग सार ॥ ७ ॥
निश्चल चित होय सुरत लगाई ।
हरख रही सुन धुन झनकार ॥ ८ ॥
नित अभ्यास करूं मैं घट में ।
प्रीत प्रतीत सम्हार ॥ ९ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊं ।
पाऊं उनकी मेहर अपार ॥ १० ॥
काल जीत जाउं भौजल पारा ।
राधास्वामी चरन करूं दीदार ॥ ११ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सुरतिया दर्द भरी ।
रहे निस दिन चित्त उदास ॥ १ ॥

मेहर दया सतगुरु से मांगत ।
चाहत चरनन बास ॥ २ ॥
मन माया से नित प्रति जूझे ।
चरन बिना कोइ और न आस ॥ ३ ॥
सतसंग बचन सार हिये धारत ।
नाम जपत निस बास ॥ ४ ॥
अपनी सी बहु करत कमाई ।
गुरु का धर बिस्वास । ५ ॥
तज जग का ब्योहार असारा ।
रहती गुरु के पास ॥ ६ ॥
मगन होय चित जोड़त धुन से ।
निरखत घट परकाश ॥ ७ ॥
घंटा संख और गरज सुनावत ।
सुन्न में लखती चंद्र उजास ॥ ८ ॥
भंवरगुफा सतलोक शब्द सुन ।
अलख अगम जाय किया निवास ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर ।
मगन हुई पाय अमर बिलास ॥ १० ॥

दीन हीन होय आरत धारी ।
राधास्वामी चरन हुई निज दास ॥११॥

॥ शब्द २५ ॥

सुरतिया जाग रही ।
गुरु चरनन में चित लाय ॥ १ ॥
जनम जनम जग बिच रही सोती ।
माया संग लुभाय ॥ २ ॥
सत पद का कभी खोज न कीना ।
भरमन में दई बैस बिताय ॥ ३ ॥
मेहर हुई सतसंग में आई ।
सतगुरु बचन सुनत हरखाय ॥ ४ ॥
मनन करत धारी गुरु सरना ।
किरतम इष्ट सब दिये बहाय ॥ ५ ॥
भेद पाय घट धुन में लागी ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ६ ॥
ले गुरु दया चली अब घट में ।
नभपुर घंटा संख सुनाय ॥ ७ ॥

गगन जाय सुनती धुन ओअंग ।
सुन में मानसरोवर न्हाय ॥ ८ ॥
भंवरगुफा की बंसी बाजी ।
सतपुर दर्शन पुरुष दिखाय ॥ ९ ॥
अलख अगम का दर्शन पावत ।
छिन २ रही सतगुरु गुन गाय ॥ १० ॥
आगे चढ़ पहुंची धुर धामा ।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ११ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सुरतिया तोल रही ।
गुरु बचन सार के सार ॥ १ ॥
खोज करत सतसंग में आई ।
गुरु का दरस निहार ॥ २ ॥
बचन सुनत मन शांती आई ।
मोह रही कर प्यार ॥ ३ ॥
जितने मते जगत में जारी ।
सबही थोथे जान असार ॥ ४ ॥

सत पद का कोइ भेद न गावे ।
जीव बहे चौरासी धार ॥ ५ ॥
सतगुर मोहिं घट भेद सुनाया ।
पता दिया मोहिं निज घरबार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द की राह लखाई ।
पकड़ चढ़ूं अब धुन की धार ॥ ७ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारूं ।
करम धरम का पटकूं भार ॥ ८ ॥
उमंग सहित करनी करूं निस दिन ।
राधास्वामी चरन सरन आधार ॥ ९ ॥
संसय भरम उड़ाय दिये सब ।
गुरू चरनन पर तन मन वार ॥१०॥
दिन दिन भाग जगाऊं अपना ।
सुरत शब्द की करती कार ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी प्यारे ।
पार किया मोहिं किरपा धार ॥१२॥

॥ शब्द २७ ॥

सुरतिया तरस रही।

गुरु दर्शन को दिन रात ॥ १ ॥

जग ब्योहार पड़ा अस पीछे।

घर नहिं छोड़ा जात ॥ २ ॥

तड़प तड़प मन होय उदासा।

रहे घट में अकुलात ॥ ३ ॥

बहु बिध कर मैं जुगत उपाऊं।

पर कोई भी पेश न जात ॥ ४ ॥

सतसंग बिन मन चैन न पावे।

चित में रहूं नित्त घबरात ॥ ५ ॥

संसय भरम उठावत काला।

भजन ध्यान में रस नहिं पात ॥ ६ ॥

बिरह उठत नित हिये में भारी।

और कहीं मन लगे न लगात ॥ ७ ॥

राधास्वामी से अब करूं पुकारी।

देव प्रेम की मोहिं अब दात ॥ ८ ॥

जल्द २ मैं दर्शन पाऊं।
सतसंग में नए बचन सुनात ॥ ९ ॥
तब तन मन मेरे शांत धरावें।
दर्शन और बचन रस पात ॥१०॥
जो अस मौज न होवे जल्दी।
दूर करो मन के उतपात ॥११॥
घट में नित मोहिं दर्शन दीजे।
धुन संग मन और सुरत लगात ॥१२॥
गुन गाऊं तुम चरन धियाऊं।
प्यारे राधास्वामी मेरे पित और मात ॥१३॥
दया दृष्टि से मोहिं निहारो।
औगुन मेरे चित्त न लात ॥१४॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरतिया झुरत रही।
कस लगूं शब्द संग जाय ॥ १ ॥
नित फ़र्याद करूं सतगुर से।
घट में दीजे दर्शन आय ॥ २ ॥

एक चित होय लगूं घट अंतर ।
शब्द अमीरस पिऊं अघाय ॥ ३ ॥
सुननहार नहिं सुनै पुकारा ।
कैसी करूं मेरी कहा बसाय ॥ ४ ॥
रैन दिवस रहुं सोचत मन में ।
कस भौसागर पार पराय ॥ ५ ॥
बिरह अगिन मोहिं नित्त सतावे ।
बेकल रहूं मोहिं कछु न सुहाय ॥ ६ ॥
आस २ में बहु दिन बीते ।
योंही उमरिया बीती जाय ॥ ७ ॥
मन इंद्री संग जूझत रहती ।
बहु बिधि भय और आस दिखाय ॥ ८ ॥
काज बना नहिं पूरा अब तक ।
मन भी कुछ मेरे बस नहिं आय ॥ ९ ॥
जब तब माया और लुभावे ।
घट में चालन को अलसाय ॥१०॥
आस निरास संग दिन बीतत ।
मनहीं मन में रहूं अकुलाय ॥११॥

भूल चूक और कसर अनेका ।
सोचत मन में रहूं शरमाय ॥१२॥
बिन राधास्वामी कोइ और न दीसे ।
उनहीं से कहूं बिपत सुनाय ॥१३॥
मेहर दृष्टि से अब मोहिं हेरो ।
जल्दी देव निज शब्द सुनाय ॥१४॥
किरपा कर निज रूप दिखाओ ।
तब मन मेरा तृप्त अघाय ॥१५॥

॥ शब्द २९ ॥

सुरतिया परख परख ।
आज गुरु मत लीना चीन ॥ १ ॥
उमंग भरी सतसंग में आई ।
गुरु चरनन आधीन ॥ २ ॥
बचन सुनत बढ़ा भाव हिये में ।
तजत मान हुई दीन ॥ ३ ॥
भेद पाय मन उमंगा भारी ।
सुरत शब्द में लीन ॥ ४ ॥

सब मत खोज जांच लिया मन में ।
गुरु मत सांचा दीन ॥ ५ ॥
धुन की ख़बर पाय अब घट में ।
मन दृढ़ निश्चय कीन ॥ ६ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन ।
तन मन वार धरीन ॥ ७ ॥
माया ममता झींक रहीं अब ।
काल हुआ ग़मगीन ॥ ८ ॥
पांच दूत गुरु बल बस कीने ।
थाक रहे गुन तीन ॥ ९ ॥
राधास्वामी की क्या महिमा गाऊं ।
लिया अपनाय मोहिं मिसकीन (अ) ॥१०॥
प्रेम रंग की बरखा कीनी ।
मन और सुरत हुए रंगीन ॥११॥
उमंग उमंग कर चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द रस लीन ॥१२॥
सहसकंवल और गगन अटारी ।
सुन और महासुन्न लख लीन ॥१३॥

(अ) ग़रीब

भंवरगुफा होय चढ़ी अधर में।
सतपुर जाय सुनी धुन बीन ॥१४॥
सत्तपुरुष की आरत कीनी।
दई मेहर से मोहिं दुरबीन ॥१५॥
अलख अगम के पार गई अब।
मिल गये राधास्वामी गुरु परबीन ॥१६॥
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी।
प्रीत लगी अब जस जल मीन ॥१७॥

॥ शब्द ३० ॥

सुरतिया निरख परख।
अब गुरु मत धारा आय ॥ १ ॥
खोजत रही आद घर न्यारा।
ताकी बूझ कहीं नहिं पाय ॥ २ ॥
कोइ मूरत कोइ तीरथ गावें।
कोइ रहे करम धरम अटकाय ॥ ३ ॥
विद्या ज्ञानी ब्रह्म होय बैठे।
मन माया संग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥

हठ जोगी बहु कष्ट उठाते ।
जग को नए नए स्वांग दिखाय ॥ ५ ॥
मौनी जोगी जती सन्यासी ।
निज घर का कोइ भेद न गाय ॥ ६ ॥
और अनेक मते जग माहीं ।
परघट हुए समाज बनाय ॥ ७ ॥
करम धरम में भरम रहे सब ।
सत मत का कोइ खोज न पाय ॥ ८ ॥
इन सब से मन होय निरासा ।
संत मते का खोज लगाय ॥ ९ ॥
सतसंगी से मिला भाग से ।
उन मोहिं दीना पता बताय ॥१०॥
सत मत सोई संत मत कहिये ।
महिमा उसकी दई सुनाय ॥११॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
घट में उनका भेद जनाय ॥१२॥
प्रेम भक्ति सतगुरू की महिमा ।
सुरत शब्द की जुगत लखाय ॥१३॥

कर अभ्यास मिला घट आनंद।
तन मन दोनों शांत धराय ॥१४॥
राधास्वामी संगत में जाय मिलिया।
सतसंग कर लिया भाग जगाय ॥१५॥
संसय भरम हुए सब दूरा।
नई नई प्रीत प्रतीत जगाय ॥१६॥
प्रेम सहित नित जुगत कमाऊं।
सेवा कर लिया गुरू रिझाय ॥१७॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती।
नई नई लीला गुरू दिखाय ॥१८॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
मेहर से लीना काज बनाय ॥१९॥

बिनती और प्रार्थना का अंग

॥ शब्द ३१ ॥

सुरतिया विनय करत।
गुरु चरनन में कर जोड़ ॥ १ ॥

शब्द भेद मोहिं खोल सुनाओ।
धुन में लाग रहे चित मोर ॥ २ ॥
जगत भाव भय मन से टारो।
छूटे मोर और तोर ॥ ३ ॥
घट में जाय परम सुख पाऊं।
बाजे जहां नित अनहद घोर ॥ ४ ॥
दया करो मोहिं चरन लगाओ।
हे राधास्वामी बंदीछोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुरतिया चाह रही।
सतगुर से भक्ती दान ॥ १ ॥
उमंग अंग ले सन्मुख आई।
गुरु चरनन में सुरत लगान ॥ २ ॥
भेद पाय सुनती अनहद धुन।
गुरु सरूप का करती ध्यान ॥ ३ ॥
घट में देखत बिमल बिलासा।
शब्दगुरू का पाया ज्ञान ॥ ४ ॥

प्रेम डोर गह चढ़ी अधर में।
भंवरगुफा मुरली धुन गान ॥ ५ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पाया।
सत्त शब्द का मिला ठिकान ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारी।
होय गई अब अमन अमान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

सुरतिया याच रही।
गुरु चरन प्रेम की दात ॥ १ ॥
उमंग भरी गुरु सन्मुख आई।
दरशन कर हिये में हुलसात ॥ २ ॥
सुन सुन बचन मगन हुई मन में।
तोड़ा जग जीवन से नात ॥ ३ ॥
कृत संसारी अब नहिं भावे।
करम धरम पर मारी लात ॥ ४ ॥
गुरु संग प्रीत लगावत ऐसी।
जस बालक माता के साथ ॥ ५ ॥

बिन दरशन अब चैन न आवे ।
और कहीं मन लगे न लगात ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करत धर ध्याना ।
गुरु मूरत निज हिये बसात ॥ ७ ॥
छिन छिन घट में दरस निहारत ।
गुरु छबि देख चित्त मगनात ॥ ८ ॥
रसक रसक सुनती अनहद धुन ।
अमीं धार नित सुन से आत ॥ ९ ॥
मन और सूरत चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द पौड़ी दरसात ॥१०॥
अजब बिलास मिला अंतर में ।
उमंग उमंग गुरु के गुन गात ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
प्रेम सहित उन चरन समात ॥१२॥

॥ शब्द ३४ ॥

सुरतिया साज रही ।
गुरु आरत प्रेम सम्हार॥ १ ॥

बिरह भाव की थाली लाई ।
शब्द की जोत संवार ॥ २ ॥
उमंग जगाय चरन गुरू सेती ।
राधास्वामी नाम पुकार ॥ ३ ॥
बचन गुरू के हिये में गुनती ।
लख रही महिमां सार ॥ ४ ॥
अजब बिलास निरख घट माहीं ।
गावत गुन हर बार ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमां अकह अपारा ।
चरन सरन रही हिरदे धार ॥ ६ ॥
काल लगाई बहुतक लीकें ।
रोग दोख का किया पसार ॥ ७ ॥
मैं गुरू चरन पकड़ दृढ़ हिये में ।
रहूं राधास्वामी चरन अधार ॥ ८ ॥
मेहर करें काटें जंजाला ।
अपनी किरपा धार ॥ ९ ॥
नित प्रति बिनय करूं चरनन में ।
करो सहाय मेरी गुरू दातार ॥१०॥

दया धार मोहिं धीरज दीजे।
घट में रहूं नित दरस निहार ॥११॥
राधास्वामी गुरु किरपाल दयाला।
चरन लगाया मोहिं कर प्यार ॥१२॥

॥ शब्द ३५ ॥

सुरतिया सोच भरी।
गुरु चरनन करत पुकार ॥१॥
जगत जाल जंजाल लगाया।
नित्त करे मन उसकी कार ॥२॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे।
क्योंकर होवे जीव उबार ॥ ३ ॥
रोग दुक्ख मोहिं नित्त सतावें।
चिंता संग रहे मन बीमार ॥४॥
कैसी करूं कुछ बस नहिं चाले।
गुरु बिन कौन करे निरबार ॥५॥
राधास्वामी चरनन करूं पुकारा।
बेग लेव मोहिं अधम सुधार ॥ ६ ॥

मेहर दया से बिघन हटाओ।
मन के देव बिकार निकार ॥ ७ ॥
सतसंग करूं प्रेम से निस दिन।
भजन करूं मन सुरत सम्हार ॥ ८ ॥
मन और सुरत सिमट कर घट में।
चढ़ कर देखें बिमल बहार ॥ ९ ॥
मैं अति दीन निबल नाकारा।
सरन पड़ी अब सब बल हार ॥१०॥
मोपै मेहर दृष्टि अब कीजे।
सहज उतारो भौजल पार ॥११॥
राधास्वामी बिन कोइ और न सूझे।
राधास्वामी हैं मेरे कुल करतार ॥१२॥
बिनती सुनो दया कर प्यारे।
काज करो मेरा किरपा धार ॥१३॥
नित नित मैं गुन गाऊं तुम्हारे।
राधास्वामी २ रहूं पुकार ॥१४॥

॥ शब्द ३६ ॥

सुरतिया सेव करत ।
गुरु चरन हिये धर प्यार ॥ १ ॥
सतसंग करत कटे मन भरमा ।
देखी जग की किरत असार ॥ २ ॥
सतगुरु की महिमा मन मानी ।
गत मत शब्द अपार ॥ ३ ॥
बचन सुनत मन शांती आई ।
गुरु चरनन में जागा प्यार ॥ ४ ॥
दीन जान गुरु दिया उपदेशा ।
शब्द भेद निज सार ॥ ५ ॥
हित चित से अब करूं कमाई ।
मन और सुरत सम्हार ॥ ६ ॥
बिन किरपा कुछ काज न सरई ।
मेहर करी गुरु परम उदार ॥ ७ ॥
घेर फेर मन घट में लाओ ।
सुरत चढ़ाओ नौ के पार ॥ ८ ॥

घंटा संख सुनूं जाय नभ में ।
और लखूं वहां जोत उजार ॥ ९ ॥
बंकनाल धस निरखूं गुरु पद ।
सुनूं गरज संग धुन ओंकार ॥१०॥
सुन्न सिखर चढ़ महासुन्न लख ।
भंवरगुफा मुरली झनकार ॥११॥
सतपुर जाय सुनूं धुन बीना ।
दरस पुरुष का करूं सम्हार ॥१२॥
अलख अगम के लोक सिधारूं ।
सुनूं गुप्त धुन बानी सार ॥१३॥
आगे राधास्वामी चरन निहारूं ।
प्रेम सहित रहूं आरत धार ॥१४॥
मेहर दया राधास्वामी पाई ।
मगन होय बैठी सरन सम्हार ॥१५॥

॥ शब्द ३७ ॥

सुरतिया मचल रही ।
गुरु चरन पकड़ हठ नाल ॥ १ ॥

बिनती करत दोऊ कर जोड़ी ।
हे राधास्वामी परम दयाल ॥ २ ॥
मेहर करो अबही दिखलाओ ।
निज सरूप का दरस बिशाल ॥ ३ ॥
मन इंद्री बहु बिघन लगाते ।
काट देव उन का जंजाल ॥ ४ ॥
नाम खड़ग ले चढूं गगन पर ।
मारूं दल माया और काल ॥ ५ ॥
घंटा संख सुनूं धुन नभ में ।
देखूं सुंदर जोत जमाल ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय गोओं धुन पाऊं ।
चमक रहा जहां सूरज लाल ॥ ७ ॥
अधर जाय तिरबेनी न्हाऊं ।
सुनूं सुन्न में शब्द रसाल ॥ ८ ॥
महासुन्न होय पहुंच गुफा में ।
महाकाल का काटूं जाल ॥ ९ ॥
सतपुर जाय सुनूं धुन बीना ।
दरस पुरुष का पाऊं हाल ॥१०॥

अलख अगम का शब्द जगाऊं ।
गाऊं गुन सतगुरू दयाल ॥११॥
राधास्वामी चरन परस कर ।
करूं आरती होउं निहाल ॥१२॥
यह बिनती मेरी अब मानो ।
कीजे मेरी आप सम्हाल ॥१३॥
घट में दरस दिखा कर अपना ।
जल्दी मुझको लेव निकाल ॥१४॥
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाऊं ।
रहे नहीं कोइ और खयाल ॥१५॥
प्रेम सिंध में पहुंच दया से ।
पाऊं प्रेम रूप धन माल ॥१६॥
जो मांगा सो बख्शिश दीजे ।
राधास्वामी कीजे मेहर कमाल ॥१७॥

॥ शब्द ३८ ॥

सुरतिया मांग रही ।
सतगुरु से मेहर की दात ॥ १ ॥

दीन होय आई राधास्वामी चरना।
चित से सुनती गुरु मुख बात ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा।
समझ समझ हरखात ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत जगावत मन में।
चरन सरन पर हिया उमगात ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग की महिमा।
सुन सुन हियरे उमंग बढ़ात ॥ ५ ॥
नित अभ्यास नेम से करती।
मगन होत घट में धुन पात ॥ ६ ॥
माया काल पेच बहु डाले।
चिंता बैरन बिघन लगात ॥ ७ ॥
अनेक भांत की खटक हिये में।
सालत रहै दिन रात ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरनन करत पुकारा।
मेरा बल कुछ पेश न जात ॥ ९ ॥
अरज़ी करत बहुत दिन बीते।
अब तो धरो मेहर का हाथ ॥१०॥

कारज मेरे आप संवारी ।
दीन दयाल दया के साथ ॥११॥
तब मन निश्चल सुर्त होय निरमल ।
धुन रस और रूप रस पात ॥१२॥
हरख हरख फिर चढ़ें अधर में ।
होय करम की बाज़ी मात ॥१३॥
निरख जोत लख सूर प्रकाशा ।
चंद्र चांदनी चौक समात ॥१४॥
मुरली धुन और बीन बजावत ।
अलख अगम के चरन परात ॥१५॥
राधास्वामी धाम धाय धुन सुन सुन ।
अचरज रूप निरख मुसकात ॥१६॥
अभेद आरती राधास्वामी कीनी ।
मेहर पाय निज भाग सरात ॥१७॥
राधास्वामी महिमा अति से भारी ।
को बरने को करे विख्यात ॥१८॥
भूल चूक मेरी चित नहिं धारी ।
राधास्वामी दाता दया करात ॥१९॥

सेवा का अंग

॥ शब्द ३९ ॥

सुरतिया सेव करत ।
गुरु भक्तन की दिन रात ॥ १ ॥
सब का काम काज नित करती ।
आलस नेक न लात ॥ २ ॥
चाह संवार मेल नित करती ।
जैसे छीर शकर के साथ ॥ ३ ॥
छांट बचन सतगुरु के सारा ।
धर मन में हरखात ॥ ४ ॥
डोलत फिरत जपत गुरु नामा ।
रूप सोहावन हिये बसात ॥ ५ ॥
भजन नेम से करती घट में ।
शब्द सुनत मगनात ॥ ६ ॥
कुल परिवार संग ले अपने ।
राधास्वामी सरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सुरतिया खड़ी रहे।
नित सेवा में गुरु पास ॥ १ ॥
चरन दबावत पंखा फेरत।
धर मन में बिस्वास ॥ २ ॥
व्यंजन अनेक बनाय प्रीत से।
लावत गुरु के पास ॥ ३ ॥
जब सतगुरु ने भोग लगाया।
परशादी ले बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
अमी रूप जल लाय पिलावत।
सुख अमृत पी बुझत पियास ॥ ५ ॥
नाम गुरू हिरदे में धारा।
जपती स्वांसो स्वांस ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत।
निरख रही घट में परकाश ॥ ७ ॥
राधास्वामी आरत नित नित गाऊं।
दीन्हा मुझको चरन निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

सुरतिया फूल रही ।

सतगुर के दरशन पाय ॥ १ ॥

भाव भक्ति से पूजा करती ।

मत्था टेक चरन परसाय ॥ २ ॥

गंध सुगंध फूल की माला ।

सतगुर गल पहिनाय ॥ ३ ॥

अमृत रस जल भर के लाई ।

चरनामृत कर पियत अघाय ॥ ४ ॥

मुख अमृत बिनती कर लेती ।

उमंग सहित हिये प्यास बुझाय ॥ ५ ॥

व्यंजन अनेक प्रीत कर लाई ।

गुरु सनमुख धरे थाल भराय ॥ ६ ॥

प्रेम सहित गुरु आरत करती ।

दृष्टि से दृष्टि मिलाय ॥ ७ ॥

सतगुरु दया दृष्टि जब डारी ।

मगन होय रही उन गुन गाय ॥ ८ ॥

सब सतसंगी और सतसंगिन ।
दृष्टि जोड़ दरशन रस पाय ॥ ९ ॥
बटा परशाद हरख हुआ भारी ।
सब मिल गुरु परशादी पाय ॥१०॥
कभी कभी अस औसर भल पावत ।
सब मिल राधास्वामी चरन धियाय ॥११॥

॥ शब्द ४२ ॥

सुरतिया ध्यान धरत ।
गुरु रूप चित्त में लाय ॥ १ ॥
सेवा करत मानसी गुरु की ।
मन में नित नया भाव जगाय ॥ २ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
बटना मल अशनान कराय ॥ ३ ॥
वस्तर भाव प्रीत पहिना कर ।
चंदन केसर तिलक लगाय ॥ ४ ॥
पलंग बिछाय बिठावत गुरु को ।
उमंग उमंग उन आरत गाय ॥ ५ ॥

ताक नैन गुरु दरशन करती ।
दृष्टि समेट मद्ध तिल लाय ॥ ६ ॥
हरखत मन अस जुगत सम्हारत ।
सुनत शब्द अति आनंद पाय ॥ ७ ॥
कोइ दिन अस मन चित ठहरावत ।
सहज सरूप और धुन रस पाय ॥ ८ ॥
नित प्रति भजन ध्यान अस करती ।
सुरत चढ़ी अब घट में धाय ॥ ९ ॥
शब्द शब्द धुन सुनत अधर में ।
राधास्वामी चरनन पहुंची जाय ॥१०॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई ।
तब अस कारज लिया बनाय ॥११॥

॥ शब्द ४३ ॥

सुरतिया टहल करत ।
सतसंग में धर कर भाव ॥ १ ॥
प्रेमी जन की दया पाय कर ।
दिन दिन बाढ़त चाव ॥ २ ॥

मन मलीन फिर फिर भरमावत।
दया मेहर से खावत ताव ॥ ३ ॥
रूखा फीका होय सेवा में।
फिर फिर मनही मन पछताव ॥ ४ ॥
बहु बिध समझौती ले घट में।
आलस तज नया चाव बढ़ाव ॥ ५ ॥
आस बास धारी गुरु चरना।
अब कभी नहिं मन जाय भुलाव ॥ ६ ॥
छोड़ कपट सच्चा होय बरते।
संसै भरम न चित्त समाव ॥ ७ ॥
दया होय मुझ पर अब ऐसी।
माया संग नहिं जाय लुभाव ॥ ८ ॥
सतसंग बचन सुनूं चित देकर।
ध्यान भजन में कुछ रस पाव ॥ ९ ॥
मौज अनुसार चलै फिर सीधा।
जग का भाव न चित्त समाव ॥१०॥
राधास्वामी दीन दयाल मेहर से।
चरनन में मोहिं नित्त लगाव ॥११॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४४ ॥

सुरतिया निडर हुई।
राधास्वामी सरन सम्हार ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत चरन में लाई।
धर हिरदे में प्यार ॥ २ ॥
चरन ओट गह खेलत जग में।
सुमिर सुमिर गुरु नाम दयार ॥ ३ ॥
लीला देख हरखती मन में।
गुरु दरशन की निरख बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसाये।
घट में करती सहज दीदार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुरतिया रीझ रही।
गुरु अचरज दरस निहार ॥ १ ॥

दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सुन गुरु बचन फूल रही तन में ।
शब्द की लीनी जुगती सार ॥ ३ ॥
भजन करत परतीत बढ़ावत ।
ध्यान धरत हिये बाढ़ा प्यार ॥ ४ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती ।
गुरु सरूप रस मन सरशार ॥ ५ ॥
बिरह जगावत प्रेम बढ़ावत ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी ।
सहज लिया मोहिं अधम उबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

सुरतिया बांह गही ।
सतगुरु की सब बल त्याग ॥ १ ॥
मान बड़ाई जगत बासना ।
तज गुरु चरनन लाग ॥ २ ॥

भेद पाय निज नाम सम्हाला ।
सुमिर सुमिर रही जाग ॥ ३ ॥
भजन करत निस दिन रस पावत ।
सुनत रागनी और धुन राग ॥ ४ ॥
करम धरम से नाता टूटा ।
छोड़ दई अब माया आग ॥ ५ ॥
त्रिकुटी होय सुन्न में पहुंची ।
छूट गई संगत मन काग ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सम्हारे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

सुरतिया ओट गही ।
सतगुरु की धर परतीत ॥ १ ॥
करम भरम तज सरन लई अब ।
छोड़ी जग की चाल अनीत ॥ २ ॥
सतसंग करत भाव नया जागत ।
दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥ ३ ॥

कर अभ्यास सुरत मन मांजत ।
दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतीत ॥ ४ ॥
धुन रस पाय हरखती मन में ।
रही सरावत भाग अजीत ॥ ५ ॥
जग परमारथ देख असारा ।
धार लई गुरु भक्ती रीत ॥ ६ ॥
संत मते की महिमा जानी ।
गाय रही नित राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

सुरतिया दीन दिल ।
आज आई सरन गुरु धाय ॥ १ ॥
परमारथ की अति कर प्यासी ।
बचन सुनत रस पाय ॥ २ ॥
भर भर प्रेम करत गुरु दरशन ।
सेवा करत हिया उमगाय ॥ ३ ॥
सतसंग कर नित प्रीत बढ़ावत ।
गुरु चरनन संग रहे लिपटाय ॥ ४ ॥

सुमिरन ध्यान भजन नित करती ।
प्रीत सहित गुरु बचन कमाय ॥ ५ ॥
दिन दिन आनंद बढ़त हिये में ।
उमंग उमंग नई प्रीत जगाय ॥ ६ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझावत ।
दिन दिन होत मेहर अधिकाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुरतिया भाव सहित ।
नित गुरु का भोग बनाय ॥ १ ॥
उमंग सहित नित थाल सजावत ।
नये नये ब्यंजन लाय ॥ २ ॥
भोजन अधिक रसीले लागें ।
नित प्रति स्वाद अधिकाय ॥ ३ ॥
गुरु सतसंगी सब मिल पावत ।
मन में अधिक हरखाय ॥ ४ ॥
अस अस भाव और प्यार निहारत ।
भक्ति दान दिया दया उमगाय ॥ ५ ॥

प्रीत प्रतीत चरन में बढ़ती ।
मन और सुरत नाम धुन गाय ॥ ६ ॥
नाम जपत अब होत सफ़ाई ।
शब्द भेद दिया गुरु समझाय ॥ ७ ॥
भजन और ध्यान करत नित घट में ।
अंतर शब्द प्रकाश दिखाय ॥ ८ ॥
मगन होय अब धुन रस पावत ।
चरन सरन रही हिये बसाय ॥ ९ ॥
राधास्वामी गुरु अब हुए दयाला ।
मेहर से दीना काज बनाय ॥१०॥

॥ शब्द ५० ॥

सुरतिया रटत रही ।
पिया प्यारा नाम सही ॥ १ ॥
उमंग भरी सतसंग में आई ।
मान लाज दोउ त्याग दई ॥ २ ॥
समझ बूझ गुरु बचन सम्हारे ।
गुरु चरनन की टेक गही ॥ ३ ॥

सार भेद ले करत कमाई ।
शब्द अमीरस चाख रही ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में किया बिस्वासा ।
दिन दिन जागत प्रीत नई ॥ ५ ॥
गुरु दरशन अस प्यारा लागे ।
जस माता को पुत्र कही ॥ ६ ॥
बिन दरशन ब्याकुल रहे तन में ।
दरस पाय जब मगन भई ॥ ७ ॥
ऐसी लगन देख गुरु प्यारे ।
निज चरनन की सरन दई ॥ ८ ॥
सरन पाय अब हुई अचिंती ।
दिन दिन प्रेम जगाय रही ॥ ९ ॥
गुरु परताप सुरत अब चेती ।
शब्द संग चढ़ अधर गई ॥१०॥
राधास्वामी चरनन जाय मिली अब ।
महिमा उसकी कौन कही ॥११॥

॥ शब्द ५१ ॥

सुरतिया सरन गही ।
लख राधास्वामी गत भारी ॥ १ ॥
भाग जगे गुरु सतसंग पाया ।
बचन अमोल चित्त धारी ॥ २ ॥
गुरु का रूप बसाय हिये में ।
निरख रही घट उजियारी ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब दिन दिन ।
भींज गई गुरु रंग सारी ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
त्याग दिया जग ब्योहारी ॥ ५ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ावत ।
सुन रही अनहद झनकारी ॥ ६ ॥
लख गुरु मेहर हरख हिये अंतर ।
चरनन पर तन मन वारी ॥ ७ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
होय गई मैं पिया प्यारी ॥ ८ ॥

राधास्वामी दया सहसदल पाया ।
सुनी अधर धुन ओंकारी ॥ ९ ॥
चंद्र मंडल लख भंवरगुफा चढ़ ।
सुनी बीन धुन निज सारी ॥१०॥
अलख अगम की मेहर पाय कर ।
धाम अनामी पग धारी ॥११॥
अचरज रूप निरख हुलसानी ।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥१२॥

॥ शब्द ५२ ॥

सुरतिया सरन पड़ी ।
गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
दरशन कर हिये में मगनानी ।
जस बालक माता संग प्यार ॥ २ ॥
आस भरोस धरा चरनन में ।
जियत रहूं गुरु चरन अधार ॥ ३ ॥
बिन गुरु चरन रहे ब्याकुल मन ।
पियत रहूं चरनन रस सार ॥ ४ ॥

अद्‌भुत छबि गुरू की मन भाई ।
निरखत रहूं दरस गुरू सार ॥ ५ ॥
तोड़ दिये अब सब बल मन के ।
धार रही गुरू टेक सम्हार ॥ ६ ॥
सेवा करत फूलती तन में ।
हाज़िर रहूं नित गुरू दरबार ॥ ७ ॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी ।
त्याग दिये सब जान लबार ॥ ८ ॥
गुरू की दया धार हिये छिन छिन ।
जीत लिया दल माया नार ॥ ९ ॥
परमारथ स्वारथ कारज में ।
मौज गुरू की रहूं सम्हार ॥१०॥
सुक्ख दुःख जब मौज से व्यापें ।
शुकर करूं रहूं गुरू को धार ॥११॥
बिना मौज गुरू कुछ नहिं होई ।
गुरूही हैं मेरे कुल करतार ॥१२॥
अचरज खेल देख अब घट में ।
त्याग दिया जग काल पसार ॥१३॥

उमंग उमंग स्रुत चढ़त अधर में ।
निरख रही कंवलन फुलवार ॥१४॥
राधास्वामी सतगुर प्यारे ।
छिन छिन रहूं उन शुकरगुज़ार ॥१५॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द ५३ ॥

सुरतिया चुप्प रही ।
देख अचरज लीला सार ॥ १ ॥
प्रीत सहित गुरु के ढिंग आती ।
दरशन करत सम्हार ॥ २ ॥
आरत कर निज भाग जगाती ।
प्रेम भक्ति का थाल संवार ॥ ३ ॥
सीत प्रशाद उमंग कर लेती ।
करम भरम का भार उतार ॥ ४ ॥
मेहर दया राधास्वामी की पाई ।
होय गई उन सरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

सुरतिया खिलत रही ।
गुरु अचरज दरशन पाय ॥ १ ॥
गुरु छबि अजब नैन भर देखत ।
बाढ़ा आनंद हिये न समाय ॥ २ ॥
धुन झनकार अधर से आवत ।
अमींधार चहुं दिस बरखाय ॥ ३ ॥
नूर हिये में अद्भुत जागा ।
सोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर की भारी ।
अस लीला दई मोहिं दरसाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरतिया देख रही ।
सतगुरु का मोहन रूप ॥ १ ॥
सुरत शब्द की महिमां सुन सुन ।
धारी जुगत अनूप ॥ २ ॥

शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
छोड़ दिया भौ कूप ॥ ३ ॥
काल देस के परे सिधारी ।
छोड़ी छांह और धूप ॥ ४ ॥
राधास्वामी दरस निहारा ।
जहां रेखा नहिं रूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

सुरतिया फड़क रही ।
सुन सतगुरु बानी सार ॥ १ ॥
राग रागिनी धुन संग गावत ।
जागत प्रेम पियार ॥ २ ॥
घट में नित प्रति करती फेरा ।
लीला अजब निहार ॥ ३ ॥
गुरु पद परस चढ़ी ऊंचे को ।
सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
हुई उन पर बलिहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सुरतिया केल करत ।
घट शब्द धुनन के संग ॥ १ ॥
अधर चढ़त सुत हुई मतवाली ।
भींज रही रस रंग ॥ २ ॥
हंसन संग करत नित केला ।
छोड़ा जगत कुरंग ॥ ३ ॥
घट में पाया बिमल बिलासा ।
रहे नित गुरु के संग ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन परस मगनानी ।
प्रीत बसी अंग अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

सुरतिया चाख रही ।
घट शब्द अमीं रस सार ॥ १ ॥
सतगुरु दया निरख रही नभ में ।
झिलमिल जोत उजार ॥ २ ॥

देख गगन में सूर प्रकाशा।
चंद्र चांदनी दसवें द्वार ॥ ३ ॥
भंवरगुफा सोहंग धुन पाई।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम अनूपा।
निरखा अचरज रूप अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

सुरतिया सज धज से आई।
चलन को सतगुर देस ॥ १ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत।
तज दिया माया लेस ॥ २ ॥
सुरत शब्द गह चढ़ती सुन में।
धारा हंसा भेस ॥ ३ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख।
जहां न काल कलेश ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन जाय कर परसे।
पाया पूरन रेश ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६० ॥

सुरतिया लाय रही।
गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥
उमंग सहित नित दरशन करती।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
भाव संग परशादी लेती।
पियत चरन रस सार ॥ ३ ॥
व्यंजन अनेक थाल भर लाई।
आरत गावत सन्मुख ठाढ़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करी अंतर में।
निरखा घट उजियार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

सुरतिया गाय रही।
राधास्वामी नाम अपार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥

लीला देख हरखती मन में ।
गुरु परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
मगन होत सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मगन होय कर ।
दीना चरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

सुरतिया परस रही ।
राधास्वामी चरन अनूप ॥ १ ॥
बिरह अंग ले सन्मुख आई ।
मगन हुई लख अचरज रूप ॥ २ ॥
करम जलावत भाग सरावत ।
त्याग दिया अब भौजल कूप ॥ ३ ॥
अधर चढ़त स्रुत गगन सिधारी ।
लखा जाय तिर्लोकी भूप ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर धर ध्याना ।
निरख रही घट बिमल सरूप ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

सुरतिया दमक रही ।
चढ़ घट में नभ के द्वार ॥ १ ॥
जोत उजार छिटक रहा सुन्न में ।
घंटा संख धूम अति डार ॥ २ ॥
सूरज चांद अनेकन देखे ।
फूल रही अद्भुत फुलवार ॥ ३ ॥
आगे चढ़ पहुंची गगनापुर ।
उठत नाद जहां बानी सार ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में ।
राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

सुरतिया धार रही ।
गुरु आरत प्रेम जगाय ॥ १ ॥
वस्तर भूखन बहु पहिनानी ।
नई नई सोभा देख हरखाय ॥ २ ॥

अनहद धुन घट घोर मचाया ।
घंटा संख मृदंग बजाय ॥ ३ ॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।
नाचें गावें उमंग बढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम घटा घट उमड़त आई ।
अमीं धार चहुंदिस बरखाय ॥ ५ ॥
नूर पुरुष का घट में जागा ।
कोट सूर और चन्द्र लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब सब पर ।
चरन सरन दे लिया अपनाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

सुरतिया निरख रही ।
घट अंतर शब्द प्रकाश ॥ १ ॥
चित रहै दीन लीन गुरु चरनन ।
जग संग रहत उदास ॥ २ ॥
गुरु की दया परख कर मन में ।
गावत गुन निस बास ॥ ३ ॥

गुरु की मूरत हिये बसाई ।
निस दिन रहे गुरु पास ॥ ४ ॥
मन और सुरत जमावत तिल में ।
धावत अधर अकास ॥ ५ ॥
जोत रूप लख चढ़त गगन पर ।
सुन्न में पाया अगम निवास ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करी अब मुझ पर ।
घट में दीना परम बिलास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

सुरतिया हरख रही ।
आज गुरु छवि देख नई ॥ १ ॥
ज़ेवर कपड़े लाय अनेका ।
कर सिंगार रही ॥ २ ॥
मसनद तकिया लाय पलंग पर ।
गुरु को बिठाय दई ॥ ३ ॥
मोतियन की अब लड़ियां पोह कर ।
थाल सजाय लई ॥ ४ ॥

फूलन के गल हार पहिना कर ।
गुरु के चरन पई ॥ ५ ॥
ले थाली गुरु आरत गावत ।
चहुं दिस हरख अनंद मई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर ।
दीना नाम सही ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

सुरतिया ध्याय रही ।
हिये में गुरु रूप बसाय ॥ १ ॥
दृष्टि जोड़ कर धरती ध्याना ।
मन में प्रेम जगाय ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट नभ द्वारे ।
तन से रही अलगाय ॥ ३ ॥
आनंद अधिक पाय अब दिन २ ।
गुरु चरनन में रही लिपटाय ॥ ४ ॥
धुन की धार अधर से आवत ।
पी पी रस हरखाय ॥ ५ ॥

निरखत घट में बिमल प्रकाशा ।
सूर चांद जहां रहे लजाय ॥ ६ ॥
छिन छिन राधास्वामी के गुन गावत ।
चरन ओट ले सरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

सुरतिया खेल रही ।
गुरु चरनन पास ॥ १ ॥
हरख हरख करती गुरु दरशन ।
देखत नित्त बिलास ॥ २ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
बाढ़त नित्त हुलास ॥ ३ ॥
सेवा करत उमंग कर गुरु की ।
धर हिरदे बिस्वास ॥ ४ ॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
देखा घट परकाश ॥ ५ ॥
उमंग २ करती गुरु ध्याना ।
सुनती घट में अमर अवास ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह बैठी ।
सब से होय उदास ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

सुरतिया सील भरी ।
आज करत गुरू संग हेत ॥ १ ॥
जग ब्योहार त्याग दिया मन से ।
सुनत बचन गुरु चेत ॥ २ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
भजन ध्यान रस लेत ॥ ३ ॥
बिरह भाव बैराग सम्हारत ।
मन माया को डाला रेत ॥ ४ ॥
गुरु किरपा तज श्याम धाम को ।
सुरत लगाय रही पद सेत ॥ ५ ॥
सो पद दिया मेहर से गुरु ने ।
बेद पुकार रहा तिस नेत ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीन अधीन निरख मोहिं ।
चरनन रस अब छिन २ देत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७० ॥

सुरतिया मांग रही ।
सतगुरु से अचल सुहाग ॥ १ ॥
दया धार सतगुरु मोहिं भेंटे ।
जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ २ ॥
गहिरी प्रीत लगी उन चरनन ।
जगत मोह टूटा ज्यों ताग ॥ ३ ॥
निज घर का मोहिं भेद सुनाया ।
सुरत उठी अब धुन संग जाग ॥ ४ ॥
उमंग अंग ले चढ़त अधर में ।
छूटा मन का द्वेष और राग ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन पहुंची दस द्वारे ।
काल देस अब दीना त्याग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया गई निज घर में ।
बैठ रही उन चरनन लाग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

सुरतिया प्यार करत ।
सतगुरु से हिये धर भाव ॥ १ ॥
जगत प्रीत तज तन मन वारत ।
अस न मिलै फिर दाव ॥ २ ॥
भेद पाय स्रुत अधर चढ़ावत ।
निरख उजार बढ़त घट चाव ॥ ३ ॥
सतगुरु चरन प्रेम नया जागा ।
सहती बिरहा ताव ॥ ४ ॥
करम धरम सब छोड़े छिन में ।
माया काल दोउ हट जाव ॥ ५ ॥
सुनत नाद चाली गगनापुर ।
वहां से सूरत अधर लगाव ॥ ६ ॥
सत्त शब्द से जाय मिली अब ।
आगे राधास्वामी चरन समाव ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

सुरतिया प्रेम सहित ।
अब करती गुरु सतसंग ॥ १ ॥
बाली भोली सरना आई ।
धार ग़रीबी अंग ॥ २ ॥
राधास्वामी नाम सुमिरती हित से ।
मन की रोक तरंग ॥ ३ ॥
सतसंग बचन धारती हिये में ।
होवत संसय भंग ॥ ४ ॥
ध्यान धरत निरखत परकाशा ।
धारा रंग बिरंग ॥ ५ ॥
दिन दिन घट में होत सफ़ाई ।
छूटे सबही कुरंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से अपनी ।
मोहिं सिखाया भक्ती ढंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

सुरतिया सींच रही ।
गुरु चरन प्रीत फुलवार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती ।
उमंग २ धर प्यार ॥ २ ॥
सतसंग बचन सम्हारत मन में ।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सार धार नित करती करनी ।
रहनी सुमत सुधार ॥ ४ ॥
चरन गुरू अब दृढ़ कर पकड़े ।
हिरदे सरन सम्हार ॥ ५ ॥
मन और सुरत लगे घट अंतर ।
सुन सुन धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ाई ।
पहुंच गई सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

सुरतिया पूज रही।
गुरु चरन बिरह धर चीत ॥ १ ॥
समझ बूझ सतसंग के बचना।
धारी भक्ती रीत ॥ २ ॥
जग जीवन की परख पिरीती।
गुरु को माना सच्चा मीत ॥ ३ ॥
निरख परख सतगुरु की लीला।
धरी हिरदे परतीत ॥ ४ ॥
नित २ घट में प्यार बढ़ावत।
गुरु भक्तन संग लेती सीत ॥ ५ ॥
जग जीवन से मेल न रखती।
सतसंगियन से करती प्रीत ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करत अब घट में।
बूझी सतसंग नीत ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया मांगती हर दम।
देव मिटाय सकल भ्रम भीत ॥ ८ ॥

राधास्वामी आरत करत प्रेम से।
जाऊं निज घर भौजल जीत ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

सुरतिया प्रीत करत।
सतगुरु से भाव जगाय ॥ १ ॥
हित चित से गुरु दरशन करती।
बचन सुनत मन लाय ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन।
गुरु सरूप रही हिये बसाय ॥ ३ ॥
सतसंगियन से हेल मेल कर।
गुरु सेवा को हित से धाय ॥ ४ ॥
आरत करत प्रेम से पूरी।
गुरु छबि देख अधिक हुलसाय ॥ ५ ॥
दया मेहर सतगुरु की परखत।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत।
गगन मंडल में पहुंची धाय ॥ ७ ॥

सत्त पुरुष के चरन परस के ।
राधास्वामी लिये मनाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

सुरतिया मेल करत ।
गुरु भक्तन से धर प्यार ॥ १ ॥
मदद लेय उन सब की मिल कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना ।
मांगे शब्द का भेद अपार ॥ ३ ॥
लख अनुराग गुरू दातारा ।
नाम भेद दिया सब का सार ॥ ४ ॥
मेहर करी गुरु लिया अपनाई ।
निरखा घट में शब्द उजार ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन सुत चढ़ी अधर में ।
घंटा सुन गई नौ के पार ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई ।
सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥ ७ ॥

राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में ।
अलख अगम के हो गई पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

सुरतिया आन पड़ी ।
सतसंग में तज घर बार ॥ १ ॥
सतसंगियन से हिल मिल चालत ।
गुरु से बढ़ावत दिन दिन प्यार ॥ २ ॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
छोड़े जग के भोग असार ॥ ३ ॥
भेद पाय धर गुरु परतीती ।
निस दिन करत अभ्यास सम्हार ॥ ४ ॥
मन और सुरत चढ़ावत घट में ।
पकड़ शब्द की धार ॥ ५ ॥
कथनी बदनी त्याग दीन चित ।
रहनी रहत भक्त अनुसार ॥ ६ ॥
नित नई दया परख सतगुरु की ।
देखत घट में बिमल बहार ॥ ७ ॥

हंस रूप होय अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन मिला आधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७८ ॥

सुरतिया धोय रही ।
अब चूनर मैल भरी ॥ १ ॥
भाव भरी सतसंग में आई ।
गुरु चरनन सुत जोड़ धरी ॥ २ ॥
बचन सुनत अनुराग बढ़ावत ।
सेवा को नित रहत खड़ी ॥ ३ ॥
गुरु की दया मैल मन धोवत ।
निरमल होय भव सिंध तरी ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत लगावत ।
चढ़ पहुंची पद परस हरी ॥ ५ ॥
गगन जाय परसे गुरु चरना ।
दसम द्वार गई होय छड़ी ॥ ६ ॥
सतगुरु दरस मिला सतपुर में ।
सुफल हुई अब देह नरी ॥ ७ ॥

अलख अगम की फिर सुध लेकर ।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७९ ॥

सुरतिया निरत करत ।
गुरु सन्मुख कर सिंगार ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत का ज़ेवर पहिना ।
भाव भक्ति के बस्तर धार ॥ २ ॥
अधर चढ़त धुन सुन स्रुत प्यारी ।
मस्त हुई सुन सारंग सार ॥ ३ ॥
हंस हंसनी संग जुड़ मिल कर ।
नाचत गावत उमंग सम्हार ॥ ४ ॥
अजब समा अचरज यह औसर ।
आनंद बरस रहा दस द्वार ॥ ५ ॥
बिना भाग बिन राधास्वामी किरपा ।
कौन लखे यह बिमल बहार ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
बीन बजे सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

सब धज के सुत अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन मिले निज सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८० ॥

सुरतिया भाग भरी ।
आज गुरु दरशन रस लेत ॥ १ ॥
जगत राग तज भाव हिये धर ।
गुरु संग करती हेत ॥ २ ॥
सतगुरु बचन अधिक मन भाये ।
सुनती चित से चेत ॥ ३ ॥
उमंग उमंग कर तन मन धन को ।
वार चरन पर देत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु जुगत कमाती ।
डारत मन को रेत ॥ ५ ॥
चित में धर बिस्वास गुरू का ।
जीत काल से खेत ॥ ६ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
तजत श्याम पहुंची पद सेत ॥ ७ ॥

सब मत के सिद्धांत अस्थाना ।
रह गये नीचे ब्रह्म समेत ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सम्हारत ।
पाय गई घर अद्भुत नेत ॥ ९ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

सुरतिया अभय हुई ।
घट में गुरु दरशन पाय ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन ।
सुरत शब्द की जुगत कमाय ॥ २ ॥
चढ़त अधर पहुंची नभपुर में ।
धुन घंटा और संख सुनाय ॥ ३ ॥
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीना ।
अनहद धुन मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
गुरु सरूप के दरशन कीने ।
माया काल रहे मुरझाय ॥ ५ ॥
कंवलन की फुलवार खिलानी ।
सूरज चांद अनेक दिखाय ॥ ६ ॥

ऊपर चढ़ पहुंची दस द्वारे।
हंसन संग मिली अब आय ॥ ७ ॥
तीन लोक के हो गई पारा।
निरभय हुई सुन धुन रस पाय ॥ ८ ॥
दया मेहर से यह पद पाया।
राधास्वामी लीना मोहिं अपनाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ८२ ॥

सुरतिया छान रही।
अब गुरु मत कर सतसंग ॥ १ ॥
बचन सुनत नित करत बिचारा।
होवत संशय भंग ॥ २ ॥
भेद समझ नित करत कमाई।
जोड़ सुरत धुन संग ॥ ३ ॥
जो कुछ बचन कहे संतन ने।
घट में परख रही अंग अंग ॥ ४ ॥
शब्द बिलास निरख हिये अंतर।
धारा सत गुरु रंग ॥ ५ ॥

प्रेम बढ़त दिन दिन गुरु चरना ।
मन इच्छा हुए सहज अपंग ॥ ६ ॥
सुरत हुई अब धुन रस माती ।
चढ़त अधर जस चंग ॥ ७ ॥
सहस कंवल होय त्रिकुटी धाई ।
सुन्न गई तज काल कुरंग ॥ ८ ॥
भंवरगुफा का लखा उजाला
सतपुर पहुंची होय निहंग ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया गई धुर धामा ।
धारा अद्भुत सहज सुरंग ॥१०॥

॥ शब्द ८३ ॥

सुरतिया भजन करत ।
हुई घट में आज निहाल ॥ १ ॥
सतगुरु बचन धार हिये अंतर ।
सुनत शब्द धुन सुरत सम्हाल ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत गुरू चरनन में ।
नित्त बढ़ावत होय खुश हाल ॥ ३ ॥

जगत फिरत से हुई उदासा ।
छिन छिन सुमिरत गुरू दयाल ॥ ४ ॥
उमंग उमंग गुरु सतसंग चाहत ।
तोड़ फोड़ सब माया जाल ॥ ५ ॥
बिघन लगाय काल उलझावत ।
काम क्रोध की डारत पाल ॥ ६ ॥
मैं राधास्वामी बल हिये धर अपने ।
मन इच्छा को मारूं हाल ॥ ७ ॥
मेहर बिना कुछ बन नहिं आवे ।
दया करो राधास्वामी कृपाल ॥ ८ ॥
करम काट सुत अधर चढ़ाओ ।
दूर करो यह सब जंजाल ॥ ९ ॥
दीन होय तुम सरना आई ।
राधास्वामी करो मेरी प्रतिपाल ॥१०॥

॥ शब्द ८४ ॥

सुरतिया मान रही ।
गुरू बचन सम्हार सम्हार ॥ १ ॥

सतसंग करत नित्त हित चित से ।
चुन चुन बचन हिरदे में धार ॥ २ ॥
सेवा करत उमंग से निस दिन ।
गुरु सतसंगियन से धर प्यार ॥ ३ ॥
ले उपदेश गुरू से सारा ।
सुमिरन नाम करत आधार ॥ ४ ॥
ध्यान धरत घट निरख उजारी ।
मगन होत सुन धुन झनकार ॥ ५ ॥
परचा पाय घट बढ़त उमंगा ।
गुरु चरनन धरा तन मन वार ॥ ६ ॥
प्रीत प्रतीत एकाय हिये में ।
सरन गही अब आपा डार ॥ ७ ॥
नित प्रति सुरत अधर में चढ़ती ।
सहसकंवल त्रिकुटी दस द्वार ॥ ८ ॥
भंवरगुफा सतलोक निहारत ।
अलख अगम के पहुंची पार ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनाया ।
छिन छिन चरनन पर बलिहार ॥१०॥

॥ शब्द ८५ ॥

सुरतिया लीन हुई।
चरनन में रूप निहार ॥ १ ॥
महिमा सुन सतसंग में आई।
बचन सुने अनुराग सम्हार ॥ २ ॥
जगत बासना त्यागी छिन में।
भोग दिये तज जान बिकार ॥ ३ ॥
मोह जाल का फंदा काटा।
करम धरम का भार उतार ॥ ४ ॥
प्रीत करत अब गुरु संग पूरी।
हिये दृढ़ निश्चय धार ॥ ५ ॥
निज कर सरन गही सतगुरु की।
राधास्वामी चरन बढ़ावत प्यार ॥ ६ ॥
ले उपदेश चलत अब घट में।
पकड़ शब्द की धार ॥ ७ ॥
जोत निरख पहुंची गगनापुर।
चंद्र रूप लख गुफा उजार ॥ ८ ॥

सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥ ९ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाती।
छिन छिन पियत अमीरस सार ॥१०॥

॥ शब्द ८६ ॥

सुरतिया धीर धरत।
नित करनी करत सम्हार ॥ १ ॥
बिरह अनुराग धार घट अंतर।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सुन उपदेश मगन हुई मन में।
नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥
घट का भेद समझ सतगुरु से।
सुरत लगावत धुन की लार ॥ ४ ॥
सुमिरन कर घट होत सफ़ाई।
ध्यान लाय गुरु रूप निहार ॥ ५ ॥
नित प्रति घट में बढ़त उजारी।
शब्द मचावत अधिक पुकार ॥ ६ ॥

धीरज धर नित करत कमाई ।
प्रेम जगावत बिरह सम्हार ॥ ७ ॥
घंटा संख सुनी धुन मिरदंग ।
सारंगी सुनी मुरली सार ॥ ८ ॥
सुन धुन बीन हुई मस्तानी ।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ९ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
पहुंच गई अब निज घरबार ॥१०॥

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया उमंग भरी ।
आज लाई आरती साज ॥ १ ॥
घंटा संख बजी धुन नभपुर ।
गगन सुनाई मिरदंग गाज ॥ २ ॥
भाव बढ़ा सतगुरु चरनन में ।
उन दिया भक्ति का दाज ॥ ३ ॥
मेहर हुई कल मल सब नाशे ।
छोड़ दिया मन कपटी पाज ॥ ४ ॥

त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया ।
तीन लोक का मिल गया राज ॥ ५ ॥
मन माया से नाता टूटा ।
काल करम का छूटा बाज ॥ ६ ॥
सुन में जाय मानसर न्हाई ।
हो गई सूरत निरमल आज ॥ ७ ॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई ।
मुरली बीन रही जहां बाज ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
आज किया मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥
क्या मुख ले उन महिमां गाऊं ।
कहत कहत मोहिं आवे लाज ॥१०॥

॥ शब्द ८८ ॥

सुरतिया परख रही ।
घट में गुरु दया अपार ॥ १ ॥
निपट अजान चरन में आई ।
गुरु कीना मुझ से प्यार ॥ २ ॥

बालक सम गुरु मोहिं निहारा ।
चरन ओट दे लिया सम्हार ॥ ३ ॥
किरपा कर मोहिं जुगत बताई ।
शब्द भेद दिया सब का सार ॥ ४ ॥
समझ बूझ मोहिं आपहि दीनी ।
संसय भरम दिये सब टार ॥ ५ ॥
प्रेम सहित गुरु बानी गाऊं ।
राधास्वामी नाम जपूं हरबार ॥ ६ ॥
प्रेमी जन की सेवा करती ।
धर गुरु चरनन भाव और प्यार ॥ ७ ॥
सतसंग बचन उमंग से सुनती ।
धरती मन में कर बीचार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भरोसा भारी ।
धार रही परतीत सम्हार ॥ ९ ॥
सब विधि काज सवारें मेरा ।
राधास्वामी अपनी ओर निहार ॥१०॥
राधास्वामी परम दयाल कृपानिधि ।
अपनी दया से लिया मोहिं उबार ॥११॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया निरख रही।
घट माहिं रूप गुरु मन भावन ॥ १ ॥
जनम जनम के पातक नासे।
लग गुरु चरन हुई पावन ॥ २ ॥
सतसंगत में अति हुलसानी।
दूर हुई मन की धावन ॥ ३ ॥
सार भेद गुरु दिया बताई।
मेट दई जग की भावन ॥ ४ ॥
करम कटाये भरम नसाये।
या जग में अब नहिं आवन ॥ ५ ॥
गुरु परतीत बढ़ी हिये अंतर।
नित नई प्रीत चरन लावन ॥ ६ ॥
मन और सुरत जोड़ चरनन में।
धुन रस पाय अधर जावन ॥ ७ ॥
सहसकंवल होय त्रिकुटी धावत।
जहां वहां गुरु पद दरसावन ॥ ८ ॥

मन का संग तज चढ़ी अधर में ।
सुन में जा बेनी न्हावन ॥ ९ ॥
मुरली धुन सुन सतपुर आई ।
लगी सतगुरु के गुन गावन ॥१०॥
चरन सरन राधास्वामी पाई ।
अजर अमर घर सुख पावन ॥११॥

॥ शब्द ९० ॥

सुरतिया प्रीत भरी ।
अब लाई आरती जोड़ ॥ १ ॥
दीन अधीन चित्त ले थाली ।
जोत जगाई मन को मोड़ ॥ २ ॥
प्रेम भरी गुरु आरत गाती ।
शब्द किया अब घट में शोर ॥ ३ ॥
घंटा संख बजी धुन नभ में ।
मिरदंग गाजी और घन घोर ॥ ४ ॥
आनंद अधिक हुआ अब मन में ।
दूर हुआ सब मोर और तोर ॥ ५ ॥

झंकार धुन सुनी चढ़ सुन में ।
घट गया काल करम का ज़ोर ॥ ६ ॥
भंवरगुफा मुरली धुन पाई ।
रैन गई अब हो गया भोर ॥ ७ ॥
वहां से भी फिर आगे चाली ।
बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ८ ॥
अलख पुरुष का धाम निहारा ।
अगम लोक चढ़ पाई ठौर ॥ ९ ॥
उमंग अंग ले अधर सिधारी ।
राधास्वामी धाम गई मैं दौड़ ॥१०॥
राधास्वामी दृष्टि करी कर प्यारा ।
लीनी सुरत चरन में जोड़ ॥११॥

॥ शब्द ९१ ॥

सुरतिया पकड़ गुरू की बांह ।
उमंग कर निज घर को जाती ॥ १ ॥
समझ सोच गुरू बचन अमोला ।
होय गई धुन रस माती ॥ २ ॥

नित अभ्यास करत अब घट में।
मन इन्द्री को ले साथी ॥ ३ ॥
गुरू का रूप अधिक मन भाया।
ध्यान धरत हिये दिन राती ॥ ४ ॥
करम धरम और भरम अनेका।
इन सब की अब हुई घाती ॥ ५ ॥
सहसकंवल होय चढ़ी गगन में।
गुरू दरशन रस हुई राती ॥ ६ ॥
माया काल लगाईं अटकें।
गुरू बल मार धरे लाती ॥ ७ ॥
प्रेम भरे राग और रागिनी।
सुन में हंसन संग गाती ॥ ८ ॥
महासुन्न के पार गुफा में।
सोहंग मुरली बजवाती ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष संग आरत करती।
मधुर बीन धुन सुनवाती ॥१०॥
राधास्वामी दीन दयाला।
चरन सरन की दई दाती ॥११॥

॥ शब्द ९२ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
गुरु दई प्रेम की दात ॥ १ ॥
दया हुई गुरु सन्मुख आई ।
उन धरा मेहर का हाथ ॥ २ ॥
संत मते की महिमां जानी ।
सतसंग कर दिन रात ॥ ३ ॥
दया मेहर से बचन सुनाये ।
परख परख समझी गुरु बात ॥ ४ ॥
चरन सरन गुरु हिरदे धारी ।
टूट गया अब जम से नात ॥ ५ ॥
सुरत शब्द मारग ले सारा ।
करती शब्द बिख्यात ॥ ६ ॥
धुन रस पाय सुरत अब जागी ।
दूर हुए मन के उतपात ॥ ७ ॥
करम भरम सब दीन नसाई ।
काल बली की निरखी घात ॥ ८ ॥

चढ़ी सुरत पहुंची नभपुर में ।
गगन मंडल गुरु दरशन पात ॥ ९ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफा लख ।
सत्तलोक धुन बीन सुनात ॥१०॥
अलख अगम का दरशन करके ।
राधास्वामी चरन समात ॥११॥

॥ शब्द ९३ ॥

सुरतिया गाय रही ।
गुरु महिमां सार ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन ।
चरन सरन रही हिरदे धार ॥ २ ॥
उमंग सहित सेवा को धावत ।
हरख रही गुरु रूप निहार ॥ ३ ॥
प्रेम सहित सुनती धुन अनहद ।
निरख रही घट मोक्ष दुआर ॥ ४ ॥
द्वारा फोड़ चढ़त नभ ऊपर ।
घंटा संख सुना धर प्यार ॥ ५ ॥

गुरु पद पाय सुन्न में धाई ।
गुरु संग गई महासुन पार ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन बीन बजावत ।
भेंटी जाय सत्त करतार ॥ ७ ॥
अलख अगम के पार हुई जब ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥ ८ ॥
प्रेम उमंग नवीन जगावत ।
आरत गावत सन्मुख ठाड़ ॥ ९ ॥
मेहर दया सतगुरु की पाई ।
खुल गया अब भक्ती भंडार ॥१०॥
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।
गावत रहूं अब लैलो* निहार* ॥११॥

॥ शब्द ९४ ॥

सुरतिया भींज रही ।
गुरु प्रेम रंग बरसाय ॥ १ ॥
मगन होय धरती गुरु ध्याना ।
घट में दरशन पाय ॥ २ ॥

* लैलो निहार = रात दिन

अचरज रूप दिखाया गुरु ने ।
सोभा वाकी बरनी न जाय ॥ ३ ॥
उमँग उमँग चरनन में लागी ।
दिन दिन प्रेम प्रीत अधिकाय ॥ ४ ॥
शब्द सुनत अब चढ़त अधर में ।
नभ में जोत रूप दरसाय ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु सूरत ।
सुन्न में चढ़ निरमल गत पाय ॥ ६ ॥
भंवरगुफा मुरली धुन सुन कर ।
सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ७ ॥
अचरज दरस पुरुष का पाया ।
मेहर से दई धुन बीन सुनाय ॥ ८ ॥
अलख पुरुष दरबार निरख कर ।
अगम लोक में पहुँची धाय ॥ ९ ॥
धाम अनामी अपर अपारा ।
वहां आरती प्रेम सजाय ॥१०॥
राधास्वामी के चरनन लागी ।
अचरज सोभा क्या कहूं गाय ॥११॥

॥ शब्द ९५ ॥

सुरतिया सुनत रही ।
हित चित से सतगुरु बैन ॥ १ ॥
मगन होय गुरु दरशन लागी ।
ताकत रही गुरु ऐन* ॥ २ ॥
चित हुआ साफ़ बुद्धि हुई निरमल ।
परखी घट की सैन ॥ ३ ॥
मन और सुरत लगे घट जुड़ने ।
धर गुरु ध्यान रूप रस लेन ॥ ४ ॥
प्रीत बढ़त परतीत सम्हारत ।
गुरु के पास बसत दिन रैन ॥ ५ ॥
बिन गुरु दरस बिकल रहे मन में ।
सतसंगत में पावत चैन ॥ ६ ॥
करम भरम से हुई अब न्यारी ।
काल से छूटा लेन और देन ॥ ७ ॥
दीन जान गुरु दया बिचारी ।

* ऐन = नेत्र

सुरत चली अब घट में पैन ॥ ८ ॥
नभ में लखा जोत उजियारा ।
त्रिकुटी जाय सुनी गुरु कहेन ॥ ९ ॥
धुन की ख़बर लेन चली आगे ।
सुन्न में जाय खुले हिये नैन ॥१०॥
सतपुर होय गई धुर धामा ।
निरखा अचरज रूप अनैन ॥११॥
मोहिं निकाम नीच को छिन में ।
राधास्वामी मेहर से कीना महंन ॥१२॥

॥ शब्द ९६ ॥

सुरतिया सेव रही ।
गुरु चरन सम्हार ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिये माहिं बढ़ावन ।
धर चरनन में प्यार ॥ २ ॥
सेवा करत उमँग से निस दिन ।
मन नहिं लावे आर ॥ ३ ॥

लोक लाज की कान न लावे ।
हाज़िर रहे दरबार ॥ ४ ॥
कोइ कुछ कहवे मन नहिं लावे ।
दीन अधीन पड़ी गुरु द्वार ॥ ५ ॥
करम भरम तज सरन सम्हारी ।
मन में निश्चय धार ॥ ६ ॥
सतसँग में मन चित हुलसाना ।
सुनत बचन गुरु सार ॥ ७ ॥
शब्द मांहि नित सुरत लगावत ।
सुन अनहद झनकार ॥ ८ ॥
हिरदे में गुरु रूप बसावत ।
ध्यान धरत हर बार ॥ ९ ॥
सुमिरन नाम करे निस बासर ।
राधास्वामी टेक अधार ॥१०॥
जगे भाग गुरु दरशन पाये ।
काल से तोड़ा नाता झाड़ ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला ।
सहज किया भौसागर पार ॥१२॥

॥ शब्द ८७ ॥

सुरतिया चटक चली ।
सुन धुन झनकार ॥ १ ॥
दीन चित्त होय सन्मुख आई ।
कीना गुरु से प्यार ॥ २ ॥
बिरह भाव वैराग हिये घर ।
बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥
दया धार गुरु जुगत बताई ।
करनी करत सम्हार ॥ ४ ॥
उलट पलट घट अंतर लागी ।
तज काल अंग बीकार ॥ ५ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
निरखा जोत उजार ॥ ६ ॥
मन हुआ लीन चरन में गुरु के ।
लख रही त्रिकुटी लीला सार ॥ ७ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
बाज रही जहां सारँग सार ॥ ८ ॥

भंवरगुफा होय सतपुर पहुंची ।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ९ ॥
अलख लोक में सुरत सुधारी ।
अगम लोक चढ़ किया सिंगार ॥१०॥
पुहप सिंघासन स्वामी बिराजे ।
अचरज सोभा धार ॥११॥
दरशन कर अति कर हरखानी ।
राधास्वामी चरन गहे निज सार ॥१२॥

॥ शब्द ९८ ॥

सुरतिया हरख रही ।
गुरु देख जमाल ॥ १ ॥
बिरह भाव ले सन्मुख आई ।
मगन हुई सुन बचन रसाल ॥ २ ॥
समझ समझ गुरु बात अमोला ।
त्याग दिये सब माया ख्याल ॥ ३ ॥
भोगन से इन्द्रियन को रोकत ।
निरखत रही नित मन की चाल ॥ ४ ॥

गुरु सरूप का ध्यान हिये धर।
तोड़ दिया बल काल कराल ॥ ५ ॥
लोभ मोह और मान ईरखा।
दूर हटाये बिरह सम्हाल ॥ ६ ॥
रोक टोक अब करे न कोई।
काम क्रोध नहिं डारत पाल ॥ ७ ॥
बाट छोड़ माया थक बैठी।
अब नहिं डारत अपना जाल ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया सुरत हुइ निर्मल।
चढ़त अधर घर हाल ॥ ९ ॥
नभ चढ़ सुरत गगन को धाई।
सुन्न सिखर गई सतगुरु नाल ॥१०॥
भंवरगुफा होय सतपुर पहुँची।
अलख अगम लख हुई खुशहाल ॥११॥
राधास्वामी दरस निहारा।
चरन सरन गह हुई निहाल ॥१२॥

॥ शब्द ९९ ॥

सुरतिया नाच रही ।
चढ़ गगन शब्द सुन तान ॥ १ ॥
उमँग उमँग गुरु दरशन करती ।
त्यागा मन का मान ॥ २॥
सुन सुन धुन फिर आगे चाली ।
हंसन संग मिली अब आन ॥ ३ ॥
हरख हरख सब हंस हंसिनी।
गावत गुन सतगुरु धर ध्यान॥ ४ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा ।
सुनत रही मुरली धुन कान ॥ ५ ॥
पहुँची जाय पुरुष दरबारा ।
पाय गई सत शब्द निशान ॥ ६ ॥
अलख अगम के चरन परस कर ।
पहुँची धुर अस्थान ॥ ७ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी ।
प्रेम भक्ति मोहिं दीना दान ॥ ८ ॥

दीन अधीन पड़ी चरनन में।
चरन सरन दृढ़ कीनी आन॥ ९॥
प्रेम सहित उन आरत गाती।
वार धराती जान और प्रान॥१०॥
महिमा राधास्वामी अति से भारी।
क्योंकर करूं बखान॥११॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला।
दीना चरन ठिकान॥१२॥

॥ शब्द १०० ॥

सुरतिया झूम रही।
अब पिया अमी रस नाम॥ १॥
तन मन की सब सुध बिसरानी।
दिया गुरू अस जाम॥ २॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धाई।
पाया जोत मुक़ाम॥ ३॥
घंटा संख दोऊ धुन छोड़ी।
चढ़ गई त्रिकुटी धाम॥ ४॥

मगन हुई गुरु दरशन पाए ।
हारे काल और जाम ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हाई ।
हंसन संग किया बिसराम ॥ ६ ॥
वहां से चली अधर को प्यारी ।
भंवरगुफा मुरली धुन गाम ॥ ७ ॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में ।
पहुंची सतगुरु धाम ॥ ८ ॥
अलख अगम की धुन सुन धाई ।
कीना पूरा काम ॥ ९ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी ।
पाया अब निज ठाम ॥१०॥
दीन लीन होय आरत गाती ।
पाई सीतल छाम ॥११॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला ।
चरनन में दीना आराम ॥१२॥

॥ शब्द १०१ ॥

सुरतिया घूम गई ।
तज जगत भाव भै प्यार ॥ १ ॥
सतसंग कर निरमल बुध जागी ।
देखा जगत असार ॥ २ ॥
कुमत उड़ाय सुमत अब धारी ।
तज दिये मन के सभी विकार ॥ ३ ॥
संत मता अति पूरा सांचा ।
धुर पहुंचावन हार ॥ ४ ॥
सुन गुरु बचन समझ अस महिमा ।
मन से उसको लीना धार ॥ ५ ॥
उमंग सहित गुरु सेवा लागी ।
नित्त बढ़ावत चरनन प्यार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द मारग निज सारा ।
गुरु से पाया भेद अपार ॥ ७ ॥
प्रीत सहित अभ्यास करूं नित ।
चाखत रहूं शब्द रस सार ॥ ८ ॥

उलट पलट अब चढ़ी गगन पर ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ९ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
धुन मुरली और बीन सम्हार ॥१०॥
निरख दरस गुरु अलख अगम का ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥११॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी प्यारे ।
चरन सरन दी दया बिचार ॥१२॥

॥ शब्द १०२ ॥

सुरतिया लिपट रही ।
धर शब्द गुरू सँग प्यार ॥ १ ॥
भाव भक्ति से चरन परसती ।
पहिनाती गल हार ॥ २ ॥
उलट दृष्टि गुरु दरशन करती ।
तन मन सुरत बिसार ॥ ३ ॥
प्रेम भरी सुख आरत गाती ।
चरनन पर जाती बलिहार ॥ ४ ॥

गुरु दयाल मोहिं निरख अधीना ।
लीना भुजा पसार ॥ ५ ॥
चरन सरन मोहिं निज कर दीनी ।
काल करम को डाला वार ॥ ६ ॥
क्योंकर गुन राधास्वामी गाऊं ।
उन बिन नहिं मोहिं और अधार ॥ ७ ॥
इत से घूम निरखती घट में ।
गुरु का अद्भुत रूप अपार ॥ ८ ॥
मचल मचल चरनन लिपटानी ।
झूम रही पी अमृत सार ॥ ९ ॥
जग जिव भाव हटाया गुरु ने ।
दीना निरमल जीवन सार ॥१०॥
अटक भटक तज पकड़े चरना ।
राधास्वामी हुए मेरे प्रिय भरतार ॥११॥
पति और पिता उन्हीं को जानूं ।
रहूं निस दिन उन मौज अधार ॥१२॥

॥ शब्द १०३ ॥

सुरतिया रंग भरी ।
गुरु सन्मुख उमगत आय ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ावत ।
चरनन रही लिपटाय ॥ २ ॥
साज संवार करत गुरु भक्ती ।
नित नई प्रेम रीत दरसाय ॥ ३ ॥
मन इंद्रियन से जूझ जूझ कर ।
लेती खूंट छुड़ाय ॥ ४ ॥
छिन २ जोड़त सुरत शब्द में ।
धुन झनकार सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर दया राधास्वामी की परखत ।
नित नया आनन्द पाय ॥ ६ ॥
जब तब माया बिघन लगावत ।
काल रहे मग में अटकाय ॥ ७ ॥
तबही चित्त उदास होय कर ।
गिरत पड़त धुन रस नहिं पाय ॥ ८ ॥

गुरु से करे फ़रियाद घनेरी ।
क्यों नहिं मेरी करो सहाय ॥ ९ ॥
गुरु की दया सदा संग रहती ।
मसलहत उनकी बूझ न पाय ॥१०॥
अटक भटक जो मग में भेंटत ।
देत नई बिरह उमंग जगाय ॥११॥
याते धर बिस्वास हिये में ।
सूरत मन नित अधर चढ़ाय ॥१२॥
राधास्वामी मेहर दया से अपने ।
पूरा काज बनाय ॥१३॥
मैं अति दीन निबल निर आसर ।
आन पड़ा उनकी सरनाय ॥ १४ ॥
प्रेम सहित नित आरत करके ।
राधास्वामी लेउं रिझाय ॥ १५ ॥

॥ शब्द १०४ ॥

सुरतिया मस्त हुई ।
अब पाया दरश गुरु आय ॥ १ ॥

सुन सुन धुन तिल फोड़ सिधारी ।
नभ में पहुंची धाय ॥ २ ॥
घंटा संख अति धूम मचाई ।
दरशन जोत दिखाय ॥ ३ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी आई ।
गरज मृदंग सुनाय ॥ ४ ॥
गुरु का रूप लखा हिये अंतर ।
अद्भुत सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
अक्षर रूप लखा सुन माहीं ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाय ॥ ६ ॥
गुरु बल गई महासुन पारा ।
भंवरगुफा मुरली धुन गाय ॥ ७ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।
मधुर मधुर धुन बीन बजाय ॥ ८ ॥
अलख अगम का रूप अनूपा ।
लख हिये प्रेम अधिक रहा छाय ॥ ९ ॥
अचरज धाम निरखती चाली ।
राधास्वामी चरन रही लिपटाय ॥ १० ॥

प्रेम प्रीत से आरत साजी ।
राधास्वामी लिए रिझाय ॥११॥
प्रेम आनंद मिला अति भारी ।
अब किस को मैं कहूं सुनाय ॥१२॥
अजब धाम पाया मैं सजनी ।
महिमा ताकी कही न जाय ॥१३॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
लीना मुझ को अंग लगाय ॥१४॥
छिन छिन गुन गाऊं गुरु प्यारे ।
पल पल राधास्वामी रही धियाय ॥१५॥

॥ शब्द १०५ ॥

सुरतिया मगन भई ।
गुरु देख दीदार ॥ १ ॥
बचन बान गुरु तान चलाये ।
सुन सुन हुई सरशार ॥ २ ॥
हरख हरख गुरु सतसंग करती ।
भूल गई संसार ॥ ३ ॥

प्रेम बढ़ा दिन दिन गुरु चरनन ।
तन मन धन सब दीना वार ॥ ४ ॥
गुरु का रूप अनूप हिये में ।
निरख रही छिन छिन कर प्यार ॥ ५ ॥
आठ जाम सुत रहे रंगीली ।
प्रेम प्रीत का कर सिंगार ॥ ६ ॥
नींद भूख आलस सब छोड़ा ।
चढ़ा रहे नित प्रेम खुमार ॥ ७ ॥
गुरु के रंग रंगी सुत रंगीं ।
त्याग दिया सब जग ब्योहार ॥ ८ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपना ।
माया काल रहे दोउ हार ॥ ९ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
सुनत रही अनहद झनकार ॥१०॥
सुन सुन धुन पहुंची नभपुर में ।
बंकनाल धस त्रिकुटी पार ॥११॥
सुन्न के परे महासुन धाई ।
भंवरगुफा सतलोक निहार ॥१२॥

अलख अगम के पार ठिकाना ।

पाया राधास्वामी चरन अधार ॥१३॥

प्रेम प्रीत से आरत साजी ।

गाय रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥१४॥

चरन सरन दे गोद बिठाया ।

राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥१५॥

॥ शब्द १०६ ॥

सुरतिया गाज रही ।

चढ़ शब्द गुरू के संग ॥ १ ॥

बिरह बिमल अनुराग चित्त धर ।

धारा सतगुरु रंग ॥ २ ॥

राधास्वामी मेहर परख अंतर में ।

प्रीत बसी अंग अंग ॥ ३ ॥

दरशन कर तन मन सुध भूली ।

जैसे दीप पतंग ॥ ४ ॥

राधास्वामी बल ले चढ़न गगन पर ।

देख काल रहा दंग ॥ ५ ॥

शब्द शोर मच रहा गगन में ।
बह रही धारा गंग ॥ ६ ॥
काम क्रोध अहंकार लोभ सब ।
हुए आपही तंग ॥ ७ ॥
छोड़ गये घर घाट पुराना ।
मन भी हुआ अपंग ॥ ८ ॥
माया ममता दूर हटाई ।
छोड़ा नाम और नंग ॥ ९ ॥
सील सुमत आय थाना कीना ।
सीखी सतगुरु ढंग ॥१०॥
निरभय होय सुन्न में खेलूं ।
होगई आज निसंक ॥११॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में ।
पहुंची जैसे बिहंग ॥१२॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
सब से हुई असंग ॥१३॥
दीन अधीन पड़ी चरनन में ।
गुरु ने लगाया अपने अंग ॥१४॥

राधास्वामी अचरज दरशन पाये ।
धारा रंग सुरंग ॥१५॥

॥ शब्द १०७ ॥

सुरतिया लाग रही ।
गुरु चरन अधार ॥ १ ॥
सुन सुन महिमा संत मते की ।
भाव बढ़ा और जागा प्यार ॥ २ ॥
औसर पाय मिला साधू संग ।
पाया भेद अपार ॥ ३ ॥
उमंग उमंग करती नित साधन ।
सुनती धुन झनकार ॥ ४ ॥
प्रेम बढ़ा चरनन में गुरु के ।
खोजत आई गुरु दरबार ॥ ५ ॥
दरशन पाय हुई मस्तानी ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ६ ॥
दया करी सतसंग में मेला ।
गुरु ने बचन सुनाये सार ॥ ७ ॥

परमारथ की क़दर जनाई ।
देखा जगत असार ॥ ८ ॥
दिन दिन प्रीत बढ़त गुरु चरना ।
उमंग उठत हिये में हर बार ॥ ९ ॥
सेवा करके गुरू रिझाऊं ।
पाऊं राधास्वामी दया अपार ॥१०॥
करम भरम सब दूर बहाये ।
पकड़े राधास्वामी चरन सम्हार ॥११॥
सुरत चढ़ी नभ में अब दौड़ी ।
गगन जाय सुनी धुन ओंकार ॥१२॥
सुन और महासुन्न के पारा ।
भंवरगुफा मुरली झनकार ॥१३॥
सत्त रूप और अलख अगम लख ।
गई सुरत अब निज घरबार ॥१४॥
मेहर करी निज भाग जगाया ।
राधास्वामी कीना सहज उद्धार ॥१५॥

॥ शब्द १०८ ॥

सुरतिया प्रेम भरी।
रही सतगुरु हिरदे छाय ॥ १ ॥
बाल समान गोद गुरु खेलत।
हिये दृढ़ सरन बसाय ॥ २ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे।
चित में नित्त रहै हरखाय ॥ ३ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी।
आस बास गुरु चरनन लाय ॥ ४ ॥
ऐसी निरमल भक्ति कमावत।
उमंग उमंग सेवा को धाय ॥ ५ ॥
बचन गुरू सुन बिगसत मन में।
नई नई प्रीत जगाय ॥ ६ ॥
चरनन में नित सरधा बढ़ती।
महिमा चित में अधिक समाय ॥ ७ ॥
सुमिरन ध्यान भजन की जुगती।
ले गुरु से रहूं नित्त कमाय ॥ ८ ॥

मन रहे दीन लीन चरनन में ।
सुरत शब्द संग अधर चढ़ाय ॥ ९ ॥
सहसकंवल धुन घंटा सुनती ।
जोत रूप दरसाय ॥१०॥
गगन जाय निरखत गुरु मूरत ।
धुन मिरदंग और गरज सुनाय ॥११॥
राग रागिनी गावत सुन में ।
धुन किंगरी सारंग बजाय ॥१२॥
सेत सूर लख भंवर प्रकाशा ।
मुरली संग सोहंग धुन गाय ॥१३॥
दरस पुरुष का पाय अमरपुर ।
अलख अगम को निरखा जाय ॥१४॥
राधास्वामी किया सब काज मेहर से ।
उनके चरन से रही लिपटाय ॥१५॥

॥ शब्द १०९ ॥

सुरतिया उमंग भरी ।
रही गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥

दया धार गुरु चरन पधारे ।
अचरज भाग जगाय ॥ २ ॥
नित प्रति दरशन गुरु का करती ।
चरनामृत परशादी खाय ॥ ३ ॥
मैं तो नीच निकाम नकारा ।
चरन सरन दई मोहिं अपनाय ॥ ४ ॥
औगुन मेरे कुछ न बिचारे ।
दिन दिन मेहर करी अधिकाय ॥ ५ ॥
दीन और हीन चीन्ह मोहिं सतगुरु ।
लीना अपनी गोद बिठाय ॥ ६ ॥
बिन करनी गुरु मेहर दया से ।
मन और सुरत दीन सिमटाय ॥ ७ ॥
अंतर में नित करत चढ़ाई ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ८ ॥
घट में देखूं अजब तमाशा ।
परमारथ में लाग बढ़ाय ॥ ९ ॥
मगन होय नित भाग सराहूं ।
अचरज लीला देख हरखाय ॥१०॥

नित्त बिलास होत घर मेरे ।
सतसंग दिन दिन बढ़ता जाय ॥११॥
किरपा कर संजोग मिलाया ।
अस बड़ भाग कोइ बिरला पाय ॥१२॥
बिना मांग गुरु किरत करावें ।
बिन याचे दई न्यामत आय ॥१३॥
क्योंकर शुकराना करूं उनका ।
मैं गुरु बिन कोइ और न ध्याय ॥१४॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊं ।
राधास्वामी २ रहूं नित गाय ॥१५॥

॥ शब्द ११० ॥

सुरतिया भाव भरी ।
आज गुरु संग करत बिलास ॥ १ ॥
अमी रूप गुरु बचन अमोला ।
सुनत चित्त दे पास ॥ २ ॥
समझ समझ कर मानत उनको ।
धर चरनन बिस्वास ॥ ३ ॥

सुरत शब्द की करत कमाई ।
निस दिन बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
गुरु चरनन बिन और न कोई ।
धारत हिये में आस ॥ ५ ॥
भक्ति दीनता प्रेम बढ़ावत ।
करती चरन निवास ॥ ६ ॥
गुरु सरूप को ध्यान लाय कर ।
हिये में करती बास ॥ ७ ॥
उमंग उठी सेवा की घट में ।
होगई दासन दास ॥ ८ ॥
निस दिन सेव रही गुरु चरना ।
चित से रहती उनके पास ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम जपत निस बासर ।
जग से रहती चित्त उदास ॥१०॥
राधास्वामी चरन पकड़ कर बैठी ।
मिल गई प्रेम सरन की रास ॥११॥
दया हुई सुत चढ़ी अधर में ।
सहसकंवल दल किया निवास ॥१२॥

वहां से चल त्रिकुटी में पहुंची ।
निरखा लाल सूर परकाश ॥१३॥
सुन में जाय किये अशनाना ।
देखा अक्षर पुरुष उजास ॥१४॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई ।
बीन बजे जहां वहां निज बास ॥१५॥
लखा जाय फिर अलख अगम को ।
राधास्वामी चरनन कीना बास ॥१६॥
प्रेम सहित वहां आरत साधी ।
हो गई राधास्वामी चरनन दास ॥१७॥

॥ शब्द १११ ॥

सुरतिया मोह रही ।
आज निरख गुरू छबि शान ॥ १ ॥
नित्त बिलास होत गुरू द्वारे ।
देख देख मैं रहूं हैरान ॥ २ ॥
मेहर दया जस मुझ पर कीनी ।
क्योंकर उसका करूं बखान ॥ ३ ॥

मात पिता मेरे राधास्वामी प्यारे ।
दया धार जग प्रगटे आन ॥ ४ ॥
बालक सम मोहिं गोद बिठाया ।
प्रेम भक्ति मोहिं दीनी दान ॥ ५ ॥
जो कुछ मांगा सो मैं पाया ।
क्योंकर करूं शुकराना आन ॥ ६ ॥
सहज मिले मोहिं दुरलभ देवा ।
तन मन उन पर करूं कुरबान ॥ ७ ॥
राधास्वामी सम कोइ और न जानूं ।
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥ ८ ॥
वाह वाह मेरे सतगुरु दाता ।
वाह वाह प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥
जीव दया कारन जग आये ।
देव सब जीवन भक्ती दान ॥१०॥
मुझ पर दया करो अब ऐसी ।
घट में दीजे शब्द निशान ॥११॥
मन और सूरत चढ़ें अधर में ।
सुनें जाय त्रिकुटी धुन तान ॥१२॥

आरत धार गुरू चरनन में ।
वहां से चढ़ाऊं अधर ठिकान ॥१३॥
सतपुर जाय करूं फिर आरत ।
सत्तपुरुष के सन्मुख आन ॥१४॥
वहां से राधास्वामी धाम सिधारूं ।
राधास्वामी चरन लगाऊं ध्यान ॥१५॥
उमंग प्रेम से आरत गाती ।
पाय गई अब प्रेम निधान ॥१६॥
कैसे भाग सराहूं अपना ।
राधास्वामी प्यारे चरन समान ॥१७॥

॥ शब्द ११२ ॥

सुरतिया मौन रही ।
गुरू दिया शब्द रस सार ॥ १ ॥
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आई ।
हिये परतीत संवार ॥ २ ॥
सरधा सहित सुनत गुरु बचना ।
सतसंग में धर प्यार ॥ ३ ॥

उमंग बढ़त दिन दिन हिरदे में ।
सेवा करत सम्हार ॥ ४ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा ।
तजत न कीनी बार ॥ ५ ॥
कुल कुटम्ब से नाता तोड़ा ।
तज मन का अहंकार ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का भेद नियारा ।
गुरू से पाया सार ॥ ७ ॥
मन इंद्री से जूझत निस दिन ।
त्यागे सबही बिकार ॥ ८ ॥
भजन भक्ति अभ्यास करत नित ।
झांकत मोक्ष दुआर ॥ ९ ॥
सतगुरू दया मेहर संग लेकर ।
अधर चढ़त मन बिरह सम्हार ॥१०॥
नभ में लखा जोत उजियारा ।
गगन जाय गुरू रूप निहार ॥११॥
सुन में जाय सरोवर न्हाई ।
गुरू मिल गई महासुन पार ॥१२॥

भंवरगुफा का लखा उजाला ।
सतपुर सुनी बीन धुन सार ॥१३॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
पहुंची राधास्वामी धाम अपार ॥१४॥
पिता प्यारे मेरे हुए दयाला ।
अंग लगाया मोहिं कर प्यार ॥१५॥
मिल गया आज प्रेम भंडारा ।
परम आनंद अनंत अपार ॥१६॥
पूरन भाग उदय हुए मेरे ।
मिल गये राधास्वामी निज दिलदार ॥१७॥

॥ शब्द ११३ ॥

सुरतिया अधर चढ़ी ।
धर सतगुरु रूप धियान ॥ १ ॥
भाव सम्हार संग गुरु कीना ।
सुने बचन निज आन ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा अगम अपारा ।
सुरत शब्द का पाया ज्ञान ॥ ३ ॥

ले उपदेश किया अभ्यासा ।
सतगुरु रूप करी पहिचान ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति हिरदे में जागी ।
गुरु चरनन में रही लिपटान ॥ ५ ॥
दरशन करत ताक गुरु नैना ।
बचन सुनत चढ़ अधर ठिकान ॥ ६ ॥
पियत सार रस हुई मतवाली ।
झूठा लगा जहान ॥ ७ ॥
सतगुरु रंग रँगी सुत बिरहन ।
मन माया दोउ वार रहान ॥ ८ ॥
नित्त बिलास करे घट अंतर ।
सहज सहज सुत अधर चढ़ान ॥ ९ ॥
सतगुरु रूप संग ले चालत ।
काल करम की कुछ न बसान ॥१०॥
दरशन पाय रहत मगनानी ।
वारत तन मन जान और प्रान ॥११॥
सतगुरु रूप लगा अति प्यारा ।
जस कामी को कामिन जान ॥१२॥

मीन रहे जस जल आधारा।
पपिहा को जस स्वांत समान ॥१३॥
ऐसी प्रीत बढ़ी गुरु चरनन।
को उसका कर सके बखान ॥१४॥
मन और सुरत चढ़े गगनापुर।
वहां से सतपुर जाय बसान ॥१५॥
सत्तपुरुष से ले दुरबीना।
धाम अनामी पहुँची आन ॥१६॥
मगन हुई निज घर में आई।
राधास्वामी दरस पाय त्रिप्तान ॥१७॥

॥ शब्द ११४ ॥

सुरतिया ताक रही।
गुरु नैन रसाल ॥ १ ॥
घेर घुमर घट भीतर आई।
पियत अधर रस हाल ॥ २ ॥
बिसर गई सब सुध बुध तन की।
दूर हुए मेरे सब दुख साल ॥ ३ ॥

काल लगाये विघन अनेका ।
सन्मुख हुई ले नाम की ढाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काल बल तोड़ा ।
मन इंद्री का काटा जाल ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा ।
लोभ मोह भी हुए पामाल ॥ ६ ॥
बिन गुरु दया भरमती जग में ।
राधास्वामी लिया मोहिं आप सम्हाल ॥७॥
निरमल होय अधर की चाली ।
निरखा अद्भुत जोत जमाल ॥ ८ ॥
घंटा संख छोड़ धुन नभ में ।
आगे धसी बंक की नाल ॥ ९ ॥
त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया ।
सुन में न्हाय मानसर ताल ॥१०॥
लीला अक्षर पुरुष निरख कर ।
महासुन्न गई सतगुरु नाल ॥११॥
मुरली धुन सुन भंवरगुफा में ।
महाकाल को दिया खिलाल ॥१२॥

सतपुर जाय दरस पुर्ष पाया ।
धुन बीना सुन हुई खुशहाल ॥१३॥
अलख अगम के चढ़ गई पारा ।
मिल गये राधास्वामी दीन दयाल ॥१४॥
उमंग सम्हार आरती धारी ।
मगन हुई अब पाय विसाल ॥१५॥
मेहर दया से अंग लगाया ।
होय गई मैं आज निहाल ॥१६॥
हर दम गुन गाऊं पिया प्यारे ।
कर दिया मुझको मालामाल ॥१७॥

॥ शब्द ११५ ॥

सुरतिया जाग उठी ।
सुन बचन गुरू के सार ॥ १ ॥
भरमत रही जगत अँधियारी ।
मिला न सच्चा संग ॥ २ ॥
भाग जगे गुरू सन्मुख आई ।
पाया भेद अपार ॥ ३ ॥

मन और सूरत जुड़ मिल आये ।
धर चरनन में प्यार ॥ ४ ॥
काल करम बहु विघन लगाये ।
पड़ा संगत से दूर ॥ ५ ॥
मेहर हुई बढ़ी उमंग नवीनी ।
आया चरन हजूर ॥ ६ ॥
मेहर की दृष्टि करी सतगुरु ने ।
दई प्रेम की दात ॥ ७ ॥
उमंग उमंग गुरु सेवा करती ।
नित नया भाव जगाय ॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द धुन सुनती ।
नित्त नया रस पाय ॥ ९ ॥
रैन दिवस चरनन में रहती ।
नित नया आनंद पाय ॥१०॥
नित नई प्रीत जगत गुरु चरनन ।
बरनन करी न जाय ॥११॥
धुन रस पाय हुई मतवारी ।
सुरत गगन को धाय ॥१२॥

सहसकंवल लख जोत उजारा।
त्रिकुटी गुरु का धाम ॥१३॥
चंद्र चांदनी चौक निहारा।
भंवरगुफा सत नूर ॥१४॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर।
पाया अजब सरूर ॥१५॥
तिस के परे अलख दर्स पाया।
अगम को परसा धाय ॥१६॥
हैरत धाम लखा तिस ऊपर।
सोभा कही न जाय ॥१७॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला।
अचरज दरशन पाय ॥१८॥
भर भर प्रेम आरती गाती।
चरन सरन लिपटाय ॥१९॥
मेहर करी गुरु परम सनेही।
लीना गोद बिठाय ॥२०॥
हरख हरख मैं नित गुन गाऊं।
राधास्वामी सदा धियाय ॥२१॥

॥ शब्द ११६ ॥

सुरतिया मनन करत ।
सतगुरु के अचरज बोल ॥ १ ॥
जो जो बचन सुनत सतसंग में ।
सब की करती तोल ॥ २ ॥
सार निकार हिये बिच धारा ।
सुरत शब्द मारग अनमोल ॥ ३ ॥
चढ़त अधर में निरख उधर में ।
छांट रही घट धुन की रोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी जैसी दिखाई लीला ।
कासे कहूं मैं उसको खोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११७ ॥

सुरतिया सोय रही ।
मन इंद्रियन संग जग माहिं ॥ १ ॥
जगा भाग सतगुरु से भेंटी ।
दृढ़ कर पकड़ी उनकी बांह ॥ २ ॥

दया करी घर भेद सुनाया।
बैठी चरन सरन की छांह ॥ ३ ॥
मोह नींद से अब उठ जागी।
मिट गई काल करम की दायं ॥ ४ ॥
राधास्वामी सब बिध काज संवारा।
अब नहिं छोडूं उनकी बांह ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११८ ॥

सुरतिया खेल रही।
गुरु बागन बीच ॥ १ ॥
कंवलन की फुलवार खिलानी।
मन माली रहा सींच ॥ २ ॥
लख लख कंवल बिगस ज्यों कलियां।
सुरत अधर को खींच ॥ ३ ॥
भोग बासना दूर हटाई।
मन इंद्री को डाला भींच ॥ ४ ॥
बिघन अनेक मेहर से टारे।
काल करम को दीनी मींच ॥ ५ ॥

अपना जान दया स्वामी कीनी ।
सुरत चरन में लीनी इंच ॥ ६ ॥
राधास्वामी लिया उबार दया कर ।
मोहिं अधम नालायक़ नीच ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११९ ॥

सुरतिया चरन गहे ।
सुन सतगुरु वचन अमोल ॥ १ ॥
धर अनुराग लिया उपदेशा ।
कर रही सुरत शब्द की तोल ॥ २ ॥
प्रेम सहित घट धुन में लागी ।
पहुंची जाय ब्रह्म के कोल ॥ ३ ॥
वहां से पार ब्रह्म अस्थाना ।
लखा जाय और हुई अनमोल ॥ ४ ॥
माया के सब जाल उठाये ।
भाग गया अब काल का गोल ॥ ५ ॥
सत्त शब्द धुन चढ़ कर पाई ।
कौन करे अब वाका मोल ॥ ६ ॥

राधास्वामी धाम भाग से पाया ।
परमानंद मिला जहां चोल ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२० ॥

सुरतिया भूल गई ।
अब निज घर जग में आय ॥ १ ॥
जनम जनम पड़ी काल के घेरा ।
माया संग लिपटाय ॥ २ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
जग में प्रगटे आय ॥ ३ ॥
मेहर दया से भेद सुनाया ।
घर जाने की जुगत बताय ॥ ४ ॥
अचरज भाग जगाया मेरा ।
अपना कर मोहिं चरन लगाय ॥ ५ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाऊं ।
इक दिन निज घर पहुंचूं जाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरनन आरत धारूं ।
मगन रहूं नित उन गुन गाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२१ ॥

सुरतिया हरख हरख।
आज गुरु चरनन लागी ॥ १ ॥
बिरह अनुराग धार अब चित में।
जगत बासना दई त्यागी ॥ २ ॥
भरम हटावत भूल मिटावत।
भाव भक्ति घट में जागी ॥ ३ ॥
जग ब्योहार लगा सब कांचा।
सहज हुआ मन बैरागी ॥ ४ ॥
संत मते की महिमां जानी।
सुरत हुई धुन रस रागी ॥ ५ ॥
सतसंग बचन लगें अब प्यारे।
चरन परस हुई बड़भागी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन हुआ बिस्वासा।
प्रेम दान उन से मांगी ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२२ ॥

सुरतिया मांज रही ।
गुरु घाट नाम संग मन अपना ॥ १ ॥
सतसंग कर सेवा को धावत ।
शुद्ध करत अस तन अपना ॥ २ ॥
गुरु भक्तन से प्यार बढ़ावत ।
ख़रच करत अब धन अपना ॥ ३ ॥
गुरु स्वरूप धर ध्यान हिये में ।
दूर हटावत जग तपना ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन ।
जगत भाव दिन २ घटना ॥ ५ ॥
करम भरम और जग ब्योहारा ।
इन में मन अब नहिं फंसना ॥ ६ ॥
धुन संग नित्त सुरत मन जोड़त ।
निस्फल कृत में नहिं पचना ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़त ऊंचे को ।
त्रिकुटी दरस गुरू तकना ॥ ८ ॥

राधास्वामी सरन सम्हारत।
उनके चरन में अब रचना ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२३ ॥

सुरतिया बचन सम्हार।
गुरू की मौज निहार रही ॥ १ ॥
उमंग उमंग सतसंग को धावत।
प्रीत हिये में धार रही ॥ २ ॥
कर परतीत गुरू चरनन में।
सुरत शब्द मत सार लई ॥ ३ ॥
नित अभ्यास करत धर प्यारा।
मन के बिकार निकार दई ॥ ४ ॥
ध्यान धरत गुरु रूप निहारत।
नई नई उमंग जगाय रही ॥ ५ ॥
शब्द मांहि नित सुरत लगावत।
सुनत मधुर धुन अधर गई ॥ ६ ॥
जोत उजार लखा नभ माहीं।
तिस परे धुन ओंकार गही ॥ ७ ॥

सुन में चंद्र रूप जाय लखिया ।
गुफा परे सतलोक रही ॥ ८ ॥
वहां से राधास्वामी धाम सिधारी ।
दया मेहर उन पाय रही ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२४ ॥

सुरतिया समझ बूझ ।
आज गुरु मत लिया सम्हार ॥ १ ॥
ख़बर पाय सतसंग में आई ।
सुन गुरु बचन अमी की धार ॥ २ ॥
मगन होय मन शांती आई ।
कर सत मत बीचार ॥ ३ ॥
उमंग उमंग करती गुरु दरशन ।
जागत घट में प्यार ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित ।
घट में परख शब्द की धार ॥ ५ ॥
दुरमत छोड़ सुमत अब धारी ।
करम धरम का उतरा भार ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन प्रीत हुई गहिरो।
जग जीवन संग छोड़ा झाड़॥ ७॥
जगत रीत अब मन नहिं भावे॥
भक्ती रीत रही चित धार॥ ८॥
काल जाल में सब जग फंसिया।
बिन गुरु कोइ न जावे पार॥ ९॥
मुझ पर मेहर हुई अब धुर की।
शब्द भेद मोहिं मिलिया सार॥१०॥
चरन सरन गह हुई निचिंती।
राधास्वामी लेहैं मोहिं उबार॥११॥

॥ शब्द १२५॥

सुरतिया न्हाय रही।
हंसन संग सरवर तीर॥ १॥
न्यारी होय लगी गुरु चरनन।
छोड़ी जग की भीड़॥ २॥
सुरत शब्द की कार कमावत।
धर परतीत बांध मन धीर॥ ३॥

इंद्री भोग लगे अब फीके।
पियत अमीरस त्यागत नीर ॥ ४ ॥
नित अभ्यास नेम से करती।
मथ २ शब्द निकारत हीर ॥ ५ ॥
चढ़ कर पहुंची त्रिकुटी पारा।
हंसन संग पियत अब क्षीर ॥ ६ ॥
जिन यह सार भेद घट पाया।
जग में सच्चा वही फ़क़ीर ॥ ७ ॥
जो तू सैर करै निज घट में।
राधास्वामी सरन आव मेरे बीर॥ ८ ॥
चरन पकड़ दृढ़ कर तू उनके।
राधास्वामी से तोहि मिलें न पीर ॥ ९ ॥
दया मेहर से काज बनावें।
बख़्शें तोहि पद गहिर गँभीर ॥१०॥
निज घर पाय बिलास करै नित।
फिर जग में नहिं धरै शरीर ॥११॥
राधास्वामी प्यारे मोहिं नीच को।
प्रेम दात दे किया अमीर ॥१२॥

॥ शब्द १२६ ॥

सुरतिया टेक रही ।
गुरु चरनन सीस नवाय ॥ १ ॥
भक्ति भाव हिरदे धर अपने ।
गुरु सेवा में रही चित लाय ॥ २ ॥
उमंग सहित गुरु दरशन करती ।
सतसंग बचन सुनत नित आय ॥ ३ ॥
काल करम ने दिया झकोला ।
सतसंगत से दूर पराय ॥ ४ ॥
पाय कुसंग बही भोगन में ।
मन इंद्री संग रही लिपटाय ॥ ५ ॥
प्रेमी जन से मेल न कीना ।
सतगुरु शिक्षा गई भुलाय ॥ ६ ॥
कामादिक में भरमत डोले ।
माया के संग रही भुलाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया करी निज अपनी ।
जाल काट लिया खैंच बुलाय ॥ ८ ॥

ज्यों त्यों फिर निरमल कर लीना ।
सतसंग में लिया फेर लगाय ॥ ९ ॥
मनही मन में नित पछतावत ।
करनी कर लई प्रीत जगाय ॥१०॥
होय हुशियार पकड़ दृढ़ चरना ।
राधास्वामी सरन गही अब आय ॥११॥
कर फ़रयाद चरन में गहिरी ।
राधास्वामी दाता लिये मनाय १२॥

होली

॥ शब्द १२७ ॥

सुरतिया धूम मचाय रही ।
खेलन को होली सतगुरु साथ ॥ १ ॥
पिरथम मन माया संग खेली ।
बहु बिध रही जग में भरमात ॥ २ ॥
इंद्रियन के संग हुई दिवानी ।
भोगन में रस पात ॥ ३ ॥

जग की लाज कान मन मानी ।
करम धरम संग रही फंसात ॥ ४ ॥
गुरु प्रेमी जन आय मिले जब ।
उन सतगुरु का भेद सुनात ॥ ५ ॥
उमंग उठी सुन सुन हिये अंतर ।
तब सतगुरु का खोज लगात ॥ ६ ॥
गुरु चरनन में धावत आई ।
प्रेम रंग भर हिरदे माट ॥ ७ ॥
गुरु से मांगत दोउ कर जोड़ी ।
प्रेम भक्ति का फगुआ दान ॥ ८ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ावन ।
गगन गुरू से जोड़ा नात ॥ ९ ॥
रंग बिरंग खेल वहां होली ।
आरत कर सुर्त अधर चढ़ान ॥१०॥
सत्तपुरुष का निरख दीदारा ।
राधास्वामी चरन समान ॥११॥

॥ शब्द १२८ ॥

सुरतिया रंग भरी ।
आज खेलत गुरू संग फाग ॥ १ ॥
मोह नींद में बहुतक सोई ।
गुरू मिल आई जाग ॥ २ ॥
दरशन करत सुनत गुरु बैना ।
बढ़ा प्रेम अनुराग ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
दिन दिन जागा भाग ॥ ४ ॥
चढ़त सुरत घट धुन रस लेती ।
करम भरम सब दीने त्याग ॥ ५ ॥
मन हुआ दीन लीन गुरू चरनन ।
छूट गया भोगन में राग ॥ ६ ॥
लाल हुई गुरू संग खेल होली ।
छूट गये सब कल मल दाग ॥ ७ ॥
गगन जाय अस धूम मचाई ।
काल जाल में दीनी आग ॥ ८ ॥

मन माया से खूंट छुड़ा कर ।
जगत मोह का तोड़ा ताग ॥ ९ ॥
सत्त शब्द में सुरत पिरोई ।
ज्यों सूई में धाग ॥१०॥
अलख अगम से फगुआ लेकर ।
राधास्वामी धाम गई मैं भाग ॥११॥
प्रेम रंगीली आरत धारी ।
राधास्वामी चरन रही मैं लाग ॥१२॥

॥ शब्द १२९ ॥

सुरतिया पियत अमीं ।
गुरू नाम सुमिर धर प्यार ॥ १ ॥
संत मते की सुन सुन महिमां ।
आई गुरू दरबार ॥ २ ॥
सतसंग करत हरखती मन में ।
हिये परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम बसाय हिये में ।
धरत ध्यान गुरू रूप अपार ॥ ४ ॥

भेद पाय मन सुरत लाय कर ।
सुनत शब्द धुन घट में सार ॥ ५ ॥
सरन सम्हारत चरन निहारत ।
मन से काढ़त सभी बिकार ॥ ६ ॥
बिरह जगावत उमंग बढ़ावत ।
जुगत कमावत होय हुशियार ॥ ७ ॥
दिन दिन होत शब्द रस माती ।
गुरु गुन गावत बारम्बार ॥ ८ ॥
राधास्वामी अब निज दया बिचारी ।
सुरत चढ़ाई भौजल पार ॥ ९ ॥

॥ शब्द १३० ॥

सुरतिया चढ़त अधर ।
धुन डोरी पकड़ सम्हार ॥ १ ॥
सतगुरु दया भेद घट पाया ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ २ ॥
बिरह अंग ले करत अभ्यासा ।
सुरत लगाई साज संवार ॥ ३ ॥

मन हुआ मगन चरन गुरु पाये ।
सहज तजत रस भोग विकार ॥ ४ ॥
सुरत हुई धुन रस मतवाली ।
घंटा संख सुनत नभ द्वार ॥ ५ ॥
ले गुरु दया गगन पर धाई ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ॥ ६ ॥
चंद्र रूप लख महासुन्न पर ।
निरखा सेत सूर उजियार ॥ ७ ॥
बीन सुनी अमरापुर जाई ।
राधास्वामी चरन परस हुई सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३१ ॥

सुरतिया लखत अधर घर ।
गुरु के संग चली ॥ १ ॥
भाव सहित आई सन्मुख गुरु के ।
सतसंगत में आन रली ॥ २ ॥
बचन सुनत मन में मगनानी ।
कपट छोड़ गुरु संग मिली ॥ ३ ॥

गुरु ने ऊंचा भेद सुनाया ।
बेद कतेब सब रहे तली ॥ ४ ॥
संत देस निज धाम सुरत का ।
पावे जो कोइ शब्द पिली ॥ ५ ॥
उमंग उमंग ले जुगत गुरू से ।
निस दिन करत अभ्यास भली ॥ ६ ॥
सुरत रंगी गुरु प्रेम रंग से ।
निरखत घट में जोत बली ॥ ७ ॥
सुन सुन धुन फिर चालत आगे ।
चढ़ कर पहुंची गगन गली ॥ ८ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफा लख ।
धुन बीना सुन सुरत खिली ॥ ९ ॥
राधास्वामी धाम दिखाना ।
मगन हुई घर पाय अली ॥१०॥

॥ शब्द १३२ ॥

सुरतिया भक्ति करत ।
सतगुरु की दया निहार ॥ १ ॥

हुई निरास हाल जग देखत ।
सोच भरी आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
खोज करत सुख धाम पियारी ।
अमर देस जहां बिमल बहार ॥ ३ ॥
कैसे छूटन होय जगत से ।
कस पावै निज धाम अपार ॥ ४ ॥
देख बिकल मन दरदी सांचा ।
मेहर दृष्टि करी गुरु दयार ॥ ५ ॥
घट का पूरा भेद सुनाया ।
शब्द जुगत समझाई सार ॥ ६ ॥
सुन कर सुरत मगन होय चाली ।
हिये में बिरह अनुराग सम्हार ॥ ७ ॥
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा ।
जोत निरख गई गगन मंझार ॥ ८ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
भंवरगुफा सतलोक निहार ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समानी ।
अभय हुई निज काज सँवार ॥१०॥

॥ शब्द १३३ ॥

सुरतिया उमँग भरी ।
मिली गुरू से खोल कपाट ॥ १ ॥
परमारथ की सार जान कर ।
सतसंग में आई खोजत बाट ॥ २ ॥
सुन सुन बचन पुष्ट हुई मन में ।
जग भय लाज अब चित न समात ॥ ३ ॥
तन मन धन को तुच्छ जान कर ।
गुरू सेवा में ख़रच करात ॥ ४ ॥
भेद पाय अभ्यास करत नित ।
सुरत चढ़ाय अधर रस पात ॥ ५ ॥
नभ को छोड़ गगन में पहुँची ।
गुरू दरशन कर अति हुलसात ॥ ६ ॥
सुन्न और भंवरगुफा के पारा ।
सतगुरू चरनन बल बल जात ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अनूप अपारा ।
निरख मगन हुई महा सुख पात ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३४ ॥

सुरतिया अमन हुई ।
तज चित से जगत कुरंग ॥ १ ॥
जगत संग नित दुख सुख सहती ।
काल करम ने कीना संग ॥ २ ॥
बचने की कोइ जुगत न सूझे ।
बिकल रहत अँग अंग ॥ ३ ॥
सुन सुन महिमां सतसंगत की ।
गुरु सन्मुख आई धार उमंग ॥ ४ ॥
बचन सुनत मन शांती आई ।
भजन करत चढ़ा प्रेम का रंग ॥ ५ ॥
घट में जाय अधर चढ़ सुनती ।
धुन घंटा और गरज मृदंग ॥ ६ ॥
सुन में होय चली सतपुर को ।
देख काल रहा दंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया अमर घर पाया ।
निरमल हुई कर सतगुरु संग ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३५ ॥

सुरतिया दूर बसे ।
हर दम गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल तोड़ कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सर्व अंग से गुरु चरनन में ।
लागी धर कर प्यार ॥ ३ ॥
मन की तरंग उचंग सब त्यागी ।
एक आस बिस्वास सम्हार ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मोह रही सब बिघन निकार ॥ ५ ॥
निज सरूप के दर्शन कारन ।
गुरु चरनन में रही पुकार ॥ ६ ॥
बेकल तड़प उठत हिये मांही ।
नैनन से बहती जल धार ॥ ७ ॥
मौज बिचार सबर नहिं आवत ।
बिरह अगिन भड़कत हर बार ॥ ८ ॥

करूं फ़रियाद दाद नहिं पाऊं।
भारी दुख नहिं जात सहार ॥ ९ ॥
फिर फिर करूं बीनती गहिरी।
हे राधास्वामी पिता दयार ॥१०॥
दर्शन दे काटो दुख मेरा।
मैं अति निरबल पड़ा दुआर ॥११॥
बिन दर्शन मोहिं चैन न आवे।
धीर न धारे मन बीमार ॥१२॥
टेरत टेरत बहु दिन बीते।
अब तो राधास्वामी सुनो पुकार ॥१३॥
घट में मोहिं निज दर्शन दीजे।
शब्द सुनाओ अमृत धार ॥१४॥
देव मेरी मांग देर मत धारो।
राधास्वामी प्यारे गुरु दातार ॥१५॥

॥ शब्द १३६ ॥

सुरतिया निकट बसे।
गुरु दरस करे हर बार ॥ १ ॥

कर बिचार जग से अलगानी ।
परमारथ की जानी सार ॥ २ ॥
आस बासना तजी जगत की ।
राधास्वामी चरन अब गहे सम्हार ॥ ३ ॥
सतसंग बचन सुनत चित हरखत ।
सुरत चढ़ावत धुन की लार ॥ ४ ॥
सुखी होय करती गुरु संगा ।
बिसर गई अब जग ब्योहार ॥ ५ ॥
मगन होय देखत गुरु लीला ।
घट में निरखत बिमल बहार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया बनत बन आई ।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ७ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपने ।
राधास्वामी गुन गावत हर बार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३७ ॥

सुरतिया बुंद अंस ।
आज सिंध सँग करत बिलास ॥ १ ॥

गुरु दरशन कर हुई दिवानी ।
तज दई जग की आस ॥ २ ॥
तन मन धन दोउ हाथ लुटावत ।
सेव करत रहे गुरु के पास ॥ ३ ॥
मस्त हुई सुन सतगुरु बचना ।
घट में निरखत शब्द उजास ॥ ४ ॥
ध्यान धरत हिये प्रेम बढ़ावत ।
पाया सतगुरु चरन निवास ॥ ५ ॥
अधर चढ़त निस दिन सुत प्यारी ।
नभ में लखती जोत प्रकाश ॥ ६ ॥
गरज मृदंग सुनी धुन दोई ।
गुरु पद में जाय कीना बास ॥ ७ ॥
उमंग उमंग सुत आगे चाली ।
सतपुर मिली शब्द की रास ॥ ८ ॥
हरख हरख करे सतगुरु दरशन ।
धर चरनन पूरन बिस्वास ॥ ९ ॥
प्रेम सिंध राधास्वामी प्यारे ।
उन चरनन की हुई निज दास ॥१०॥

आरत करूं प्रेम से गहरी ।
अब हियरे बढ़त हुलास ॥११॥
उमंग उमंग चरनन लिपटानी ।
राधास्वामी गुन गाऊं निस बास ॥१२॥

॥ शब्द १३८ ॥

सुरतिया समझ गई ।
अब राधास्वामी मत निज सार ॥ १ ॥
चित से चेत किया गुरु सतसंग ।
शब्द का जाना भेद अपार ॥ २ ॥
आदि धाम से जो धुन आई ।
वही हुई सब की करतार ॥ ३ ॥
सब रचना की जान वही है ।
वही नूर और प्रेम की धार ॥ ४ ॥
जहां जहां यह धारा ठहरानी ।
मंडल बांध करी रचन नियार ॥ ५ ॥
शब्द रची तिरलोकी सारी ।
शब्द से फैली माया झार ॥ ६ ॥

पांचों तत्त और गुन तीनों।
शब्द रची सब रचन सम्हार ॥ ७ ॥
धुन का नाम आतमा होई।
शब्द रूप तू सुरत बिचार ॥ ८ ॥
मन माया संग हुई मलीनी।
इंद्रियन संग भरमी संसार ॥ ९ ॥
काम क्रोध बस दुख सुख भोगे।
त्रिय तापन संग हुई बीमार ॥१०॥
जब लग मिलें न गुरु धुर धामी।
फंसी रहे यह काल के जार ॥११॥
शब्द भेद दे पंथ लखावें।
घट में परखावें धुन धार ॥१२॥
राधास्वामी परम पुरुष निज धामी।
महिमां उनकी अगम अपार ॥१३॥
सुन सुन सुरत मगन होय मन में।
प्रीत लाय परतीत सम्हार ॥१४॥
धुन की डोरी पकड़ अधर में।
मन और सुरत चढ़ें धर प्यार ॥१५॥

सतगुरु संग बांध जुग चालें ।
काल कर्म से होवें न्यार ॥१६॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावे ।
मन का संग तज सूरत सार ॥१७॥
महासुन्न और भंवरगुफा चढ़ ।
पहुंच गई सतगुरु दरबार ॥१८॥
अलख अगम की धुन सुन पाई ।
राधास्वामी रूप लखा निज सार ॥१९॥
सतगुरु दया काज हुआ पूरा ।
सहज मिला मोहिं निज घर बार ॥२०॥
राधास्वामी मत की महिमा भारी ।
काल देस से जीव निकार ॥२१॥
अमर धाम पहुंचावें सतगुरु ।
तब होवे सच्चा निरवार ॥२२॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
तब भेटैं सतगुरु सच यार ॥२३॥
दया मेहर से जीव उबारें ।
सहज मिलावें सत करतार ॥२४॥

राधास्वामी गुन मैं छिन २ गाऊं।
शुकर करूं उन बारम्बार ॥२५॥

॥ शब्द १३९ ॥

सुरतिया भाग चली।
तज काल देस संसार ॥ १ ॥
मन इंद्री संग बहु दुख पाये।
भोगन संग रही बीमार ॥ २ ॥
त्रिय तापन में तपत रही नित।
कोइ न मिला जो करे उबार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दया मिली गुरु संगत।
सुनियां घर का भेद अपार ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनत मगनानी।
दीन हुई हिये उपजा प्यार ॥ ५ ॥
दया करी दिया शब्द उपदेशा।
धुन डोरी गह उतरूं पार ॥ ६ ॥
मगन होय सुर्त घट में चाली।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ७ ॥

शब्द शब्द पौड़ी पै चढ़ कर ।
पहुंची राधास्वामी धाम अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४० ॥

सुरतिया जाय बसी ।
धुर धाम गुरू के संग ॥ १ ॥
सतगुरु ने मोहिं बाट लखाई ।
कर्म भर्म सब कीन्हें भंग ॥ २ ॥
प्रीत सहित सुनती अनहद धुन ।
दूत हुए सब घट में तंग ॥ ३ ॥
दया हुई सुर्त अधर सिधारी ।
काल कर्म भी रह गए दंग ॥ ४ ॥
प्रेम धार घट अंतर उमगी ।
हरख रही अंग अंग ॥ ५ ॥
सुरत गई दौड़ी सतपुर में ।
धारा सतगुरु रंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
हो गई सब से आज असंग ॥ ७ ॥

॥ बचन १० प्रेम बिलास भाग तीसरा ॥

मुरलिया

चितावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

कोइ सुनो बचन सतगुरू के सार ॥ टेक ॥
मन इंद्री जग में भरमावें ।
इन से रहो हुशियार ॥ १ ॥
बिषयन से तुम होय उदासा ।
चलो गुरू की लार ॥ २ ॥
सतसंग करो बचन हिये धारो ।
कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सत पद का ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द का मारग धार ॥ ४ ॥
बिरह अंग ले करो कमाई ।
घट में सुन झनकार ॥ ५ ॥

दया मेहर राधास्वामी लेकर ।
उतरी भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोइ सुनो प्रेम से गुरू की बात ॥टेक॥
सेवा कर सतसंग कर उनका ।
और बचन उन हिये बसात ॥ १ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
मन और सूरत गगन चढ़ात॥ २ ॥
सुन सुन धुन मन होय रस माता ।
दिन दिन आनंद बढ़ता जात ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरू चरनन ।
हिये में दरशन छिन छिन पात ॥ ४ ॥
भाग नवीन जगै तेरा भाई ।
छिन २ गुन सतगुरू के गात ॥ ५ ॥
आरत कर हिये प्रेम बढ़ाओ ।
दया मेहर की पाओ दात ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज करें तेरा पूरा ।
सरन धार तब चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आज चलो विदेसन अपने देस
(पिया के देस) ॥टेक॥

या जग में पूरा सुख नाहीं।
फिर २ भोगो करम कलेश ॥ १ ॥
चलो २ नित काल पुकारे।
एक दिन तजना यह परदेस ॥ २ ॥
धन संपत कुछ संग न जावे।
छिन में छूटें यहां के ऐश ॥ ३ ॥
याते सोचो समझो प्यारी।
अबही सम्हालो अपनी वैस ॥ ४ ॥
सतगुरु खोज बांध जुग उनसे।
मन से त्यागो माया लेस ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धार हिये अंतर।
सुरत शब्द गह पहुंचो शेष ॥ ६ ॥
वहां से सतपुर चलो अधर चढ़।
सुरत धरे जहां हंसा भेस ॥ ७ ॥

राधास्वामी धाम गई अब निज घर ।
पाया परमानंद हमेश ॥ ८ ॥
अमर हुई दुख सुख सब छूटे ।
नित्त बिलास करै और ऐश ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज चलो पियारी अपने घर ॥ टेक ॥
जब से तुम परदेस सम्हारा ।
काल करम से यारी कर ॥ १ ॥
शब्द गुरू नित टेरत तोको ।
तू न सुने उन बानी चित धर ॥ २ ॥
माया ने बहु भोग उपाये ।
तू चेतन फंस रही संग जड़ ॥ ३ ॥
देह संग नित दुख सुख सहती ।
जनम मरन का डंड और कर ॥ ४ ॥
कहना मान पियारी मेरा ।
खोजो सतगुरू इस औसर ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत धरो उन चरना ।
उन संग बाट चलो अड़ बड़ ॥ ६ ॥

राधास्वामी मेहर से लेहिं उबारी ।
सरन धार उन चरन पकड़ ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

छोड़ करो गुरु का सतसंग आज ॥टेक॥
जो जग संग तुम रहो लिपटाई ।
परमारथ का होय अकाज ॥ १ ॥
जम के दूत सतावें तुम को ।
लख चौरासी नचावें नाच ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसंग ।
छोड़ जगत और कुल की लाज ॥ ३ ॥
प्रीत करो उन चरनन गहिरी ।
भक्ति भाव का पाओ साज ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ ।
त्रिकुटी जाय करो वहां राज ॥ ५ ॥
राधास्वामी परम पुरुष दाताता ।
करें मेहर से पूरन काज ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

कोइ सुनो हिये में गुरु संदेस ॥ टेक ॥
धार अधर से नित चल आवत ।
तू रहा लिपट करम के देस ॥ १ ॥
मोह नींद में जुग जुग सोता ।
भोगत रहे नित काल कलेश ॥ २ ॥
माया काल पड़े तेरे पीछे ।
दुखी रखत तोहि और दिल रेश ॥ ३ ॥
सतगुरु खोज उन बचन सम्हालो ।
छोड़ो जगत के भोग और ऐश ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की धारो जुगती ।
त्यागो मन से काम और तैश[अ] ॥ ५ ॥
प्रीत करो गाढ़ी गुरु चरनन ।
कपट छोड़ धर हंसा भेस ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया धार अब मन में ।
मिल चरनन से कर आदेस ॥ ७ ॥

(अ) तैश = क्रोध

॥ शब्द ७ ॥

आज तजो सुरत निज मन का मान॥टेक॥
इसी मान ने जग भरमाया ।
यही मान करे सब की हान ॥ १ ॥
अहंग बुद्ध परदा है भारी ।
निज सरूप गुरु कभी न दिखान ॥ २ ॥
मान मनी जिस घट में भरिया ।
हिये नैन वाके कभी न खुलान ॥ ३ ॥
याते सब को ऐसा चहिये ।
अपनी कसर नित निरखें आन ॥ ४ ॥
दीन होय गिर सतगुरु चरना ।
अपने को जानो अनजान ॥ ५ ॥
तब सतगुरु और साध दया कर ।
भेद सुनावें अधर ठिकान ॥ ६ ॥
प्रीत सहित उन सतसंग करना ।
रहनी उन अनुसार रहान ॥ ७ ॥
सुन उन बचन भाव जग त्यागो ।
सुरत शब्द का गहो निशान ॥ ८ ॥

दास अंग ले सेवा करना।
ताड़ मार उन सहो निदान ॥ ९ ॥
काम क्रोध को मन से तजना।
सील छिमा चित माहिं बसान ॥१०॥
जो कोई बचन कहें तोहि कड़ुवा।
और कोइ तान और दोष लगान ॥११॥
नीच निकाम समझ आपे को।
तो भी उन से मन न फिरान ॥१२॥
कोई बात से मन नहिं उलटे।
गुरु को नित तू गुरुही जान ॥१३॥
भय और भाव सदा उन राखो।
बचन सुनो उन चित से आन ॥१४॥
बचन अनुसार करो तुम करनी।
गहनी रहनी संग मिलान ॥१५॥
अस २ भाव लाय जो गुरु से।
उसको दें अपनी पहिचान ॥१६॥
उमंग उमंग करे सेवा निस दिन।
हरख हरख करे दरशन आन ॥१७॥

दिन दिन जागे प्रीत नवीना ।
धर परतीत करे उन ध्यान ॥१८॥
दीन होय मन बस में आवे ।
शब्द माहिं तब सुरत समान ॥१९॥
प्रेम धार नित घट में जारी ।
दिन २ अनुभव सहज जगान ॥२०॥
रहन गहन गुरमुख की गाई ।
गुरमुख होय सो ले पहिचान ॥२१॥
राधास्वामी मेहर रहे नित संगा ।
सहज २ पट अधर खुलान ॥२२॥
जोत निरख पहुंचे गगनापुर ।
सुन्न परे मुरली सुन तान ॥२३॥
सत्तनूर सतपुर जाय निरखे ।
अलख अगम के महल बसान ॥२४॥
वहां से धुर घर पहुंचे छिन में ।
राधास्वामी चरन परस मगनान ॥२५॥

॥ शब्द ८ ॥

आज करो गुरू संग प्रीत सम्हार॥टेक॥
मन इंद्री भोगन में अटके ।
जग जीवन संग अधिका प्यार ॥ १ ॥
जग की चाह बसे नित मन में ।
छिन छिन उसका करत बिचार ॥ २ ॥
ऐसे जीव करें जो सतसंग ।
बचन गुरू नहिं चित में धार ॥ ३ ॥
संसय भरम घसे उन मन में ।
जग और कुल की रीत न टार ॥ ४ ॥
सतसंगी अपने को कहते ।
गुरु भक्ती दई रीत बिसार ॥ ५ ॥
गुरु सतसंगी जो समझावें ।
हंसें निंद्या करें पुकार ॥ ६ ॥
यह जिव रहते दया से खाली ।
गुरु को धोखा देत लबार ॥ ७ ॥
उन को भी स्वामी परम दयाला ।
देर अबेर लगावें पार॥ ८ ॥

याते सच्ची भक्ती कीजे ।
सोच समझ कर धर गुरु प्यार ॥ ९ ॥
संत मता सब मत से ऊंचा ।
धुर घर का पहुंचावन हार ॥ १० ॥
सच्चा सीधा सहज अभ्यासा ।
सहज करे सच्चा उद्धार ॥११॥
सतसंग कर समझौती लीजे ।
संसय भरम को दूर निकार ॥१२॥
जगत बासना मन से तजना ।
जग जीवन की मत कर यार ॥१३॥
अनेक तरंग उठें इस मन में ।
उनको जस तस मन में मार ॥१४॥
प्रीत प्रतीत बसाओ हिये में ।
राधास्वामी नाम का कर आधार ॥१५॥
जहां २ प्रीत लगी अब तेरी ।
वहीं २ हुआ तेरा बंधन यार ॥१६॥
सहज हटाओ मन को वहां से ।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥१७॥

जब गुरु चरनन होय दृढ़ प्रीती।
सरन धार परतीत सम्हार ॥१८॥
सब से गुरु जब प्यारे होईं।
तब कुल मालिक होय दयार ॥१९॥
मेहर करें तुझ पर वे हर दम।
सुरत चढ़ावें नौ के पार ॥२०॥
इक दिन पहुंचावें धुर घर में।
राधास्वामी परम पुरुष दातार ॥२१॥

॥ शब्द ९ ॥

आज पकड़ो गुरु के चरन सम्हार ॥टेक॥
बिन गुरु तेरा और न कोई।
वोही हैं तेरे रखवार ॥ १ ॥
कब लग मन संग खाव झकोले।
कब लग भरमो जग की लार ॥ २ ॥
जगत भोग सब रोग पहिचानो।
इन की चाह मन से तज डार ॥ ३ ॥
दृढ़ परतीत धरो गुरु चरनन।
और बढ़ाओ दिन दिन प्यार ॥ ४ ॥

तेरा काज करेंगे वाही ।
गफ़लत तज अब हो हुशियार ॥ ५ ॥
घट में थिर होय करो कमाई ।
सुनो सुरत से धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
पहुंचावें तोहि धुर दरबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

कोइ चलो आज सतगुर की लार ॥टेक॥
जग जीवन का संग तियागो ।
गुर भक्तन से करो पियार ॥ १ ॥
धुर पद की कर मन परतीती ।
टेक पुरानी सब तज डार ॥ २ ॥
धुर पद है वह राधास्वामी ।
कुल मालिक समरथ दातार ॥ ३ ॥
उन चरनन में प्रीत लगाओ ।
राधास्वामी नाम जपो हर बार ॥ ४ ॥

सतसंग कर सब भरम निकालो।
ध्यान लगाओ सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
मन इंद्रियन को रोक अंदर में।
घट में परखो धुन की धार ॥ ६ ॥
जो अस करो अभ्यास प्रेम से।
राधास्वामी मेहर से लेहिं उबार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

कोइ परखो गुरू की लीला सार ॥टेक॥
सतसंग करो चेत कर निस दिन।
घट में करो अभ्यास सम्हार ॥ १ ॥
मन माया की चाल निरखना।
गुरू की मेहर परख हर बार ॥ २ ॥
जो सच्चा होय सरनी आवे।
तिसको सतगुरू लेहिं उबार ॥ ३ ॥
दिन दिन मौज दिखावें न्यारी।
काल करम रहें बाज़ी हार ॥ ४ ॥

मन और सूरत अधर चढ़ावें ।
अपना सहारा देकर प्यार ॥ ५ ॥
घट में लीला अजब दिखावें ।
धाम धाम की रचन नियार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
गोद बिठाय उतारें पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

कोइ झांको झंझरिया बिरह सम्हार ॥टेक॥

या जग में पूरन सुख नाहीं ।
सुद्ध करो तुम निज घरबार ॥ १ ॥
जनम जनम यहां दुख सुख सहना ।
छूटे नहीं काल का जार ॥ २ ॥
याते सतगुरु खोजो भाई ।
भेद लेव तुम घर का सार ॥ ३ ॥
मन इंद्री को रोको अंदर में ।
ध्यान करो गुरु प्रीत सम्हार ॥ ४ ॥

शब्द होत तेरे घट में हर दम ।
सुरत लगाय सुनो कर प्यार ॥ ५ ॥
सहज २ फिर चढ़ो अधर में ।
पहिले ताको तिल का द्वार ॥ ६ ॥
द्वारा फोड़ चलो आगे को ।
निरखो निरमल जोत उजार ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
सहज लगावें तुझ को पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

कोइ परसो चरन गुरु चढ़ गगना ॥ टेक ॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हालो ।
सतसंग में तुम नित जगना ॥ १ ॥
माया घात बचा कर चालो ।
यामें काल करै ठगना ॥ २ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाओ ।
शब्द जुगत में नित लगना ॥ ३ ॥

सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
दरस पाय मन हुआ मगना ॥ ४ ॥
द्वारा फोड़ अधर को चाली।
जोत रूप वहां नित तकना ॥ ५ ॥
काल करम दोउ रहे मुरझाई।
अब मोहिं रोक नहीं सकना ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय मगन होय बैठी।
राधास्वामी चरन माहिं पकना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

कोइ चलो उमंग कर सुन नगरी ॥टेक॥

सतसंग में अब तन मन देना।
शब्द पकड़ चलो गुरु डगरी ॥ १ ॥
सतगुरु से नित प्रीत बढ़ाना।
चरन सरन दृढ़ कर पकड़ी ॥ २ ॥
सोता मनुआं फिर उठ जागे।
धुन संग सुरत रहे जकड़ी ॥ ३ ॥

प्रेम पंख ले उड़ी गगन में ।
राधास्वामी बल से हुई तकड़ी ॥ ४ ॥
काल करम अब रहे मुरझाई ।
धुन रही सिर माया मकड़ी ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर पाया ।
अमर हुई चरनन लग री ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

चलो चढ़ोरी सुरत सुन सुन्न की धुन ।
अब छोड़ सकल मन के औगुन ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन छिन ।
राधास्वामी रूप धियाओ पुन पुन ॥ २ ॥
धुन शब्द सुनो घट में चुन चुन ।
गुरु महिमा गाय रहो खिन खिन ॥ ३ ॥
तज देव बिकारों को गिन गिन ।
तब माया काल से हो भिन भिन ॥ ४ ॥
गुरु मेहर करूं घट मन मंजन ।
नभ में लख जोत सुनूं घन घन ॥ ५ ॥

अभ्यास करूं घट में दिन दिन ।
धुन शब्द सुनूं हिये में झनझुन ॥६॥
धुर धाम गई राधास्वामी धुन सुन ।
अब हरख कहूं राधास्वामी धन धन ॥७॥

॥ शब्द १६ ॥

कोइ मिलो पुरुष से चल सतपुर ॥टेक॥
तीन लोक यह काल अस्थाना ।
चौथे लोक बसें सतगुर ॥ १ ॥
संत बिना कोइ वहां न जावे ।
वे पहुचावें तोहि घर धुर ॥ २ ॥
सेवा कर उन लेव रिझाई ।
प्रीत प्रतीत बसाओ उर ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करो कमाई ।
सतगुरु चल ले मारग तुर ॥ ४ ॥
माया बिघन न लागे कोई ।
नहिं व्यापे तोहि काल का जुर ॥५॥

सुन में जाय होय तू निर्मल ।
हंसन संग चुने तू दुर ॥ ६ ॥
सतपुर जाय मिले सतगुरु से ।
राधास्वामी दया या जग से मुर ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

कोइ चलो गुरू संग अगम नगर ॥टेक॥
जगत बासना मन से त्यागो ।
सतगुरु खोज उन चरन पकड़ ॥ १ ॥
समझ बूझ गुरु बचन सम्हालो ।
भेद पाय लो घर की डगर ॥ २ ॥
जो गुरु जुगत बतावें तुमको ।
नित्त कमाओ हिये प्यार धर ॥ ३ ॥
गुरु बल पांच दूत को पकड़ो ।
मन इंद्री को बांध जकड़ ॥ ४ ॥
जब घट में मन अस्थिर होवे ।
सुन सुन धुन सुर्त चढ़ै अधर ॥ ५ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह दृढ़ कर ।
इक दिन जाय बसो तुम निज घर ॥ ६ ॥

विरह का अंग

॥ शब्द १८ ॥

बोल री मेरी प्यारी मुरलिया ।
तरस रही मेरी जान (मुर०) ॥ १ ॥
सुन सुन धुन मन उमगत घट में ।
और सिथल हुए प्रान (मुर०) ॥ २ ॥
रस भरे बोल सुने जब तेरे ।
गया कलेजा छान (मुर०) ॥ ३ ॥
तन मन की सब सुद्ध बिसारी ।
धुन में चित्त समान (मुर०) ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया अधर चढ़ आई ।
सत पद दरस दिखान (मुर०) ॥ ५ ॥

भेद का अंग

॥ शब्द १९ ॥

आज बाजे मुरलिया प्रेम भरी ॥ टेक ॥

सतसंगी सब जुड़ मिल गावें।

सतसंगिन सब उमंग भरी ॥ १ ॥

प्रेम रंग रही भींज सुरतिया।

सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ २ ॥

झलक जोत और सूर प्रकाशा।

लख तन मन से होत छड़ी ॥ ३ ॥

निरमल होय चली ऊपर को।

सुन्न महासुन पार खड़ी ॥ ४ ॥

भंवरगुफा में सोहंग बंसी।

बाज रही मधुरी मधुरी ॥ ५ ॥

सत्त अलख और अगम परस कर।

राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

आज बाजै बीन सतपुर की ओर ॥टेक॥

सुन धुन सुरत हुई मस्तानी ।
गई भंवर चढ़ ऊपर दौड़ ॥ १ ॥

पुरुष दरस कर अति मगनानी ।
सनमुख हुई ले आरत जोड़ ॥ २ ॥

हंस सभी अब जुड़ मिल गावें ।
आरत की हुई धूम और शोर ॥ ३ ॥

प्रेम सिंध में आय समानी ।
मिट गया महाकाल का ज़ोर ॥ ४ ॥

यह पद मेहर दया से पाया ।
जब मिले राधास्वामी बंदीछोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

आज बाजै भंवर धुन मुरली सार ॥टेक॥

यह मुरली सतलोक से आई ।
सोहंग पुरुष किया बिस्तार ॥ १ ॥

जिन जिन सुनी आन यह बंसी ।
मोह रहे धर प्यार ॥ २ ॥
दूर हुए मान और अहंकारा ।
काल और महाकाल रहे हार ॥ ३ ॥
यह धुन कोइ बड़भागी पावे ।
जापर सतगुरु होयं दयार ॥ ४ ॥
मुरली की छाया धुन सुन कर ।
मोहे सब सुर नर और नार ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
ताहि सुनावें यह धुन सार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २२ ॥

आज बाजे सुन्न में सारंग सार ॥ टेक ॥
उठत मधुर धुन अमीरस भीनी ।
सुनत पिरेमी कोइ धर प्यार ॥ १ ॥
अजब धाम जहां सेत उजारा ।
खिल रही जहां वहां सदा बहार ॥२॥

तिरलोकी का मूल अस्थाना।
संतन का वही दसवां द्वार ॥ ३ ॥
ब्रह्म शब्द तिस नीचे जागा।
मूल नाद जहां धुन ओंकार ॥ ४ ॥
सूरज मंडल लाल प्रकाशा।
तिरलोकी का वही करतार ॥ ५ ॥
माया शब्द उठत तेहि नीचे।
जग में बिछाया जिस ने जार ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले भाग से।
सहज उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥
कर आरत उन हुई मगन में।
बैठी राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २३ ॥

आज गाजे गगन धुन ओअं सार ॥टेक॥
नाद धाम से यह धुन आई।
कीना जगत पसार ॥ १ ॥

ब्रह्म और पार ब्रह्म तिस नामा ।
तीन लोक में तिस उजियार ॥ २ ॥
सूक्ष्म पांच तत्त गुन तीनों ।
परघट हुए जस नूर की धार ॥ ३ ॥
घंटा संख शब्द उपजाये ।
माया फैली जग में झाड़ ॥ ४ ॥
यासे कोई न बचने पावे ।
बिन सतगुरु आधार ॥ ५ ॥
मैं निज भाग सराहूं अपना ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनो गगन धुन धर कर प्यार ॥टेक॥
श्याम कंज की राह अधर चढ़ ।
निरख जोत उजियार ॥ १ ॥
सहसकंवल दल घंटा बाजे ।
और सुनो वहां संख पुकार ॥ २ ॥

बंकनाल होय त्रिकुटी फोड़ो।
निरखो सूर उजियार ॥ ३ ॥
गरज मृदंग संग ओअं गाजे।
तिरलोकी का मूल अधार ॥ ४ ॥
बिना प्रेम कोई राह न पावे।
गुरु से पावे प्रेम पियार ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
शब्द पकड़ जावो घट पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

चढ़ सहस कंवल पद परस हरी ॥टेक॥
सुन सुन घंटा रीझ रही अब।
झलक जोत लख उमंग बढ़ी ॥ १ ॥
गुन तीनों यहां से उनपाने।
सत रज तम जिय धार बढ़ी ॥ २ ॥
माया ने किया बहुत बिस्तारा।
काल टेक सब जीव धरी ॥ ३ ॥

चार खान चौरासी धारा ।
यहां से हुई सब रचन खड़ी ॥ ४ ॥
पाप पुन्य का फल सब भोगें ।
पार न जावें वार रही ॥ ५ ॥
जिन को सतगुरु मिलें दया कर ।
सोई जीव भौसिंध तरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी मिले भाग से हम को ।
उन चरनन सुर्त जोड़ धरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २९ ॥

आज गाजे सुरतिया अधर चढ़ी ॥ टेक ॥
गुरु परताप चली अब घट में ।
सुरत शब्द की टेक धरी ॥ १ ॥
तिल अंतर लख सेत उजारी ।
झिल मिल जोती नज़र पड़ी ॥ २ ॥
बंकनाल होय गई त्रिकुटी में ।
मान मोह मद सकल हरी ॥ ३ ॥

काल दिया मोहिं अधिक भुलावा ।
गुरू टेक से नाहिं टरी ॥ ४ ॥
सुन में जाय सुरत हुई निर्मल ।
बाजत जहां सारंग किंगरी ॥ ५ ॥
भंवरगुफा होय सतपुर धाई ।
भरी अमीं से सुर्त गगरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन निहारे ।
हुई सुरत अब अजर अमरी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

कोई निरखो अधर चढ़ पिछली रात ॥टेक॥
अमीं धार पल पल हिये झिरती ।
घट में अति आनंद समात ॥ १ ॥
जोत उजार होत निज घट में ।
घंटा संख मधुर धुन गात ॥ २ ॥
हरख हरख मन उमंगत घट में ।
रस पीवत सुर्त अधर चढ़ात ॥ ३ ॥

माया काल तजत निज कौतुक।
छिन छिन हियरे प्रेम बढ़ात ॥ ४ ॥
सात्वकी रहन रहत अस औसर।
गुरु चरनन में लगन लगात ॥ ५ ॥
मेहर पाय सुर्त चढ़त अधर में।
गगन गुरू के दरशन पात ॥ ६ ॥
गरज गरज धुन ओअंग गाजे।
काल करम जहां रहे लजात ॥ ७ ॥
निर्मल होय चढ़ी ऊंचे को।
हंसन संग बिलास करात ॥ ८ ॥
धुन झनकार उठत जहां भारी।
नाचत गावत अति सुख पात ॥ ९ ॥
महासुन्न होय धसी गुफा में।
मधुर मधुर मुरली धुन आत ॥१०॥
सत्तपुरुष का रूप निहारा।
सत्त शब्द जहां बीन बजात ॥११॥
अलख अगम के पार पहुंच कर।
राधास्वामी चरनन टेका माथ ॥१२॥

तेज पुंज वह देस अनूपा ।
अद्भुत सोभा बरनी न जात ॥ १३ ॥
अगिनित सूर चंद्र परकाशा ।
किंगरे किंगरे रहे बसान ॥१४॥
दया मेहर जस राधास्वामी कीनी ।
महिमां उसकी को कह गात ॥ १५ ॥

प्रेम का अंग

॥ शब्द २८ ॥

आज लाई सुरतिया आरत साज ।
मन इंद्रियन से छिन छिन भाज ॥ १ ॥
उमंग जगाय चरन गुरु सेवत ।
जग जीवन की तज दई लाज ॥ २ ॥
सतसंगियन संग हिल मिल चालत ।
मन दर्पन को बहु विध मांज ॥ ३ ॥
सुरत शब्द ले भेद अपारा ।
चित दे सुनत गगन की गाज ॥ ४ ॥

सतगुरू पूरे दया करी अब ।
प्रेम भक्ति का दीना दाज ॥ ५ ॥
मगन होय गुरु के गुन गावत ।
अब हुआ मेरा पूरन काज ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया चढ़ी निज घट में ।
वहां बैठ अब भोगूं राज ॥ ७ ॥

॥ शब्द २९ ॥

आज आई सुरतिया भाव भरी ॥टेक॥

नैन कंवल का थाल बनाया ।
पलकन की वामें जड़ी छड़ी ॥ १ ॥
दृष्टी की जहां जोत जगाई ।
तिल दिवला में आन धरी ॥ २ ॥
शब्द गुरू संग आरत धारी ।
गावत सन्मुख आन खड़ी ॥ ३ ॥
काल और करम रहे थक नीचे ।
माया ममता सकल जरी ॥ ४ ॥

सुन में निरखत हंस बिलासा।
गुरु संग उड़ी ज्यों उड़त परी ॥ ५ ॥
सतपुर जाय करी फिर आरत।
धुन बीना जहाँ बजै मधुरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि अब डारी।
आरत कर उन चरन पड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३० ॥

आज गावे सुरत गुरु आरत सार ।टेक॥
प्रेम भरी गुरु सन्मुख आई।
तन मन दीना वार ॥ १ ॥
उमंग उमंग गुरु दरस निहारत।
बढ़त हरख और प्यार ॥ २ ॥
परमारथ अब मीठा लागा।
और किरत सब दई बिसार ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में आय पड़ी अब।
सतसंग करत हुई हुशियार ॥ ४ ॥

पी पी रस हिये में त्रिप्तानी ।
मिला सुरत को शब्द अधार ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर पाय घर चाली ।
सहज उतर गई भौजल पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

आज आई सुरतिया रंग भरी ॥ टेक ॥
मन चित का लिया थाल सजाई ।
प्रेम की जोत जगाय धरी ॥ १ ॥
उमंग उमंग कर आरत फेरत ।
सकल पसार से होय छड़ी ॥ २ ॥
हंस हंसनी होय इकट्ठे ।
गुरु सन्मुख सब आन खड़ी ॥ ३ ॥
आनंद छाय रहा आकाशा ।
शब्दन की अब लगी झड़ी ॥ ४ ॥
ताल मृदंग कींगरी बाजे ।
धूम धाम अब मची बड़ी ॥ ५ ॥

सुन सुन मुरली बीन सुहावन ।
सत्तलोक जाय सुरत अड़ी ॥ ६ ॥
निरख रही जहां बिमल प्रकाशा ।
चांद सूर की छुटी लड़ी ॥ ७ ॥
हरख हरख राधास्वामी गुन गावत ।
पल पल छिन छिन घड़ी घड़ी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

आज खेलूं कबड्डी घट में आय ॥टेक॥
तीसर तिल का पाला बनाया ।
दो दल घट में लिये जमाय ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम पुकारत धाऊं ।
बैरियन को लूं तुरत गिराय ॥ २ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने ।
काल बली को मारूं धाय ॥ ३ ॥
माया जाल तोड़ दूं छिन में ।
गुरु चरनन घट प्रेम जगाय ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया खेत को जीतूं ।
काल से लूं असवारी जाय ॥ ५ ॥
काम क्रोध मान और अहंकारा ।
निर्बल होय सब रहे लजाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम दुहाई फेरूं ।
फ़तह का झंडा खड़ा कराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

आज आई सुरत गुरु आरत धार ॥टेक॥
खोज लगावत सन्मुख आई ।
सुने बचन गुरु सार ॥ १ ॥
मगन हुई संसय सब भागे ।
दूर हुए सब भोग बिकार ॥ २ ॥
भेद पाय घट धुन में लागी ।
ध्यान धरत गुरु रूप निहार ॥ ३ ॥
हरख हरख करती सतसंगा ।
अंतर बाहर धर कर प्यार ॥ ४ ॥

उमंग उमंग सेवा नित करती ।
राधास्वामी चरनन तन मन वार ॥ ५ ॥
मन ने त्याग दई अब धावन ।
थिर होय बैठा शब्द सम्हार ॥ ६ ॥
भोग वासना तज दई सारी ।
चित हुआ निरमल चरन अधार ॥ ७ ॥
नित अभ्यास नेम से करती ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया भाग बड़ जागा ।
कस उन महिमां कहूं पुकार ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

कोइ सुने पिरेमी घट धुन सार ॥ टेक ॥
इंद्री भोग लगे सब फीके ।
मन आसा दई सकल बिसार ॥ १ ॥
गुरु दर्शन में लागा मनुआं ।
बचन सुनत हिये खिला गुलज़ार ॥ २ ॥

मेहर करी गुरु भेद बताया ।
निरख रही घट बिमल बहार ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनत धुन ओअंग ।
सुरत हुई तन मन से न्यार ॥ ४ ॥
सुन में जाय मिली हंसन से ।
निरखा सेत चंद्र उजियार ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी ।
पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ६ ॥
अलख अगम का झांक अस्थाना ।
राधास्वामी चरनन हुई बलिहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

मेरी लागी गुरू संग प्रीत नई ॥ टेक ॥
सतसंग कर गुरु सेवा लागी ।
सरधा सहित उपदेश लई ॥ १ ॥
जगत भाव भय मन में राखत ।
साधारन गुरु टेक गही ॥ २ ॥

मन इंद्री को मोड़ा नाहीं ।
भजन ध्यान अस करत रही ॥ ३ ॥
सतगुरु दया दृष्टि अब कीनी ।
घट में प्रीत जगाय दई ॥ ४ ॥
जग जंजाल भोग इंद्री के ।
चित से सहज बिसार दई ॥ ५ ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
शब्द की हुई परतीत सही ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया सुधारी ।
भौसागर के पार गई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

आज खेलै सुरत गुरु चरनन पास ॥टेक॥
न्यारा कर गुरु लिया अपनाई ।
चरन मिले निज सुख की रास ॥ १ ॥
नित गुरु दर्शन करे उमँग से ।
यही से मन में धरती आस ॥ २ ॥

गुरू सम और न प्यारा लागे।
गुरूही का नित करूं बिस्वास ॥ ३ ॥
छिन नहिं बिछड़ूं चरन गुरू से।
गुरूही के संग रहूं निस बास ॥ ४ ॥
गुरू पर तन मन धन सब वारूं।
गुरू दासन की हुई मैं दास ॥ ५ ॥
भोग बिलास जगत नहिं भावें।
जग से रहती सहज उदास ॥ ६ ॥
राधास्वामी से कुछ और न मांगूं।
दीजे मोहिं निज चरन निवास ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमा निस दिन गाऊं।
राधास्वामी सुमिरूं स्वांसो स्वांस ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

आज गावो गुरू गुन उमंग जगाय ॥टेक॥
दया धार धुर घर के बासी।
नर देही में प्रघटे आय ॥ १ ॥

निज घर का मोहिं पता बताया ।
मारग का दिया भेद लखाय ॥ २ ॥
भिन्न भिन्न निरनय मंज़िल का ।
मेहर से दीना खोल सुनाय ॥ ३ ॥
अपनी दया का दीन सहारा ।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ४ ॥
करम भरम की फांसी काटी ।
काल करम से लिया बचाय ॥ ५ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़ा कर हिये में ।
दीना घर की ओर चलाय ॥ ६ ॥
जिन यह भेद सुना नहिं गुरु से ।
सो रहे माया संग लिपटाय ॥ ७ ॥
जनम जनम वे दुख सुख भोगें ।
भरमें चार खान में जाय ॥ ८ ॥
दया मेहर का क्या गुन गाऊं ।
जस सतगुरु ने करी बनाय ॥ ९ ॥
किरपा कर मोहिं आपहि खींचा ।
और चरनन में लिया लगाय ॥ १० ॥

जो अस मेहर न करते मुझ पर।
काल जाल में रहत फंसाय ॥११॥
मैं बल हीन करूं क्या महिमां।
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाय ॥१२॥

॥ शब्द ३८ ॥

आज आई सुरतिया उमंग भरी ॥टेक॥
सुन गुरु बचन मगन मन होती।
नैन कंवल दृष्टि जोड़ धरी ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन।
आसा जग की आज जरी ॥ २ ॥
गुरु से लीना सार उपदेशा।
सुरत गगन की ओर चढ़ी ॥ ३ ॥
करम धरम सब पटक दिये हैं।
मन माया से खूब लड़ी ॥ ४ ॥
काल जाल डालें बहुतेरे।
गुरु बल हिये धर नहीं डरी ॥ ५ ॥

राधास्वामी लिया मोहिं अपनाई ।
भौसागर से आज तरी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज नाचै सुरतिया गगन चढ़ी ॥टेक॥

सुन सुन धुन सखियन को संग ले ।
ठुमक ठुमक पग अधर धरी ॥ १ ॥
ताल मृदंग बजै सारंगी ।
और मुरलिया रंग भरी ॥ २ ॥
जुड़ मिल सब नाचें और गावें ।
राग रागिनी प्रेम भरी ॥ ३ ॥
शब्दन की झनकार सुनावन ।
अमृत बरखा लगी झड़ी ॥ ४ ॥
हंस हंसिनी देख बिलासा ।
झुंड झुंड सब आन खड़ी ॥ ५ ॥
अस लीला राधास्वामी दिखाई ।
दया मेहर मोपै करी बड़ी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

आज सुनत सुरतिया घट में बोल ॥टेक॥

उमंग उमंग लागी अब घट में ।

करत धुनन संग चोल ॥ १ ॥

गुरु पै वार रही अब तन मन ।

चित से सुनती बचन अनमोल ॥ २ ॥

संत मता अति ऊंचा सीधा ।

दृढ़ कर पकड़ा शब्द अतोल ॥ ३ ॥

परमारथ में हित कर लागी ।

सुफल हुई नर देह अमोल ॥ ४ ॥

प्रीत जगत की निपट स्वारथी ।

देखी निज कर जांच और तोल ॥ ५ ॥

राधास्वामी मुझ पर हुए दयाला ।

दूर किये सब माया खोल ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

राधास्वामी चरन में मन अटका ॥टेक॥

गुरु के बचन रसीले लागे ।
जग से अब छिन छिन झटका ॥ १ ॥
करम धरम और जग ब्योहारा ।
सब को अब धर धर पटका ॥ २ ॥
इंद्री भोग और जगत पदारथ ।
सब का मेट दिया खटका ॥ ३ ॥
भेद पाय सुर्त लागी घट में ।
शब्द संग अब मन लटका ॥ ४ ॥
चरन सरन राधास्वामी धारी ।
काल करम को दिया झटका ॥ ५ ॥
सुरत चढ़ाय गगन में पहुंची ।
कर्मन का फूटा मटका ॥ ६ ॥
सतपुर दरस पुरुष का पाया ।
प्रेम रंग अब नया चटका ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर अस कीनी ।
खेल खिलाया मोहिं नट का ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

राधास्वामी चरन में सुर्त लागी ॥टेक॥

मोह जाल जंजाल तोड़ कर।
जग से अब छिन छिन भागी ॥ १ ॥

सुन गुरु बचन मगन हुआ मनुआं।
शब्द संग सूरत जागी ॥ २ ॥

संसय भरम अब गये नसाई।
करम धरम बिच दई आगी ॥ ३ ॥

काम क्रोध और लोभ बिकारा।
मान ईरखा दई त्यागी ॥ ४ ॥

सतगुरु चरनन प्यार बढ़ावत।
मन हुआ धुन रस अनुरागी ॥ ५ ॥

राधास्वामी सरन धार हिये अंतर।
मेहर दया उनसे मांगी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

राधास्वामी प्रीत हिये छाय रही ॥टेक॥

जब से स्वामी दर्शन कीने ।
छवि उनकी मन भाय रही ॥ १ ॥
उमंग उमंग सेवा में लागी ।
राधास्वामी दया नित पाय रही ॥ २ ॥
हित चित से करनी सतसंगा ।
नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ३ ॥
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा ।
गुरु सरूप हिये ध्याय रही ॥ ४ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।
घट में आरत गाय रही ॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला ।
चरनन सुरत लगाय रही ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

आज आई सुरतिया उमंग मल्हार ॥टेक॥

जगत भोग से कर बैरागा ।
तन मन धन गुरु चरनन वार ॥ १ ॥

जग जीवन का संग तियागा ।
सतसंग में लगी धर कर प्यार ॥ २ ॥
गुरु सरूप निरखत मोहा मन ।
घर बाहर की सुद्ध बिसार ॥ ३ ॥
बचन गुरु के प्यारे लागे ।
सेवा करत भाव हिये धार ॥ ४ ॥
सहज सुरत लागी अंतर में ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे मेहर कराई ।
सहज किया मेरा बेड़ा पार ॥ ६ ॥

बिनती का अंग

॥ शब्द ४५ ॥

आज मांगे सुरतिया भक्ती दान ॥ टेक ॥
त्रिय तापन संग बहु दुख पाये ।
फीका लगा जहान ॥ १ ॥
खोजत खोजत सतसंग पाया ।
मगन हुई गुरु सनमुख आन ॥ २ ॥

प्रेम सहित गुरु सेवा धारी।
गुरु सरूप का धारा ध्यान ॥ ३ ॥
दर्शन रस घट में नित लेती।
तन मन धन करती कुर्बान ॥ ४ ॥
शब्द जुगत नित पिरत कमानी।
धुन संग मन और सुरत लगान ॥ ५ ॥
नई प्रतीत प्रीत घट जागी।
सतगुरु की करती पहिचान ॥ ६ ॥
मेहर हुई सुर्त अधर सिधारी।
राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

आज मांगे सुरतिया गुरु का संग ॥ टेक ॥
मोह जाल में रही फंसानी।
नहिं जाने कुछ भक्ती ढंग ॥ १ ॥
खबर पाय राधास्वामी संगत की।
हरख रही अंग अंग ॥ २ ॥

औसर पाय मिली सतगुरु से ।
बचन सुनत हिये बढ़ी उमंग ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले जूझत मन से ।
त्यागत सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा ।
मारत काल निहंग ॥ ५ ॥
सुनत शब्द धुन चढ़त गगन पर ।
बाज रही जहां नित मिरदंग ॥ ६ ॥
सतपुर जाय मिली सतगुरु से ।
राधास्वामी चरनन धारा रंग ॥ ७ ॥

सरन का अंग

॥ शब्द ४७ ॥

राधास्वामी सरन निज कर धारी ॥ टेक ॥
भाग जगे राधास्वामी मोहिं भेटे ।
चरनन प्रीत लगी सारी ॥ १ ॥
निरख रही स्वामी रूप अनूपा ।
सोभा उसकी अति भारी ॥ २ ॥

मन और सुरत सिमट कर आये ।
छवि पर दृष्टि तनी न्यारी ॥ ३ ॥
हरख अधिक अब हिये समाया ।
चित हुआ चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥
इत से मोड़ अधर को चाली ।
घंटा संख धूम डारी ॥ ५ ॥
जोत निरख त्रिकुटी को धाई ।
खिल गई घट कंवलन क्यारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी ।
पहुंचाया सतगुरू बाड़ी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

राधास्वामी चरन दृढ़ कर पकड़े ॥टेक॥
सतसंग में चित जाय समाना ।
छोड़ दिये जग के झगड़े ॥ १ ॥
मन इंद्रियन बहु नाच नचाया ।
मेट दिये उनके रगड़े ॥ २ ॥

माया कीने बिघन अनेका ।
और दिखलाये बहु झगड़े ॥ ३ ॥
राधास्वामी बल मैं हिरदे धारा ।
गुरु ने किया मोहिं अब तकड़े ॥ ४ ॥
मोहिं दीन को आप सम्हारा ।
दूर कराये बिघन सगरे ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरन सरन मैं लीना ।
काल करम थक रहे मग रे ॥ ६ ॥

होली

॥ शब्द ४८ ॥

होली खेलै सुरतिया सतगुरु संग ॥ टेक ॥
अबीर गुलाल थाल भर लाई ।
भर भर डालत रंग ॥ १ ॥
सतसंगी मिल आरत लाये ।
गावें उमंग उमंग ॥ २ ॥
देख समां सब होत मगन मन ।
फड़क रहे अंग अंग ॥ ३ ॥

आनंद बरस रहा चहुं दिस में ।
दूर हुई अब सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से ।
सब को लगाया अपने अंग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

होली खेलै सुरत आज हंसन संग ॥टेक॥
घंटा संख मृदंग बजावत ।
चढ़ा प्रेम का रंग ॥ १ ॥
नैन नगर होय चढ़ी अधर में ।
तन से होय असंग ॥ २ ॥
झलक जोत और उमंग घटा की ।
निरखी छोड़ तरंग ॥ ३ ॥
गगन जाय रंग माट भराया ।
गुरु से खेली होय निशंक ॥ ४ ॥
धरन गगन बिच धूम मची अब ।
भींज रही अंग अंग ॥ ५ ॥

सुरत अबीर भरत अब सुन में ।
फाग रचाया उमंग उमंग ॥ ६ ॥
सरन सम्हारे चरन में पहुंची ।
धारा राधास्वामी रंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

मेरे उठी कलेजे पीर घनी ॥ टेक ॥
बिन दरशन जियरा नित तरसे ।
चरन ओर रहे दृष्टि तनी ॥ १ ॥
नित्त पुकार करूं चरनन में ।
दरस देव मेरे पूरन धनी ॥ २ ॥
घट का पाट खोलिये प्यारे ।
जल्दी करो हुई देर घनी ॥ ३ ॥
जब लग दरस न पाऊं घट में ।
तब लग नहिं मेरी बात बनी ॥ ४ ॥
हरख हुलास न आवे मन में ।
चिंता में रहे बुद्धि सनी ॥ ५ ॥

अब तो मेहर करो राधास्वामी।
चरनन की रहूं सदा रिनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

कोई जागे सुरत सुन गुरु बचना ॥टेक॥
मोह नींद में सब जिव सोते।
काम क्रोध संग नित पचना ॥ १ ॥
इंद्री भोग लगे अति प्यारे।
उनहीं में निस दिन खपना ॥ २ ॥
कोइ कोइ जीव फड़क या जग से।
संत चरन में करें लगना ॥ ३ ॥
देख व्योहार असार जगत का।
सहज सहज मन से तजना ॥ ४ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ावत।
सतसंग में निस दिन जगना ॥ ५ ॥
मन और सुरत प्रेम रंग भीने।
शब्द संग घट में रचना ॥ ६ ॥

सतगुरु ने जब दया बिचारी ।
पहुंची जाय सुरत गगना ॥ ७ ॥
वहां से चली अधर में प्यारी ।
राधास्वामी चरन जाय पकना ॥ ८ ॥

चितावनी

॥ शब्द ५३ ॥

कोइ भागे सुरत तज यह संसार ॥टेक॥
या जग में पूरन सुख नाहीं ।
खोज करो तुम निज घर बार ॥ १ ॥
निज घर है ब्रह्मांड के पारा ।
तीन लोक में काल पसार ॥ २ ॥
माया संग दुखी रहें सब जिव ।
कोई न जावे भौ के पार ॥ ३ ॥
सच्चा सुख है संत के देसा ।
याते चलो संत की लार ॥ ४ ॥
सतगुरु कर उन सेवा करना ।
प्रीत प्रतीत चरन में धार ॥ ५ ॥

वे दयाल तोहि भेद बतावें ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ ६ ॥
प्रीत सहित जब करो कमाई ।
तब जावो भौसागर पार ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करले ।
पावो उनकी मेहर अपार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

कोइ चेते सुरत जग देख असार ॥टेक॥
बाहरमुख पूजा नहिं भावे ।
यामें जीव भरम रहे भार ॥ १ ॥
करम धरम सब काल पसारा ।
यामें नित बढ़ता अहंकार ॥ २ ॥
सच्चा सतसंग खोजत पाया ।
वहां पाया सच्चा आधार ॥ ३ ॥
सुरत शब्द का भेद अपारा ।
सो सतगुरु दीना कर प्यार ॥ ४ ॥

दया मेहर ले करत कमाई।
देखत घट में मोक्ष दुआर ॥ ५ ॥
रस पावत मन अति हरखाना।
मगन हुई सुत सुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाला।
बेग उतारा भौजल पार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

कोइ जाने सुरत गुरु महिमां सार ॥टेक॥
सतसंग करे भाव से गुरु का।
तन मन से धर प्रेम पियार ॥ १ ॥
सेवा करके लाग बढ़ावे।
भजन करै नित सुरत सम्हार ॥ २ ॥
निंद्या अस्तुति चित नहिं धारै।
संतन की यह जुगत बिचार ॥ ३ ॥
इंद्री भोग तजत अब मन से।
करम भरम को दिया निकार ॥ ४ ॥

चित राखे गुरु चरनन माहीं ।
निस दिन पिअत अमीं रस सार ॥ ५ ॥
तब सतगुरु परसन्न होय कर ।
अंतर में दें पाट उघाड़ ॥ ६ ॥
अद्भुत खेल लखै घट माहीं ।
गुरु का अचरज रूप निहार ॥ ७ ॥
तब राधास्वामी की जाने महिमां ।
चरनन पर जावे बलिहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

आज मानो सुरत सतगुरु उपदेश ॥टेक॥
दीन अधीन रहो चरनन में ।
त्यागो मन से माया लेश ॥ १ ॥
उमंग सहित करो सतसंग आई ।
सुनो चित्त से देस संदेस ॥ २ ॥
सुरत लगाओ शब्द अधर में ।
सहज तजत चलो यह परदेस ॥ ३ ॥

यह तो देस काल का जानो ।
निज घर तुम्हरा सतगुरु देस ॥ ४ ॥
सदा आनंद बिलास जहां वहां ।
नहिं वहां दुख सुख काल कलेश ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया कुमत को त्यागो ।
सुमत धार धर हंसा भेस ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

कोई धारे गुरू के बचन सम्हार ॥टेक॥
मोह जाल में सब जग फंसिया ।
परमारथ की सुद्ध बिसार ॥ १ ॥
करम करें धर जग की आसा ।
रोग सोग संग रहें बीमार ॥ २ ॥
भरम रहे पिछली टेकन में ।
संत बचन नहिं सुनें गंवार ॥ ३ ॥
कोइ कोइ जीव होयं बड़ भागी ।
संतन से करें प्रीत सम्हार ॥ ४ ॥

सुन सुन बचन चित्त में धारें।
दीन होय लें जुगती सार ॥ ५ ॥
हित चित से जब करें कमाई।
अंतर में देखें उजियार ॥ ६ ॥
कर परतीत अब प्रीत बढ़ावें।
चरन सरन पर तन मन वार ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर से जबही।
बेग लगावें बेड़ा पार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

कोइ सुनो अधर चढ़ गुरु के बैन ॥टेक॥
संत चरन में रहे लौलीना।
घट में परखे उनकी कहन ॥ १ ॥
शब्द कमाई करे प्रेम से।
चित दे समझे घट की सैन ॥ २ ॥
मन और सुरत सिमट कर चालें।
खोलें चढ़ कर तीसर नैन ॥ ३ ॥

सेत उजास लखे घट माहीं ।
धुन घंटा सुन पावे चैन ॥ ४ ॥
जोत फाड़ फिर सुन्न समावे ।
बंकनाल धस जावे पैन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी गढ़ अब चढ़ कर पहुंची ।
काल करम का छूटा दैन ॥ ६ ॥
हरख सुनत अब धुन ओंकारा ।
भोर हुआ और मिट गई रैन ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया पार पद पाया ।
सुरत लगी निज घर सुख लैन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

कोइ गावे गुरू की महिमां सार ॥टेक॥
दया धार गुरू जग में आये ।
किया जीव उपकार ॥ १ ॥
निज घर का उन भेद सुनाया ।
राधास्वामी धाम अगम के पार ॥ २ ॥

घर चालन की जुगत बनाई ।
सुरत शब्द का मारग सार ॥ ३ ॥
काल देस से जीव निकारा ।
काट दिया माया का जार ॥ ४ ॥
करम भरम से लिया बचाई ।
चरन सरन दई किरपा धार ॥ ५ ॥
कोट जनम से भटका खाया ।
हुआ नहीं कभी जीव उधार ॥ ६ ॥
जब सतगुरु मोहिं मिले भाग से ।
तबही गई भौसागर पार ॥ ७ ॥
छिन छिन शुकराना करूं उनका ।
राधास्वामी प्यारे पतित उधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६० ॥

आज आई सुरतिया दर्द भरी ॥टेक॥
जगत भोग से होय उदासा ।
त्रिय तापन से अधिक डरी ॥ १ ॥

या जग में कहीं शांत न पाई ।
दुख सुख संसय अगिन जरी ॥ २ ॥
सत पद का कहीं भेद न मिलिया ।
सर्ब मतों में ढूंढ फिरी ॥ ३ ॥
खोजत मिले भाग से सतगुरु ।
सुन सुन बचन उन सरन पड़ी ॥ ४ ॥
सहज जुगत गुरु दीन बताई ।
मन की हुई अब डाल हरी ॥ ५ ॥
सुरत लगी अब चढ़ कर धुन में ।
काल करम घर पड़ी मरी ॥ ६ ॥
धावत गई सुन्न दस द्वारे ।
सुरत गगरिया प्रेम भरी ॥ ७ ॥
सतगुरु चरन परस सतपुर में ।
राधास्वामी से मिल आज तरी ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

कोइ गहो गुरू की सरन सम्हार ॥टेक॥

बहु दिन बीते समझ सोच में ।
अब तो दूतन संग तज डार ॥ १ ॥
इंद्रियन संग रहा बहुत दिवाना ।
मत भरमे अब उनकी लार ॥ २ ॥
सतगुरु महिमां कहत सुनत निन ।
मन नहिं माने बड़ा गंवार ॥ ३ ॥
सर्व समरथ राधास्वामी को कहता ।
हाज़िर नाज़िर कुल्ल करतार ॥ ४ ॥
बरतन में यह समझ न धारे ।
भूले भरमे बारम्बार ॥ ५ ॥
औरों को गुन औगुन धरता ।
निज प्रेरक की सुद्ध न धार ॥ ६ ॥
रूखा फीका होवत छिन में ।
राधास्वामी मौज क्यों दई बिसार ॥ ७ ॥
समझ यही अब मन में धारो ।
राधास्वामी हैं तेरे कुल्ल दातार ॥ ८ ॥
सब घट में हैं वेही प्रेरक ।
उन बिन और न कोइ दरबार ॥ ९ ॥

संत सतगुरू उनको जानो ।
राधास्वामी गुरू हैं अगम अपार ॥१०॥
उन बिन और न कोई करता ।
उनकी रज़ा में चलना यार ॥११॥
जो कुछ करें वही भल मानो ।
मसलहत उनकी वही बिचार ॥१२॥
काज करें तेरा वे हित से ।
काटें काल करम का जार ॥१३॥
तन मन सुरत के वेही सहाई ।
छिन छिन हैं तेरे वे रखवार ॥१४॥
प्रीत करो उन चरनन गहिरी ।
दीन ग़रीबी मन में धार ॥१५॥
राधास्वामी बल हिरदे में धारो ।
मन से और भरोस तज डार ॥१६॥
निरबल नीच जान अपने को ।
राधास्वामी ओटा गहो सम्हार ॥१७॥
दया भाव बरतो जीवन से ।
मान ईरखा देव बिसार ॥१८॥

इस बिध दास रहे जो रहनी।
पावे राधास्वामी दया अपार ॥१९॥
सुरत चढ़े छिन छिन ऊंचे को।
शब्द शब्द पौड़ी चढ़ पार ॥२०॥
राधास्वामी धाम पाय बिसरामा।
मगन होय निज रूप निहार ॥२१॥

॥ शब्द ६२ ॥

आज आई सुरत हिये उमंग बढ़ाय ॥टेक॥
मन इंद्री को रोकत घट में।
गुरु सरूप का ध्यान लगाय ॥ १ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत।
घट में अद्‌भुत दर्शन पाय ॥ २ ॥
धुन झनकार सुनत मन सरसा।
हिये में प्रीत नवीन जगाय ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करत नित कौतुक।
लीला देख अधिक हरखाय ॥ ४ ॥

गुरू दर्शन की महिमां भारी ।
अचरज सोभा बरनी न जाय ॥ ५ ॥
तन मन धन वारत चरनन पर ।
मस्त हुई निज आनंद पाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन पाय हुई निरभय ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

आज आई सुरत हिये भाव धार ॥टेक॥
सतसंगियन से हेल मेल कर ।
सतसंग करती चित्त सम्हार ॥ १ ॥
गुरू चरनन में प्रीत बढ़ावत ।
गुरू सरूप का ध्यान सम्हार ॥ २ ॥
शब्द सुनत घट में नभ द्वारे ।
मगन होत चढ़ गगन मंझार ॥ ३ ॥
ताल मृदंग बजे सारंगी ।
मुरली बीन सुनी झनकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
मेहर करी पद दीना सार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

कोइ धारो गुरु के चरन हिये ॥ टेक ॥
जग में छाय रहा तम चहुं दिस ।
सब जिव सहते ताप त्रिये ॥ १ ॥
निकसन की कोइ राह न पावें ।
सब जिव जाता है जम लिये ॥ २ ॥
जिन पर दया हुई धुर घर की ।
वही धारें गुरु शब्द जिये ॥ ३ ॥
गुरु का संग कर मन हुआ निर्मल ।
रस पावत अभ्यास किये ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत चढ़त चरनन पर ।
तन मन धन सब वार दिये ॥ ५ ॥
चरन पकड़ सुर्त चढ़त अधर में ।
मगन होन रस शब्द पिये ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया पार घर पहुंची ।
काल करम सब टार दिये ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

आज आई सुरत हिये प्रेम जगाय ॥टेक॥

दरशन करत भूल गई सुध बुध ।
सुरत रही चरनन अटकाय ॥ १ ॥
मगन हुई सुन धुन झनकारी ।
दृष्ट गई रस रूप भुलाय ॥ २ ॥
ऐसी लीला निरखत निस दिन ।
सुरत और मन ऊंचे को धाय ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई ।
गगन माहिं मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
सारंग मुरली अद्भुत बाजी ।
सतपुर में धुन बीन सुनाय ॥ ५ ॥
मेहर हुई कारज हुआ पूरा ।
राधास्वामी चरनन गई समाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

आज भीजे सुरत गुरू प्रेम रंग ॥ टेक ॥
उमंग भरी आई सतगुरू चरना।
वचन सुनत हुई आज निसंक ॥ १ ॥
जग का मोह त्याग दिया मन से।
दूत थके कर घट में जंग ॥ २ ॥
भोगन से चित हुआ उदासा।
मन इंद्री सूखे हुए तंग ॥ ३ ॥
गुरू दर्शन का भाव बढ़त नित।
और रही नहिं कोई उचंग ॥ ४ ॥
मन हुआ लीन शब्द रस पावन।
सुरत उड़न लगी जैसे पतंग ॥ ५ ॥
सहसकंवल होय त्रिकुटी धाई।
जहां गरजे गगन और बजे मृदंग ॥ ६ ॥
सुरत रंगीली चली ऊंचे को।
छूट गया अब सबही कुसंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी प्रीतम मिले अधर में।
लिपट रही सुन उमंग उमंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

कोइ करो प्रेम से गुरु का संग ।
मन से कपट और मान तियागो ।
प्रेमी जन का धारो ढंग ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत करो तुम ऐसी ।
जस माता संग पुत्र निसंक ॥ २ ॥
गुरु आज्ञा हित चित से मानो ।
सेवा करो तुम सहित उमंग ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करना ।
राधास्वामी नाम बसै अंग अंग ॥ ४ ॥
मन रहे नित दर्शन रस माता ।
सुरत भीज रहे शब्द के रंग ॥ ५ ॥
जग ब्योहार लगा अब कांचा ।
छोड़ दिया अब नाम और नंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्ट से हेरा ।
बिरोधी हो गये आपहि तंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

कोइ जोड़ो गुरू से नाता आय ॥टेक॥

मात पिता भाई सुत तिरिया ।
इन के संग मन रहा बंधाय ॥ १ ॥

नातेदार मित्र और बिरादरी ।
इन से भी करी प्रीत बनाय ॥ २ ॥

पंडित बैद हकीम महाजन ।
इन से भी हित करता आय ॥ ३ ॥

संत साध और गुरु भक्तन से ।
भाव न लावे निंद्या गाय ॥ ४ ॥

उनकी दया दृष्टि जो पावे ।
भौजल तर निज घर को जाय ॥ ५ ॥

सब जीवन को चहिये ऐसा ।
जैसे बने तैसे मन समझाय ॥ ६ ॥

संत चरन में सरधा लावें ।
भाव से दर्शन करें बनाय ॥ ७ ॥

वे हैं गुरु सतगुरु आचारज ।
जीव दया उन हृदय समाय ॥ ८ ॥

स्वारथ परमारथ कारज में ।
दया मेहर से करें सहाय ॥ ९ ॥
जम से जीव को लेहिं बचाई ।
मेहर से दें सुख घर पहुंचाय ॥१०॥
याते चेतो समझो भाई ।
सतगुरु चरनन सरधा लाय ॥११॥
राधास्वामी नाम सम्हारो ।
दीन चित्त नित उन गुन गाय ॥१२॥
दुनिया के कारज सब करते ।
परमारथ की सुद्ध न लाय ॥१३॥
यह ग़फ़लत बहु दुख दिखलावे ।
फिर पछतावा काम न आय ॥१४॥
याते अबही चेतो भाई ।
जीव काज अपना करो आय ॥१५॥
थोड़ी बहुत कुछ करो कमाई ।
सरन पड़ो राधास्वामी आय ॥१६॥
तब वे दया करें निज अपनी ।
जीव को तेरे लेहिं बचाय ॥१७॥

॥ शब्द ६९ ॥

कोइ करो गुरु संग हेत सम्हार ॥टेक॥

सांचा मीत गुरू को जानो ।
कपट छोड़ कर उन से प्यार ॥ १ ॥

और सभी स्वारथ के मीता ।
परमारथ का कोई न यार ॥ २ ॥

समझ समझ चलना इस जग में ।
ठगियन से रहना हुशियार ॥ ३ ॥

उमंग सहित करो सतसंग गुरू का ।
बचन सुनो और हिरदय धार ॥ ४ ॥

प्रीत प्रतीत धरो उन चरनन ।
सुरत शब्द मारग लो सार ॥ ५ ॥

करो कमाई घट में निस दिन ।
शब्द सुनो निरखो उजियार ॥ ६ ॥

या बिध दिन दिन होत सफाई ।
सुरत चढ़ै फिर घट के पार ॥ ७ ॥

राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला ।
अपनी दया से करें जीव उधार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७० ॥

आज हुई सुरत गुरु चरन अधीन ॥टेक॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
मन और सुरत हुए दोउ लीन ॥ १ ॥
सहज सहज स्रुत चढ़त अधर में।
धुन रस गुरू मेहर कर दीन ॥ २ ॥
जगत भाव अब मन से त्यागा।
सुरत हुई गुरु चरनन दीन ॥ ३ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारी।
हारे काल करम गुन तीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन भक्ति हुई गाढ़ी।
सुरत लगी अब जस जल मीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

आज आई सुरतिया उमंग जगाय ॥टेक॥
आरत करन चहत सतगुरु की।
हिये में भाव और प्रेम बढ़ाय ॥ १ ॥

दर्शन करत हरख रही मन में ।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ २ ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
आनंद अधिक रहा बरसाय ॥ ३ ॥
हरख हरख राधास्वामी गुन गावें ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाय ॥ ४ ॥
चहुं दिस राधास्वामी होत पुकारा ।
पिता प्यारे पिया प्यारे सब मिल गाय ॥ ५ ॥
उमंग उमंग गुरु आरत गावें ।
धूम धाम कुछ बरनी न जाय ॥ ६ ॥
ऐसा समा बंधा इस औसर ।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
सब को दिया निज प्रेम अधिकाय ॥ ८ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीत चरन में ।
काल करम अब रहे मुरझाय ॥ ९ ॥
शब्द धार का भेद जना कर ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ १० ॥

दीन होय स्रुत लागी चरनन।
राधास्वामी लिया निज गोद बिठाय ॥११॥

॥ शब्द ७२ ॥

जाग री मेरी प्यारी सुरतिया।
गुरू चरनन में लाग री॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

भूल भरम में बहु दिन बीते।
अब उठ जग से भाग री॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥

दुर्लभ दर्शन मिले भाग से।
नैन कंवल गुरू ताक री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥

तिल अंतर सुर्त जोड़ अधर चढ़।
सुन ले अनहद राग री॥ मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥

सहसकंवल होय धाय गगन पर ।
मारो काला नाग री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ४ ॥

सुन्न में जाय हुई अब निर्मल ।
छूटी संगत काग री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी दीनदयाल मेहर से ।
दीना तोहि सुहाग री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

निज घर अपने चाल री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ टेक ॥

माया फैली जग में भारी ।
जित जावे तित काल री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ १ ॥

काल कर्म बहु फंद लगाये।
चहुं दिस फैला जाल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ २॥

निकसन चाहो तो अबही निकसो।
चलो गुरू के नाल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ३॥

कोई मीत नहीं है तेरा।
तजो मोह धन माल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ४॥

प्रीत प्रतीत धरो गुरु चरनन।
वे काटें दुख साल री॥ मेरी प्यारी
सुरतिया॥ ५॥

सुरत शब्द मारग ले चालो।
राधास्वामी नाम हिये पाल री॥
मेरी प्यारी सुरतिया॥ ६॥

॥ शब्द ७४ ॥

खेल गुरू संग आज री मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ टेक ॥
उमंग सहित आओ चरनन में ।
भक्ति भाव ले साज री॥मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ १ ॥
दिन दिन हिये में प्रेम बढ़ावो ।
छोड़ो जग का पाज री॥मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धावो ।
तख़्त बैठ कर राज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ३ ॥
सुन्न में हरख मिलो हंसन से ।
मंगल गा और नाच री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ४ ॥
सतगुरु चरन जाय लिपटानी ।
पाया भक्ती दाज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी अंग लगाया मेहर से।
सिर पर राखा ताज री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७५ ॥

करो गुरू संग प्यार री
मेरी भोली सुरतिया ॥ टेक ॥
माया संग जग माहिं फंसानी।
तीन पांच हुए यार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ १ ॥
भोग दिखाय लुभाया तुझ को।
काल हुआ बरियार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ २ ॥
होय हुशियार करो सत संगत।
बचन गुरू हिये धार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ ३ ॥

गुरु से पावो दान प्रेम की ।
चरनन पर बलिहार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ ४ ॥

शब्द कमाई करो उमंग से ।
घट में देख बहार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ ५ ॥

धुन की डोरी पकड़ अधर चढ़ ।
लखो जाय पद सार री ॥ मेरी भोली
सुरतिया ॥ ६ ॥

दया मेहर ले आगे चालो ।
राधास्वामी चरन निहार री ॥ मेरी
भोली सुरतिया ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७६ ॥

आवो गुरु दरबार री
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ टेक ॥

जगत अगिन में क्यों तू जलती ।
न्हावो सीतल धार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ १ ॥
सतसंग कर गुरु का हित चित से ।
जग भय भाव बिसार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ २ ॥
बिरह अनुराग धार हिये अंतर ।
तन मन चरनन वार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ३ ॥
नाम दान सतगुरु से लेकर ।
करनी करो सम्हार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ४ ॥
बिमल प्रकाश लखो घट अंतर ।
सुन अनहद झनकार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार हिये अपने ।
कर ले जीव उपकार री ॥ मेरी प्यारी
सुरतिया ॥ ६ ॥

॥ बचन ११ प्रेम बहार भाग पहिला ॥

बहार

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरू दिन दिन बढ़ती प्रीत ॥टेक॥
समझ गुरू गत मत अगम अपार ।
धार रही मन में दृढ़ परतीत ॥ १ ॥
गुरू छबि निरख हुआ मन मगन ।
बचन सुनत नित हरखत चीत ॥ २ ॥
उमंग उमंग सेवत गुरू चरना ।
भाव सहित पावत गुरू सीत ॥ ३ ॥
दया मेहर गुरू छिन छिन निरखत ।
दृढ़ कर चरन सरन अब लीत ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति धारा अब जागी ।
त्याग दई मनमुखता रीत ॥ ५ ॥

गुरू को जाना अब सच यारा ।
जग में नहिं कोइ सच्चा मीत ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन अधारी ।
निज घर चाली भौजल जीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

दरस गुरू हियरे उठत उमंग ॥ टेक ॥
बिकल मन नहिं पावत सुख चैन ।
उठावत छिन छिन नई उचंग ॥ १ ॥
तोड़ जग जाल छोड़ ब्योहार ।
करन चाहे कोइ दिन गुरू का संग ॥ २ ॥
तड़प रही निस दिन पिया के बियोग ।
काल नित करत भजन में भंग ॥ ३ ॥
लहर जिय में उठती हरदम ।
गुरू से मिल धारूं उन रंग ॥ ४ ॥
करो प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय ।
बसाओ प्रेम मेरे अंग अंग ॥ ५ ॥

मोह जग मोहिं न व्यापे आय।
सिखाओ ऐसा भक्ती ढंग ॥ ६ ॥
भींज रहूं प्रेम रंग सारी।
सुरत मेरी उड़े गगन जस चंग ॥ ७ ॥
उमंग कर राधास्वामी बचन हिये धार।
छोड़ देउं जग का नाम और नंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मान मद त्याग करो गुरु संग ॥टेक॥
जब लग सजनी मान न छोड़ो।
तब लग रहो तुम तंग ॥ १ ॥
कर्म भर्म जब लग नहिं छूटें।
नहिं धारो गुरु रंग ॥ २ ॥
बैर ईरषा नित्त मनावे।
करन रहो तुम सब से जंग ॥ ३ ॥
याते कहना मान पियारी।
सीखो भक्ती ढंग ॥ ४ ॥

दीन होय गुरु सरनी आओ ।
चित से चेत करो सतसंग ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हालो ।
धुन में सुरत लगाओ उमंग ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करो अस कोइ दिन ।
प्रेम बसे तुम्हरे अंग अंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
होयं करम सब भंग ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सरन गुरू गहो हिये धर प्यार ॥टेक॥
सतसंग करो नित्त तुम आई ।
बचन गुरू सुनो होय हुशियार ॥ १ ॥
मारग का ले भेद गुरू से ।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ २ ॥
गुरू का ध्यान धरो तुम घट में ।
परखत चलो मेहर की धार ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन ।
भोग वासना देव बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री का संग न करना ।
यह भरमावें जग की लार ॥ ५ ॥
मोह जाल में फंसो न भाई ।
गुरमुख अंग सदा रहो धार ॥ ६ ॥
सर्व समरथ राधास्वामी प्यारे ।
काज करें तेरा दया विचार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

त्याग चल सजनी माया देस ॥ टेक ॥
तीन लोक में काल बियापा ।
सब जिव भोगें करम कलेश ॥ १ ॥
निकसन की कोइ राह न पावें ।
छोड़ न सकते माया लेस ॥ २ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
बिरथा काहे बितावो बेस ॥ ३ ॥

सतसंग कर उन जुगत कमावो ।
सुरत शब्द का ले उपदेश ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुरु की संग लें ।
सुरत शब्द में करो प्रवेश ॥ ५ ॥
धर परतीत उन सरन सम्हालो ।
काल करम की जाय न पेश ॥ ६ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावो ।
सुरत धरे तब हंसा भेस ॥ ७ ॥
सतपुर जाय काज हुआ पूरन ।
राधास्वामी को अब करूं आदेश ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

पकड़ गुरु चरन चलो भौपार ॥टेक॥
यह भौसागर काल अस्थाना ।
माया की बहे परबल धार ॥ १ ॥
करम तरंग उठावत छिन छिन ।
भोग रोग संग जीव बीमार ॥ २ ॥

आनै कहूं सुनाय सबन को ।
मत भरमो तुम जग की लार ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो हित चित से ।
जो चाहो सच्चा उद्धार ॥ ४ ॥
दीन होय ले गुरु उपदेशा ।
शब्द सुनो तुम सुरत सम्हार ॥ ५ ॥
सतगुरु रूप ध्यान धर हिये में ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ ६ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर मन में ।
काटो काल करम का जार ॥ ७ ॥
प्रीत सहित अस करो कमाई ।
राधास्वामी दें तोहिं पार उतार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ ॥

डगर मेरी रोक रहा मन जार ॥ टेक ॥
इंद्रियन संग यह हुआ दिवाना ।
भरम रहा भोगन की लार ॥ १ ॥

नित नई तरंग उठावत छिन छिन ।
जग में बहावत सूरत धार ॥ २ ॥
समझ बूझ कुछ चित नहिं धारे ।
ढीठ हुआ मन निपट गंवार ॥ ३ ॥
मेरी कहन नेक नहिं माने ।
सरन गहूं सतगुरु दरबार ॥ ४ ॥
जो निज मेहर करें गुरु अपनी ।
तब यह मन हो जावे यार ॥ ५ ॥
परमारथ की रीत समझ कर ।
नित्त कमावे उसकी कार ॥ ६ ॥
उलट जगत से पलटे घट में ।
मगन होय सुन धुन झनकार ॥ ७ ॥
तजत पिंड रस पियत अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

लिपट गुरु चरन प्रेम संग आज ॥टेक॥

उमंग उमंग सतसंग कर उनका ।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ १ ॥
बिरह अनुराग छाय रहा घट में ।
छोड़ दई कुल जगकी लाज ॥ २ ॥
दरशन कर गुरु नैन कंवल तक ।
धुन सुन जाय सुरत नभ भाज ॥ ३ ॥
सेवा करत बढ़त हिये प्रीती ।
त्रिकुटी चढ़ भोगे सुर्त राज ॥ ४ ॥
करत बिलास बिमल हंसन संग ।
मन माया का छोड़ा पाज ॥ ५ ॥
भंवरगुफा पहुंची गुरु लारा ।
सोहंग शब्द रहा जहां गाज ॥ ६ ॥
सत्तनाम सतपुरुष रूप लख ।
प्रेम भक्ति का पाया दाज ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम गई सुर्त सज के ।
आज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

जगत तोहि क्यों लागा प्यारा ॥ टेक ॥
निज घर भूल भरम रही जग में।
करम करत धारत भारा ॥ १ ॥
मन इंद्रियन संग यारी ठानी।
दुख भोगत भोगन लारा ॥ २ ॥
निकसन की कोइ जुगत न जानी ।
सतसंग नहिं लागा प्यारा ॥ ३ ॥
अब तो चेत समझ तू हे मन।
सतगुरु बचन हिये धारा ॥ ४ ॥
दीन होय गुरु चरन गहो अब।
सुरत शब्द मारग धारा ॥ ५ ॥
नित अभ्यास करो हित चित से।
जग से होय छिन छिन न्यारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन धार दृढ़ हिये में।
तुरत करें भौजल पारा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

चरन गहे जग से हुई न्यारी ॥ टेक ॥

उमंग सहित गुरु सन्मुख आई ।
बचन सुनत हिये गुलज़ारी ॥ १ ॥

दर्शन करत फूल रही मन में ।
ध्यान धरत खिली फुलवारी ॥ २ ॥

मगन हुई ले शब्द उपदेशा ।
सुनत रही घट झनकारी ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन छिन ।
तन मन धन गुरु पै वारी ॥ ४ ॥

शब्द कमाई करत उमंग से ।
चरन सरन गुरु हिये धारी ॥ ५ ॥

नित्त नवीन विलास निरख घट ।
जग भय भाव तजत सारी ॥ ६ ॥

राधास्वामी दया चढ़त निज घट में ।
सुरत गई भौजल पारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरू क्यों नहिं धारे प्रीत ॥ टेक ॥
होय अनजान फंसा जग मांहीं ।
मन माया की धारी रीत ॥ १ ॥
दुख सुख में भरमत रहे निस दिन ।
काल करम की ऐसी नीत ॥ २ ॥
ताते प्यारे मैं समझाऊं ।
सतसंग बचन सुनो धर चीत ॥ ३ ॥
गुरू चरनन में लाग बढ़ावो ।
जुगत कमावो धर परतीत ॥ ४ ॥
करम काट निज घर पहुंचावें ।
शब्द सुनावें अगम अजीत ॥ ५ ॥
मन माया से पीछा छूटे ।
सतगुरू चरनन रहो मिलीत ॥ ६ ॥
सोता भाग बड़ा अब जागा ।
मिल गया राधास्वामी धाम पुनीत ॥७॥

॥ शब्द १२ ॥

चेत कर क्यों न चलो गुरु साथ ॥टेक॥
मन माया संग रहे बंधानी ।
भोगन में अति कर दुख पात ॥ १ ॥
जगत बासना तपन उठावत ।
कर्मन में रहे नित भरमात ॥ २ ॥
जनम मरन का फेर न छूटे ।
चौरासी में ग़ोते खात ॥ ३ ॥
सतगुरु बचन सुनो चित देकर ।
प्रीत सहित उन जुगन कमात ॥ ४ ॥
रस पावे घट में कोइ दिन में ।
धीरे धीरे लगन बढ़ात ॥ ५ ॥
मन और सुरत चेत कर चालें ।
धुन डोरी गह अधर चढ़ात ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
सरन धार उन चरन समात ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सजन प्यारे मन की कहन न मान ॥टेक॥

यह जग में तोहि बहु भरमावे ।

गुरु भक्ती में करता हान ॥ १ ॥

डावां डोल रखे तेरे चित को ।

दुख सुख चिंता संग भुलान ॥ २ ॥

कारज मात्र रखो जग आसा ।

मान ईरषा तजो निदान ॥ ३ ॥

गहिरी प्रीत करो गुरु चरनन ।

सुरत शब्द में नित्त लगान ॥ ४ ॥

गुरु का भय और भाव बसावो ।

गुरु सरूप का धारो ध्यान ॥ ५ ॥

सहज २ तब मन बस आवे ।

दीन ग़रीबी चित्त बसान ॥ ६ ॥

सुरत रंगीली प्रेम सिंगारी ।

चढ़े अधर करे अमृत पान ॥ ७ ॥

राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी ।

चरनन में दें ठौर ठिकान ॥ ८ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सुरत प्यारी जग में क्यों अटकी ॥टेक॥
यह तो देस तुम्हारा नाहीं।
भोगन संग यहां भटकी ॥ १ ॥
मन इंद्री का संग तियागो।
सुरत करो अब सुन तट की ॥ २ ॥
गुरु दयाल से ले उपदेशा।
धुन संग सुरत रहे लटकी ॥ ३ ॥
झांको चढ़ कर गगन अटारी।
करमन की फूटे मटकी ॥ ४ ॥
गुरु पद परस मगन होय चित में।
वहां से सुरत अधर सटकी ॥ ५ ॥
गुरु दयाल बिन कौन करावे।
यह करनी अब निज घट की ॥ ६ ॥
काल करम से छूट छुड़ाया।
माया ममता दई पटकी ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई।
खबर जनाई मोहिं धुर पट की ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सजन प्यारे जड़ सँग गांठी खोल ॥टेक॥

दीन होय सतसंग कर गुरु का ।
लौ लगाय सुन घट में बोल ॥ १ ॥
मन और सुरत खिलें धुन सुन कर ।
सुफल होय नर देह अमोल ॥ २ ॥
दिन दिन घट में आनंद पावे ।
माया की छूटे सब चौल ॥ ३ ॥
तब सतसंग की महिमां जाने ।
सतगुरु बचन सही कर तोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार सुत प्यारी ।
चढ़ कर झूले गगन हिंडोल ॥ ५ ॥
अधर चढ़त सतगुरु गुन गावत ।
पाय गई सतशब्द अतोल ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मिला पद सारा ।
अकह अपार अनाम अडोल ॥ ७ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सुरत प्यारी मन संग क्यों भरमाय॥टेक॥

कर्म धर्म और तीरथ मन्दिर ।
काल दिया अस जाल बिछाय ॥ १ ॥

इस में जीव घेर लिये सारे ।
निज घर की कोइ राह न पाय ॥ २ ॥

मन मूरख इंद्रियन संग बंधा ।
भोगन में रहे नित्त भुलाय ॥ ३ ॥

छोड़ भोग और तोड़ जाल को ।
सतसंग सतगुरु करो बनाय ॥ ४ ॥

बचन सुनो उन देकर काना ।
सुरत शब्द की कार कमाय ॥ ५ ॥

प्रीत प्रतीत करो उन चरनन ।
सेवा करो नित भाव जगाय ॥ ६ ॥

मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
मन और सुरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥

काल कर्म का फंदा काटें ।
रस पावे सूरत घर जाय ॥ ८ ॥

जो यह काम करी नहिं अबही ।
दुख भोगो फिर २ पछताय ॥ ९ ॥
ताते अबही कहना मानो ।
सतगुरु संग चलो घर धाय ॥१०॥
राधास्वामी सरन गहो हित चित से ।
मेहर से दें सब काज बनाय ॥११॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरत प्यारी मन से यारी तोड़ ॥टेक॥
इसकी प्रीत बहुत दुख देवे ।
जैसे बने इस का संग छोड़ ॥ १ ॥
भोगन में यह नित भरमावे ।
काल कर्म का बाढ़े ज़ोर ॥ २ ॥
सतगुरु खोज करो उन सतसंग ।
दीन होय चित चरनन जोड़ ॥ ३ ॥
भाव सहित ले शब्द उपदेशा ।
घट में सुन नित अनहद घोर ॥ ४ ॥

प्रीत सहित गुरु रूप धियावो ।
भागें घट के सबही चोर ॥ ५ ॥
दर्शन पाय मगन होय मन में ।
उमंग चढ़े सुर्त घट में दौड ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर दृष्ट करें जबही ।
छूटै छिन में मोर और तोर ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरत प्यारी झांकी घट में आय ॥टेक॥
नैनन माहिं डगर निज घर की ।
धुन संग चालो सुरत लगाय ॥ १ ॥
भर्म रही जुग २ बाहरमुख ।
तन मन संग नित दुख सुख पाय ॥ २ ॥
अब के चेत लखो घट भेदा ।
नरदेही को सुफल कराय ॥ ३ ॥
सतगुरु संग करो घर प्यारा ।
शब्द जुगत ले नित्त कमाय ॥ ४ ॥

जैसे बने तैसे सरनी आवो।
राधास्वामी दें तेरा भाग जगाय ॥५॥
मन और सुरत चढ़ें धुन सुन कर।
घट में अद्भुत खेल दिखाय ॥ ६ ॥
काल हद्द से परे चढ़ा कर।
राधास्वामी दें निज घर पहुंचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अधर चढ़ सुनो शब्द की गाज ॥टेक॥
शब्द धार घट में नित जारी।
उमंग सहित सुनो चित दे आज ॥ १ ॥
बिन गुरु घट में राह न पावे।
मिल उन से कर अपना काज ॥ २ ॥
सतसंग कर सेवा कर उनकी।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ ३ ॥
दीन होय रल मिल सतसंग में।
साधन का जहां जुड़ा समाज ॥ ४ ॥

कर्म भर्म तज कर गुरु आरत ।
जग का छोड़ी भय और लाज ॥ ५ ॥
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें ।
प्रेम भक्ति का दे कर दाज ॥ ६ ॥
काल देश तज सतपुर जावे ।
अगम लोक चढ़ भोगे राज ॥ ७ ॥
राधास्वामी दरस पाय हरखानी ।
दया मेहर का पहरा ताज ॥ ८ ॥

॥ शब्द २० ॥

सत्त पद खोज मिलो घट आय ॥टेक॥
माया ने जो रचना कीन्ही ।
उपजे बिनसे थिर न रहाय ॥ १ ॥
सतपद है महासुन्न के पारा ।
संतन किया जहां बासा जाय ॥ २ ॥
सतपुर और राधास्वामी धामा ।
महिमा उनकी कही न जाय ॥ ३ ॥

यह घट भेद मिले सतगुरु से ।
सतसंग कर उन सरन समाय ॥ ४ ॥
दीन चित्त होय ले उपदेशा ।
शब्द जुगत रहो नित्त कमाय ॥ ५ ॥
दया मेहर से सुरत चढ़ावें ।
भौसागर के पार पराय ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम बसै जाय प्यारी ।
अमर होय पर्म आनंद पाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अधर चढ़ परख शब्द की धार ॥टेक॥
गुरु दयाल तोहिं मरम लखावें ।
बचन सुनो उन हिये धर प्यार ॥ १ ॥
बिरह अंग ले कर अभ्यासा ।
खोज करो तुम घट धुन सार ॥ २ ॥
गुरु सरूप को अगुआ करके ।
धुन सुन चलो कंज के पार ॥ ३ ॥

सहसकंवल में घंटा बाजे ।
गगन माहिं सुन धुन ओंकार ॥ ४ ॥
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न पर ।
भवरगुफा मुरली झनकार ॥ ५ ॥
सत्त शब्द का धर कर ध्याना ।
सत्तलोक धुन बीन सम्हार ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार निशाना ।
राधास्वामी प्यारे का कर दीदार ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

दीन दिल आई सुरत गुरु पास ॥टेक॥

दरशन करत फूल रही मन में ।
बचन सुनत हिये ज्ञान हुलास ॥ १ ॥
सतसंग करत प्रीत नई जागी ।
दिन दिन बढ़त चरन बिस्वास ॥ २ ॥
सुरत शब्द का भेद अमोला ।
पाय दया गुरु हुई निज दास ॥ ३ ॥

मन और सुरत लगे अब घट में ।
धुन संग करते नित्त बिलास ॥ ४ ॥
सतगुरु महिमां कस कहुं गाई ।
दूर किये सब जम के त्रास ॥ ५ ॥
करम भरम और संसय सोगा ।
काट दिये दिया चरनन बास ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल परम गुरु दाता ।
पूरन करी मेरे मन की आस ॥ ७ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सरन गुरु आई सुरत धर प्यार ॥टेक॥
दुखित होय जग से अलसानी ।
छोड़ दई मन जम की कार ॥ १ ॥
जग जीवन संग प्रीत घटावत ।
गुरु को जाना अब सच यार ॥ २ ॥
प्रेमी जन संग हेल मेल कर ।
सतसंग गुरु का करत सम्हार ॥ ३ ॥

वचन सुनत हिये प्यार बढ़ावत ।
सेव करत मन तज अहंकार ॥ ४ ॥
प्रीत सहित ध्यावत गुरु रूपा ।
उमंग सहित सुनती धुन सार ॥ ५ ॥
घट में निरख नवीन बिलासा ।
परख रही गुरु मेहर अपार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन परस घर आई ।
गावत उन गुन बारम्बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

भाव धर करत सुरत गुरु सेव ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न सांचा ।
याते सरन गही गुरु देव ॥ १ ॥
दूर करें गुरु अपनी मेहर से ।
संसे भरम और अहमेव ॥ २ ॥
मैं अति दीन नीच करमन की ।
हे गुरु चरन सरन मोहिं देव ॥ ३ ॥

भौजल धार बहे अत गहिरी ।
तुम बिन को मेरी नइया खेव ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल बचाय काल से ।
मोहि निरबल अपना कर लेव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

उमंग कर धरत सुरत गुरु ध्यान ॥टेक॥
गुरु छबि देख मगन हुई मन में ।
निरख रही उन अचरज शान ॥ १ ॥
प्रीत बढ़त छिन छिन चरनन में ।
त्याग दिये सब मन के मान ॥ २ ॥
नित नई सेव करत अब गुरु की ।
चरनन पर जाती कुरबान ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन पर बल बल जावत ।
छिन छिन वारत तन मन प्रान ॥ ४ ॥
राधास्वामी २ गावत हरदम ।
प्रेम भक्ति का पाया दान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

अधर चढ़ सुनी सरस धुन कान ॥टेक॥

मन और सुरत साध कर नन में ।

सम चित होय धरा गुरु ध्यान ॥ १ ॥

मोह राग जग भोग निकारा ।

तोड़ दिये सब मन के मान ॥ २ ॥

घंटा संख रहे बज नभ में ।

काल पुरुष का जहां दीवान ॥ ३ ॥

जगमग होत जोत उजियारा ।

तिस पर सूरज लाल दिखान ॥ ४ ॥

सुन्न में जा धोये सब कल मल ।

मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान ॥ ५ ॥

वहां से भी फिर आगे चाली ।

सतपुर सुनी बीन धुन आन ॥ ६ ॥

सत्तपुरुष की आज्ञा लेकर ।

राधास्वामी धाम बसान ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

आज घिर आये बादल कारे।
गरज गरज घन गगन पुकारे ॥ १ ॥
रिम झिम बरसत बूंद अमीं की।
बिजली चमक घट नैन निहारे ॥ २ ॥
चहुं दिस बरखा होवत भारी।
भींज रही सुत सुन झनकारे ॥ ३ ॥
उमंग उमंग सुत चढ़त अधर में।
निरख रही घट जोत उजारे ॥ ४ ॥
घंटा संख धूम अब डाली।
बंकनाल धस हो गई पारे ॥ ५ ॥
गुरु दरशन कर अति हरखानी।
पहुंची जाय सुन दस द्वारे ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस कर।
राधास्वामी अचरज दरस निहारे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २८ ॥

आज बरसत रिम झिम मेघा कारे ॥टेक॥

कोयल मोर बोल रहे बन में ।

पपिया टेरत पिउ पिउ प्यारे ॥ १ ॥

सुन सुन बोल बिकल भइ बिरहिन ।

तड़पत बिन पिया दरस अधारे ॥ २ ॥

पिया प्यारे बसें मेरे देस अधर में ।

मैं तो पड़ी मृतु देस उजाड़े ॥ ३ ॥

कासे कहूं बिपत मैं जिय की ।

बिन गुरु कौन करे निरवारे ॥ ४ ॥

संत रूप धर राधास्वामी प्यारे ।

आन मिले मोहिं लीन मिलारे ॥ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरत प्यारी झूलत आज हिंडोल ॥टेक॥

सतगुरु प्रीतम आप झुलावें ।

गरज गगन अनहद धुन बोल ॥ १ ॥

सखी सहेली जुड़ मिल गावें ।

राधास्वामी महिमां अगम अतोल ॥ २ ॥

अद्भुत सोभा राधास्वामी धारी ।
सकल सभा रही देख अडोल ॥ ३ ॥
मैं बड़ भाग कहूं क्या अपना ।
राधास्वामी कीनी मेरी सुरत अनमोल॥४॥
राधास्वामी आरत सब मिल धारी ।
सुफल हुई नर देह अमोल ॥ ५ ॥
राधास्वामी गत मत अति कर भारी ।
कौन कहे उन महिमां खोल ॥ ६ ॥

॥ बचन ११ प्रेम बहार भाग दूसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

सुरत मेरी प्यारे के चरनन पड़ी ॥टेक॥
जगे भाग गुरु सन्मुख आई ।
त्रिय तापन से अधिक डरी ॥ १ ॥
राधास्वामी छवि निरखत मन मोहा ।
सेवा में रहूं नित्त खड़ी ॥ २ ॥
प्रीत बढ़त छिन छिन अब घट में ।
माया ममता सकल जरी ॥ ३ ॥
धुन रस पाय हुई मतवाली ।
शब्दन की अब लगी झड़ी ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमां कस कह गाऊं ।
चरन सरन गह आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रीत गुरु चरनन काहे न लाय ॥ टेक ॥

मन माया के संग लिपटाना ।
भोगन में रहा चित लुभाय ॥ १ ॥
नर देही की सार न जानी ।
फिर औसर ऐसा नहिं पाय ॥ २ ॥
याते अबही समझो चेतो ।
साध संग करो मन हुलसाय ॥ ३ ॥
शब्द भेद ले करो कमाई ।
धुन संग मन और सुरत चढ़ाय ॥ ४ ॥
दिन दिन आनंद घट में पावो ।
लो अस अपना भाग जगाय ॥ ५ ॥
राधास्वामी दीन दयाल कृपाला ।
इक दिन दें तोहिं पार लगाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दरस गुरु मनुआं क्यों न खिले ॥ टेक ॥
धुन हरदम तेरे घट में होती ।
भेद पाय घर क्यों न चले ॥ १ ॥

प्रीत बिना कुछ काज न होई ।
गुरु सतसंग में क्यों न रले ॥ २ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
गुरु सेवा में क्यों न पिले ॥ ३ ॥
निरमल निश्चल चित होय तेरा ।
शब्द संग घट घाट खुले ॥ ४ ॥
चरन सरन गह राधास्वामी ध्यावो ।
मेहर होय निज धाम मिले ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

आज मेरे मनुआं गुरु संग चल ॥टेक॥
उमंग सहित दरशन कर गुरु का ।
दीन होय सतसंग में रल ॥ १ ॥
गुरु सरूप का ध्यान सम्हारो ।
राधास्वामी नाम जपो पल पल ॥ २ ॥
मन बैरी से जीती बाज़ी ।
धार हिये में गुरु का बल ॥ ३ ॥

काल करम की पेश न जावे ।
मार निकालो माया दल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें ।
दूर करावें सब कलमल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

चरन गुरू तन मन क्यों नहिं देत ॥टेक॥
प्रीत लाय नित करो साध संग ।
गुरु के बचन सुनो कर हेत ॥ १ ॥
मन इंद्रियन संग रहा भुलाई ।
भोगन में सुख छिन छिन लेत ॥ २ ॥
इंद्री भोग रोग सम जानो ।
इन का संग तज चित से चेत ॥ ३ ॥
घट में निस दिन करो कमाई ।
सुरत शब्द संग मन को रेत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
श्याम तजत पद पावे सेत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

चरन गुरू मनुआं काहे न दीन ॥टेक॥
जग संग रह क्या करी कमाई ।
जीव काज कोइ जतन न कीन ॥ १ ॥
धन सम्पत संग रहा अभिमानी ।
पुत्र और पाप भार सिर लीन ॥ २ ॥
सोच करो और समझ सम्हारो ।
सरन गहो गुरू होय अधीन ॥ ३ ॥
धुन की धार पकड़ निज घट में ।
सुरत चढ़ावो जस जल मीन ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सतपुर जाय सुनो धुन बीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

जगत संग मनुआं सदा मलीन ॥टेक॥
काम क्रोध मद नित भरमावें ।
कुमत साथ करे फिरत कमीन ॥ १ ॥

तिरिया सुत धन मोह फंसाना ।
जगत बड़ाई में चित दीन ॥ २ ॥
भोगन में रहे सदा अधीना ।
निज करता की सुद्ध न लीन ॥ ३ ॥
अपनी मौत की याद न लावे ।
पाप पुन्न में भेद न कीन ॥ ४ ॥
फल पावे नित दुख सुख भोगे ।
घर जाने की बाट न चीन ॥ ५ ॥
सतगुरु खोज भेद ले घर का ।
जुगत कमावो धार यक़ीन ॥ ६ ॥
प्रेम अंग ले लागो घट में ।
सुरत चढ़ा पियो सार अमीं ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
भौ सागर से सहज तरीन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सरन गुरु प्रानी क्यों नहिं ले ॥टेक॥

माया संग रहा बहुत भुलाना ।
सतसंग में अब चित दे रे ॥ १ ॥
भाव सहित गुरु सेवा धारो ।
चरनन में तन मन धन दे ॥ २ ॥
सतगुरु रूप ध्यान हिये धारो ।
छिन छिन दूर हटो जग से ॥ ३ ॥
शब्द संग सुत गगन चढ़ावो ।
दाग़ छुटें तब कल मल के ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
पार उतारें भौजल से ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

चरन गुरु हिये में रही बसाय ॥टेक॥
जग की आस वासना त्यागी ।
सतसंगत में रही चित लाय ॥ १ ॥
गुरु के बचन अमी की धारा ।
उमंग सहित नित पियत अघाय ॥ २ ॥

शब्द संग नित करत अभ्यासा ।
रस पावत सुत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥
दया मेहर कुछ बरनी न जाई ।
छिन छिन अपना भाग सराय ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमा किस बिध गाऊं ।
मुझ अनाथ को लिया अपनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

दरस गुरु निस दिन करना सही ॥टेक॥
जो तन से गुरु संग न पावे ।
ध्यान धार चित चरन पई ॥ १ ॥
निरमल होय चित गुरु रंग भींजे ।
घट में नित आनंद लई ॥ २ ॥
मन और सुरत उमंग कर घट में ।
चढ़त अधर धुन डोर गही ॥ ३ ॥
अस गुरु दया परख कर घट में ।
जागी प्रीत प्रतीत नई ॥ ४ ॥

राधास्वामी परम गुरू सुख दाता ।
निज चरनन की सरन दई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

चरन गुरू मनुआं हो जावो दीन ॥टेक॥
भोगन में क्यों उमर गवाँता ।
बल पौरुष नित होते छीन ॥ १ ॥
बिन गुरु चरन ठिकाना नाहीं ।
मायासंग नित रहत मलीन ॥ २ ॥
छोड़ उपाध रलो सतसंग में ।
चरन पकड़ सतगुरू परबीन ॥ ३ ॥
गुरू दयाल जी दया बिचारें ।
निरमल करें मन सुरत अलीन ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे अधर चढ़ावें ।
राधास्वामी चरनन जाय बसीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ध्यान गुरू हिये में धरना ज़रूर ॥टेक॥

मन और सुरत सिमट रस पावें ।
देख रही सत नूर ॥ १ ॥
नभ की ओर चढ़त स्रुत बिरहन ।
बाजे जहां नित अनहद तूर ॥ २ ॥
करम धरम सब भरम पसारा ।
देखा जग परमारथ कूड़ ॥ ३ ॥
दया हुई काटा जम जाला ।
निरभय हुआ घट में मन सूर ॥ ४ ॥
चरन सरन गह बैठी सूरत ।
राधास्वामी कीना कारज पूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

धार नर देह किया क्या आय ॥टेक॥
सत करतार का मरम न चीन्हा ।
मन माया संग रहा लिपटाय ॥ १ ॥
धन और मान भोग आधीना ।
कुटम्ब संग नित प्यार बढ़ाय ॥ २ ॥

दुरलभ औसर बाद गंवावत ।
जीव काज की सुध नहिं लाय ॥ ३ ॥
भूल भरम तज चेत पियारे ।
सतसंग करो नित्त तुम आय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन गह अबकी ।
जस तस अपना काज बनाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज गुरु सतसंग क्यों न करे ॥टेक॥
नर देह पाय रहे क्यों भूला ।
बचन चित्त में क्यों न धरे ॥ १ ॥
सरन धार कर शब्द अभ्यासा ।
भौ सागर से आज तरे ॥ २ ॥
मन इंद्रियन संग सहजहि छूटे ।
माया ममता सकल जरे ॥ ३ ॥
घट में निरखे बिमल बिलासा ।
शब्द डोर गह सुरत चढ़े ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया भरोसे हिये धर ।
पिंड ब्रह्मंड के पार पड़ै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

आज मन सिक्खा भक्ति कमाय ॥टेक॥
जगत संग कुछ लाभ न पावै ।
दुख सुख में क्यों बैस बिताय ॥ १ ॥
अटक भटक तज कर गुरु संगा ।
बचन सुनो उन चित दे आय ॥ २ ॥
स्वारथ के संगी सब जानो ।
गुरु सम हितकारी नहिं पाय ॥ ३ ॥
घर की राह जुगत चलने की ।
मेहर से दें तोहि भेद जनाय ॥ ४ ॥
सुन उन बचन मान उन कहना ।
घट में धुन संग सुरत लगाय ॥ ५ ॥
चरन सरन गह पार सिधारो ।
राधास्वामी २ निस दिन गाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

वचन गुरू मनुआं लो आज मान ॥टेक॥
संसारी जीवन का संग कर ।
क्यों तू गुरू से धरता मान ॥ १ ॥
जो तू प्यारे मान न छोड़े ।
परमारथ की होवे हान ॥ २ ॥
याते चेतो समझो भाई ।
दीन होय गुरु सन्मुख आन ॥ ३ ॥
दया करें निज वचन सुनावें ।
हिये में प्रीत प्रतीत बसान ॥ ४ ॥
जुगत बता अभ्यास करावें ।
घट में धुन संग सुरत लगान ॥ ५ ॥
चरन सरन दे अधर चढ़ावें ।
राधास्वामी चरनन जाय समान ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सुरत मेरी गुरु संग हुई निदान ॥टेक॥

प्रीत प्रतीत दई चरनन में ।
गुरु ने लिया मोहिं आप सम्हाल ॥ १ ॥
कर सतसंग बुद्ध हुई निरमल ।
कर्म भर्म दिये आज निकाल ॥ २ ॥
उमंग सहित लागूं घट धुन में ।
ध्याऊं सतगुरु रूप बिशाल ॥ ३ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊं ।
हार रहा अब काल कराल ॥ ४ ॥
घट में निरखूं बिमल बिलासा ।
बचन सुनूं नित अजब रसाल ॥ ५ ॥
चरन सरन गह हुई निचिंती ।
राधास्वामी प्यारे हुए दयाल ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सजन संग मनुआं कर आज प्रीत ॥टेक॥
छोड़ कुसंग करो सतसंगा ।
भक्ति भाव की धारो रीत ॥ १ ॥

गुरु संग निस दिन नेह बढ़ावो ।
बचन सुनो हिये धर परतीत ॥ २ ॥
उमंग सहित कर घट अभ्यासा ।
शब्द पकड़ घर जावो मीत ॥ ३ ॥
गुरु बल धार हिये में अपने ।
काल करम की तोड़ो नीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावें ।
जावो निज घर भौजल जीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आज चलो मनुआं घर की ओर ॥टेक॥
निज घर का ले भेद गुरू से ।
जल्दी चालो घट में दौड़ ॥ १ ॥
तन मन इंद्री सुरत समेटो ।
भोगन से अब नाता तोड़ ॥ २ ॥
धर परतीत धरो गुरु ध्याना ।
काल करम का टूटे ज़ोर ॥ ३ ॥

मन और सूरत अधर चढ़ावो ।
शब्दन का जहां हो रहा शोर ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समावो ।
घट के सबही परदे फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

जगत भय लज्या तज देव मीत ॥टेक॥
कपट छोड़ कर सतसंग गुरु का ।
धारो मन में गुरु की नीत ॥ १ ॥
जग जीवन संग हेत न करना ।
गुरु चरनन में लावो प्रीत ॥ २ ॥
चरन सरन गह जुगत कमावो ।
राधास्वामी की धर हिये परतीत ॥ ३ ॥
प्रेमी जन से हेल मेल कर ।
सीखो भक्ती ढंग और रीत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत धारो ।
राधास्वामी चरन बसावो चीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

हाल जग देखो दृष्टी खोल ॥टेक॥
सब जग जात चला छिन छिन में।
कोई वस्तु यहां नहीं अडोल ॥ १ ॥
याते निज घर बाट सम्हालो।
सुन सुन घट में अनहद बोल ॥ २ ॥
गुरु से भेद राह का पावो।
चलने की लो जुगत अमोल ॥ ३ ॥
प्रेम अंग ले सुरत चढ़ावो।
माया की अब डालो रोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में।
सहज चलो धुर धाम अबोल ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जांच कर त्यागो भोग असार ।टेक॥
माया ने सब भोग रचाये।
अमृत संग मिलाया खार ॥ १ ॥

जीव अजान फंसे आय उन में।
फिर फिर भरमें जग की लार ॥ २ ॥
बिमल प्रेम रस चाखा चाहो।
सतगुरु संग करो धर प्यार ॥ ३ ॥
शब्द जुगत ले सुरत चढ़ावो।
मन इँद्रियन को रोको झाड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीनदयाल मेहर से।
सहज उतारें भौजल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥ टेक ॥
दुखी होय हट कर या जग से।
गुरु सतसंग में आन अड़ी ॥ १ ॥
मगन होय धारी गुरु जुगती।
तीसर तिल में सुरत भरी ॥ २ ॥
शब्द संग नित करे बिलासा।
करम भरम से आज टरी ॥ ३ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़त गुरु चरनन ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्ट अब कीन्ही ।
चरन सरन गह आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

परख कर छोड़ो माया धार ॥टेक॥
भोगन का छन जाल बिछाया ।
जीव बहे सब उनकी लार ॥ १ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।
उनकी ओटा गहो सम्हार ॥ २ ॥
सतसंग कर धारो उन ध्याना ।
हिरदे में उन रूप निहार ॥ ३ ॥
पुष्ट होय चालें मन सूरत ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन अब हिये बसावो ।
मेहर से लेवें जीव उबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरू संग चलना घर की बाट ॥ टेक ॥
बिन सतगुरु कोइ पार न जावे।
भौसागर का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
बचन सुनो उन समझ सम्हारो।
करम भरम सब जड़ से काट ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले करो कमाई।
तब छूटे यह औघट घाट ॥ ३ ॥
ऐसा औसर फिर नहिं पावे।
अब सौदा कर सतगुरु हाट ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया से सुरत चढ़ावें।
खोलें घट का बज्र कपाट ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

छोड़ चल सजनी माया धाम ॥ टेक ॥
निज घर तेरा संत के देसा।
भाग चलो तज क्रोध और काम ॥ १ ॥

संत चरन में धार पिरीती ।
भेद लेव उनसे निज नाम ॥ २ ॥
सुरत सम्हार सुनो धुन घट में ।
पियो अमीं रस जाम ॥ ३ ॥
गुरू की दया ले अधर चढ़ावो ।
पहुंचो त्रिकुटी धाम ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पार उतारें ।
निज घर में देवें विस्राम ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरू संग प्रीत करो मेरे वीर ॥ टेक ॥
निज घर भेद गुरू बतलावें ।
बाट चलो उन संग धर धीर ॥ १ ॥
सुरत शब्द बिन जाय न पारा ।
और सकल झूठी तदबीर ॥ २ ॥
धर परतीत कमाओ जुगती ।
दूर हटे तब तन मन पीर ॥ ३ ॥

सुन सुन धुन सुर्त अधर सिधारे।
पहुंचे जाय सरोवर तीर ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सतपुर में।
पाया पद अति गहिर गंभीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

भाव संग गुरू दर्शन कीजे ॥ टेक ॥
जो मन में रहे कपट समाना।
प्रेम रंग नहिं सुर्त भीजे ॥ १ ॥
काम त्याग सत भक्ति कमावो।
प्रेम दान गुरू से लीजे ॥ २ ॥
मन और सुरत चढ़ें असमाना।
माया बल छिन छिन छीजे ॥ ३ ॥
गुरु की मेहर परख हिये अंतर।
चरनन में तन मन दीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम की सोभा भारी।
निरख निरख सूरत रीझे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

प्रीत संग गुरु सेवा धारो ॥ टेक ॥

अचरज भाग जगा गुरु भेंटे ।

चरनन पर तन मन वारो ॥ १ ॥

बचन सुनो और दरस निहारो ।

करम भरम सबही टारो ॥ २ ॥

प्रीत सहित गुरु ध्यान सम्हारो ।

घट में लो आनंद भारो ॥ ३ ॥

शब्द संग सुर्त गगन चढ़ावो ।

काल जाल छिन में जारो ॥ ४ ॥

राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में ।

उतर जाव भौजल पारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

भाव संग पकड़ गुरु चरना ॥ टेक ॥

काल करम तोहि नित भरमावें ।

छुटे न चौरासी फिरना ॥ १ ॥

अब के दाव पड़ा तेरा सजनी ।
भटक छोड़ गह गुरु सरना ॥ २ ॥
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें ।
सुन सुन धुन घट में चढ़ना ॥ ३ ॥
घंटा संख सुने जाय नभ में ।
वहां से सुरत गगन भरना ॥ ४ ॥
सतगुरु दया गई दस द्वारे ।
हंसन संग केल करना ॥ ५ ॥
सत्तपुर्ष का दर्शन कर के ।
राधास्वामी चरन सुरत धरना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

प्रीत संग गहो गुरू सरना ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न तेरा ।
सकल संग चित से तजना ॥ १ ॥
बुध बिचार सब धोखा जानो ।
मन इंद्री संग दुख सहना ॥ २ ॥

सतगुरु हैं सच्चे हितकारी ।
उन संग भौसागर तरना ॥ ३ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा ।
मन और सुरत अधर भरना ॥ ४ ॥
गुरु सतगुरु पद परस उमंग कर ।
राधास्वामी चरन सीस धरना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

प्रेम बिन चले न घर की चाल ॥ टेक ॥
सतसंग करे समझ तब आवे ।
गुरु चरनन में प्रीत सम्हाल ॥ १ ॥
गुरु भक्ती की रीत सम्हारे ।
छोड़े जग की चाल और ढाल ॥ २ ॥
गुरु सरूप का धारे ध्याना ।
शब्द सुने तज माया ख्याल ॥ ३ ॥
घट में देखे बिमल प्रकाशा ।
मगन होय सुन शब्द रसाल ॥ ४ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़े तब दिन दिन ।
पावे राधास्वामी दरस बिशाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

आज घट बरखा रिमझिम होत ॥ टेक ॥
प्रेम के मेघा छाय रहे ।
धुनन का खुल गया भारी सोत ॥ १ ॥
सुरत मन भींजत हुए निहाल ।
लखा उजियारा जगमग जोत ॥ २ ॥
गरज धुन सुन सुर्त चली आगे ।
गगन में जाय मैल मन धोत ॥ ३ ॥
काल अब थक रहा करत पुकार ।
रही अब माया सिर धुन रोत ॥ ४ ॥
करी मो पै राधास्वामी दया अपार ।
सुरत अब सत्त शब्द संग पोत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मान तज प्यारी गुरु से मिल ॥ टेक ॥

दीन होय गिर गुरु चरनन में।
शब्द भेद ले झांको तिल ॥ १ ॥
सेवा कर हिये प्रेम बढ़ावो।
जग से मोड़ लगावो दिल ॥ २ ॥
दरस पाय सुर्त अधर चढ़ावो।
गुरु बल तोड़ चलो सिल सिल ॥ ३ ॥
काल करम का बल सब टूटे।
माया की छूटे किल किल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी।
पहुंचावें तोहि धुर मंज़िल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

द्वार घट झांको बिरह जगाय ॥ टेक ॥
यह तो देस बिगाना जानो।
निज घर की गई सुद्ध भुलाय ॥ १ ॥
मन इंद्री संग तन में बंधिया।
भोगन संग रही भरमाय ॥ २ ॥

काल पुर्ष यह जाल बिछाया ।
जीव अनाड़ी फांस फंसाय ॥ ३ ॥
जो जिव संत सरन में आवें ।
उनको जम से लेहैं बचाय ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की सहज जुगत से ।
मन और सूरत अधर चढ़ाय ॥ ५ ॥
द्वारा फोड़ पिंड के पारा ।
अंड ब्रह्मंड तोहि देहैं लखाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला ।
मेहर से निज घर दें पहुंचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

शब्द की झड़ियां लाग रहीं ॥ टेक ॥
सुनत घट बाजे अनेक प्रकार ।
सुरत मन इंद्री जाग रहीं ॥ १ ॥
दया गुरु मच रहा घट में शोर ।
अमी की बुंदियां बरस रहीं ॥ २ ॥

मगन होय सुरत अधर चढ़ती ।
विघनियां मग से भाग गईं ॥ ३ ॥
मेहर से राधास्वामी दई यह दात ।
सखी उन महिमां गाय रहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

आज होली खेलो गुरु संग आय ॥ टेक ॥
तन मन कुमकुम भर भर मारो ।
दृष्टी की पिचकार छुड़ाय ॥ १ ॥
प्रेम रंग निज घट में भर कर ।
गुरु चरनन पर देव छिड़काय ॥ २ ॥
अबिर गुलाल के बादल छाये ।
चहुंदिस अचरज फाग रचाय ॥ ३ ॥
सब सखियां मिल आरत गावें ।
गुरु दरशन कर अति हरखाय ॥ ४ ॥
नई प्रीत और नई परतीती ।
राधास्वामी हिये में दई जगाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

खिला मेरे घट में आज बसंत ॥ टेक ॥
भाग मेरा अचरज जाग रहा ।
हुए अब परसन सतगुरु संत ॥ १ ॥
सुरत मन घट में दीन चढ़ाय ।
कंवल जहां खिल रहे आज अगिंत ॥२॥
शब्द का निरखा घट परकाश ।
मधुर मधुर धुन बजत अनंत ॥ ३ ॥
खेल रही हंसन संग कर प्रीत ।
सुरत हुई सुन में अभय अचिंत ॥ ४ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
राधास्वामी चरनन जाय मिलंत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

आज घट मेघा गरज रहे ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन सुर्त उमगत चाली ।
बिघन वाहि बिरथा बरज रहे ॥ १ ॥

गुरु प्यारे मेरे पूरे सूरे।

मग में रक्षा करत रहे ॥ २ ॥

काल करम और वैरी सारे।

भय से उनके लरज रहे ॥ ३ ॥

निरख दया सर्त और सतसंगी।

चरन राधास्वामी परस रहे ॥ ४ ॥

राधास्वामी महिमां जिन नहिं जानी।

करम संग वे उलझ रहे ॥ ५ ॥

शब्द ४० ॥

आज घट दामिन दमक रही ॥ टेक ॥

घंटा संख धूम अति भारी।

झिल मिल जोती चमक रही ॥ १ ॥

जिन घट भेद सार नहिं जाना।

भोगन में वह अटक रही ॥ २ ॥

किरतम देवा इष्ट सम्हारा।

करम धरम में भटक रही ॥ ३ ॥

जो स्रुत चरन सरन में आई।
धुन संग घट में लटक रही ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रीत हुई गहिरी।
हिये में निस दिन खटक रही ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

हिल मिल गुरु संग करो री पिरीती ॥ टेक ॥
उमंग उमंग सेवा कर निस दिन।
धारो हिये में भक्ती रीती ॥ १ ॥
जाके मन दृढ़ गुरु बिस्वासा।
काल करम को छिन में जीती ॥ २ ॥
याते चेत पड़ो गुरु चरनन।
उमर जाय तेरी योंही बीती ॥ ३ ॥
नर देही अब दुर्लभ पाई।
बिन गुरु भक्ति जाय कर रीती ॥ ४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष सुख दाता।
सरन गहो उन धर परतीती ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

शब्द संग सूरत अधर चढ़ाय ॥ टेक ॥
गुरु की दया संग ले अपने ।
निज घर ओर चलो तुम आय ॥ १ ॥
नभ में जाय सुनो धुन घंटा ।
जोत रूप लख गगन समाय ॥ २ ॥
गुरु मूरत का दरशन करके ।
सुन में अक्षर रूप लखाय ॥ ३ ॥
मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ।
सत्त पुरुष का दरशन पाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारो ।
धाम अनामी जाय समाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

ध्यान धर गुरु चरनन चित लाय ॥ टेक ॥
मन इंद्री सब भरम भुलाने ।
इन संग क्यों तू धोखा खाय ॥ १ ॥

सतगुरु खोज करो उन संगत।
बचन सार उन चित्त बसाय॥ २॥
रूप अनूप निरख उन हित से।
बार बार दर्शन को धाय॥ ३॥
शब्द भेद ले जुगत कमाओ।
धुन में मन और सुरत लगाय॥ ४॥
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ावो।
राधास्वामी मेहर से लें अपनाय॥ ५॥

॥ शब्द ४४॥

सुनो धुन घट में सूरत जोड़॥ टेक॥
गुरु चरनन में धार पिरीती।
मन और इंद्री जग से मोड़॥ १॥
प्रेम भक्ति की रीत सम्हारो।
करम धरम से नाता तोड़॥ २॥
बिरह उमंग ले घट में चालो।
जोत रूप लख तिल को फोड़॥ ३॥

त्रिकुटी जाय सुनी अनहद धुन ।
सुन्न गई संग मन का छोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मिली सोहं से ।
बीन सुनी सतपुर की ओर ॥ ५ ॥
मगन हुई सतगुरु दर्शन पाय ।
राधास्वामी रूप लखा चितधार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

उमंग कर सुनो शब्द घट सार ॥ टेक ॥
यह धुन है धुर लोक की धारा ।
इसने रचन रचाई अपार ॥ १ ॥
अगम रूप और अलख समाना ।
सत्त रूप सत शब्द विचार ॥ २ ॥
शब्द हुआ निजनामी आदन ।
शब्दहि घट घट करे पुकार ॥ ३ ॥
शब्द डोर धुर पद से लागी ।
शब्द पकड़ तुर्त जावें पार ॥ ४ ॥

शब्द भेद और जुगत चलन की ।
सतगुरु तोहि बतावें यार ॥ ५ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
उन मिल कर अभ्यास सम्हार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये धारो ।
पहुंचावें तोहि निज घर बार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

बिसारो मनुआं जग की कार ॥ टेक ॥
सारी बैस बिताई जग में ।
बिरध हुआ अब चेत गंवार ॥ १ ॥
निज घर का ले भेद गुरू से ।
सुरत शब्द मत धारो सार ॥ २ ॥
मन इंद्रियन को फेर जगत से ।
गुरु सरूप ध्याओ धर प्यार ॥ ३ ॥
घट में बाजे हर दम बाजें ।
उमंग सहित सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन गहो हित चित से ।
काज करें तेरा आज संवार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

अचल घर सजनी सुध लीजे ॥ टेक ॥
या जग में नित दुख सुख सहना ।
गुरु मिल आज जतन कीजे ॥ १ ॥
सतसंग वचन सुनो चित देकर ।
उमंग उमंग तन मन दीजे ॥ २ ॥
सतगुरु मेहर परख फिर घट में ।
मन सूरत धुन रस भींजे ॥ ३ ॥
अधर चढ़ो खोलो वज्र किवाड़ा ।
शब्द अमीं रस घट पीजे ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज संवारें ।
काल करम बल सब छीजे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

चलो घर गुरु संग बांध कमर ॥ टेक ॥

सतसंग बचन हिये में धारो ।
घट में लग धुन डोर पकड़ ॥ १ ॥
सतगुरु दया संग ले अपने ।
सुरत चढ़ा दे गगन शिखर ॥ २ ॥
गुरु बल मन इंद्री को बस कर ।
काल कर्म को डाल रगड़ ॥ ३ ॥
मोह माया के बिघन अनेका ।
छोड़ जायं सब तेरी डगर ॥ ४ ॥
सत्त शब्द सुन चली सुर्त आगे ।
राधास्वामी चरन अब पकड़ जकड़ ॥५॥

॥ शब्द ४९ ॥

सुनो मन घट में गुरु बानी ॥ टेक ॥
समझ सतसंग के बचन अमोल ।
प्रीत गुरु चरनन में आनी ॥ १ ॥
शब्द का भेद जुगत लेकर ।
सुरत घट में धुन संग तानी ॥ २ ॥

चरन गुरु हिये में धर बिस्वास ।
सरन उन दृढ़ कर मन मानी ॥ ३ ॥
दया गुरु चढ़ी अधर सूरत ।
छीर पिए घट में तज पानी ॥ ४ ॥
मेहर से दिया सतपुर बिस्राम ।
मिले गुरु राधास्वामी महादानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

शब्द धुन सुनो त्याग मन काम ॥ टेक ॥
जब लग चित भोगन में बहना ।
बसे न हिरदे नाम ॥ १ ॥
याते प्रीत धरो गुरु चरनन ।
मन इंद्रियन को राखो थाम ॥ २ ॥
दया करें गुरु दें उपदेशा ।
धुन में सुरत लगाओ नाम ॥ ३ ॥
धर परतीत गहो गुरु सरना ।
घट में पिओ अमी रस जाम ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर बसे जाय सतपुर ।
जहां काल नहिं कृष्ण और राम ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

खेल रही सूरत फाग नई ॥ टेक ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
राधास्वामी सरन पई ॥ १ ॥
चहुं दिस धुन भनकार सुनावत ।
अमृत धारा बरस रही ॥ २ ॥
अबिर गुलाल रंग लिये हाथा ।
गुरु चरनन पर मलत रही ॥ ३ ॥
प्रेम भरी प्यारी सुरत रंगीली ।
राधास्वामी चरनन लिपट रही ॥ ४ ॥
आरत धार पड़ी चरनन में ।
राधास्वामी गोद बिठाय लई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

हिंडोला भूले सुर्त प्यारी ॥ टेक ॥

सतसंगी सब हिल मिल झूलें ।
सुरत शब्द धारी ॥ १ ॥
राधास्वामी महिमां सब मिल गावें ।
चरन सरन वारी ॥ २ ॥
राधास्वामी दीनदयाल सबन पर ।
मेहर दृष्ट डारी ॥ ३ ॥
पूरा काज बना इक इक का ।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

सखी देखो आज बहार बसंत ॥ टेक ॥
चलो घर श्याम धाम पारा ।
खिली जहां नित फुलवार बसंत ॥ १ ॥
सखी सब आरत गाय रहीं ।
चरन में राधास्वामी पुर्ष अचिंत ॥ २ ॥
करत रहीं दरशन दृष्टी जोड़ ।
हरख रहीं लख २ शोभ अनंत ॥ ३ ॥

अमीं की धारा हुई जारी।
धुनन का घट में शोर मचंत ॥ ४ ॥
जो जिव जग से उबरा चाहें।
राधास्वामी नाम जपैं निज मंत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

सुरत आई उमगत गुरु के पास ॥ टेक॥
प्रीत सहित करती सतसंगा।
धर हिये में चरनन बिस्वास ॥ १ ॥
भोग बासना जग की त्यागी।
गुरु चरनन बिन और न आस ॥ २ ॥
बचन सुनत हिये बढ़त उमंगा।
सेव करत घट होत हुलास ॥ ३ ॥
दरस रस मनुआं छिन छिन लेत।
शब्द संग सुरत चढ़त आकाश ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी बरनी न जाय।
दिया मोहि निज चरनन में बास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सुरत हुई मगन दरस गुरु पाय ॥टेक॥

वचन सुन सीतल हुई मन में ।

भेद पाय सुर्त शब्द लगाय ॥ १ ॥

प्रीत बढ़ी सुन सुन धुन घट में ।

हिये में दृढ़ परतीत बसाय ॥ २ ॥

दया मेहर गुरु परखत छिन छिन ।

उमंग उमंग सेवा को धाय ॥ ३ ॥

हरख हरख सुर्त चढ़त अधर में ।

घंटा संख और गरज सुनाय ॥ ४ ॥

सारंग मुरली वीन बजावत ।

राधास्वामी सन्मुख आरत गाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

नाम रंग घट में लागा री ॥ टेक ॥

सुनत गुरु प्यारे के बचना ।

सोवता मनुआं जागा री ॥ १ ॥

बढ़त गुरु चरनन में प्रीती ।
तजत जग भोग और रागा री ॥ २ ॥
प्रेम अंग ले उपदेश सम्हार ।
सुनत घट अनहद रागा री ॥ ३ ॥
मेहर गुरु चढ़त सुरत गगना ।
देश माया का त्यागा री ॥ ४ ॥
चरन में राधास्वामी पहुंची धाय ।
जगा मेरा अचरज भागा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

तन मन धन से भक्ति करो री ॥ टेक ॥
कोरी भक्ति काम नहिं आवे ।
याते हिये में प्रेम भरो री ॥ १ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी चरनन में ।
और सतसंग में प्रीत धरो री ॥ २ ॥
दया करें गुरु भेद बतावें ।
तब धुन संग सुर्त अधर चढ़ोरी ॥ ३ ॥

दीन ग़रीबी धार हिये में ।
उमंग उमंग गुरु चरन पड़ोरी ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
भौसागर से सहज तरो री ॥ ५ ॥

॥ प्रेम बहार भाग तीसरा ॥

॥ शब्द १ ॥

छबीले छबि लगे तोरी प्यारी ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहित हुई छिन में।
मुखड़े पर मैं वारी ॥ १ ॥
अचरज दरस दिखाया मुझ को।
चरनन पर बलिहारी ॥ २ ॥
राधास्वामी अंग लगावो मेहर से।
तन मन से कर न्यारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

रंगीले रंग देव चुनर हमारी ॥ टेक ॥
ऐसा रंग रंगो किरपा कर।
जग से हो जाय न्यारी ॥ १ ॥
यह मन नित्त उपाध उठावत।
याको गढ़ लो सारी ॥ २ ॥

निरमल होय प्रेम रंग भींजे।
जावे गगन अटारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब भारी।
सुरत अगम पग धारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे मेहर करो अब।
जल्दी लेव सुधारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

रसीले छोड़ो अमृत धारा ॥ टेक ॥
यह धारा दस द्वार से उठती।
भींजे तन मन सारा ॥ १ ॥
यह धारा झनकार सुनावत।
भिन्न भिन्न धुन न्यारा ॥ २ ॥
यह धारा बिन भाग न मिलती।
पावे कोइ गुरु का प्यारा ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे हुए दयाला।
मोहिं लीना मगन सम्हारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दयाला मोहिं लीजै तारी ॥ टेक ॥
तुम्हरी दया की महिमा भारी।
मैं हूं पतित अनाड़ी ॥ १ ॥
जग में सारी बैस बिताई।
भरमत रहा उजाड़ी ॥ २ ॥
मेहर करो मोहिं चरन लगावो।
शब्द भेद देव सारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी गत है अगम अपारा।
छिन में कर दो पारी ॥ ४ ॥
मैं बल जाउं चरन पर तुम्हरे।
तन मन धन सब वारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु पूरे।
लीना मोहिं उबारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

पियारे मेरे सतगुरु दाता ॥ टेक ॥

देखत रहूं रूप मन भावन ।
और न कोई सुहाता ॥ १ ॥
पावत रहूं अमीं परशादी ।
और नहीं कुछ भाता ॥ २ ॥
चरन कंवल सेवत रहूं निस दिन ।
और न कहीं मन जाता ॥ ३ ॥
गुन गाऊं नित चरन धियाऊं ।
और ख्याल नहिं लाता ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे बसें हिये में ।
और न चित्त समाता ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अनामी प्यारे राधास्वामी ॥ टेक ॥
गत मत तुम्हरी कोउ नहिं जाने ।
घट घट अंतरजामी ॥ १ ॥
देस तुम्हारा सब से न्यारा ।
नहीं वहां रूप्या न नामी ॥ २ ॥

महिमा तुम्हरी अति से भारी ।
को कर सके बखानी ॥ ३ ॥
प्रेमी जन तुम चरन धियावें ।
जग से होय निःकामी ॥ ४ ॥
राधास्वामी गुन गाऊं मैं नित नित ।
मोहिं लीना चरन मिलानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अनंता तेरी गत नहिं जानी ॥टेक॥
अपना भेद आप तुम गाया ।
संत रूप जग आनी ॥ १ ॥
बड़ भागी जिन दर्शन पाये ।
चरनन में लिपटानी ॥ २ ॥
शब्द भेद दे लिया अपनाई ।
सूरत अधर चढ़ानी ॥ ३ ॥
जिन तुम चरनन प्रीत न आनी ।
जग में रहे अटकानी ॥ ४ ॥

मोपै दया करी राधास्वामी।
दीना चरन ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अडोला तेरी महिमा भारी ॥ टेक ॥
प्रेम सिंध है रूप तुम्हारा।
निज कर सोत और पोत कहारी ॥ १ ॥
दया मेहर का वार न पारा।
सब को खैंच मिलारी ॥ २ ॥
धुन धधकार मौज से जारी।
प्रेम दया की धार बहारी ॥ ३ ॥
अगम अलख का रूप सँवारा।
सत्त रूप होय निज करनारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मौज अस धारी।
सब के हैं निज मात पितारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अबोला तेरी लीला भारी ॥ टेक ॥

अंस दोय सतपुर से निकसीं।
तिरलोकी उन लीन रचा री ॥ १ ॥
माया काल धूम अति डारी।
सब जिव लीन फंसा री ॥ २ ॥
राधास्वामी संत रूप धर आये।
काल करम का ज़ोर घटा री ॥ ३ ॥
जिन जिन उनका बचन सम्हारा।
उन जीवन को लीन छुड़ा री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का कर अभ्यासा।
राधास्वामी सरन हिये बिच धारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

आज गुरु आये जग तारन।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥
रूप उन धारा मन भावन।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
लगे जो जीव चरनन से।
छुटे वह करम भरमन से ॥

गही सब शब्द की धारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
किया सतसंग उन चित से ।
गही सतगुरु सरन हित से ॥
मेहर से हो गए पावन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
किया राधास्वामी उन अपना ।
दूर किया जगत में खपना ॥
दई निज चरन में ठाऊं ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
गाऊं क्या महिमा राधास्वामी ।
कोई उन गत नहीं जानी ॥
दया का वार नहिं पारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

दरस गुरु भाग से मिलिया ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥

दया से संग में रलिया।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥
दीन होय मेहर गुरु पाई।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
शब्द का भेद दरसाई।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥
नाम का रंग घट लागा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
प्रेम हिये में नया जागा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥
रूप गुरु लागा अति प्यारा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
सुना घट शब्द झनकारा।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥
दया राधास्वामी क्या गाऊं।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥
चरन पर नित्त बल जाऊं।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

बचन सतगुरू सुने भारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
भेद घट का मिला सारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
लगी धुन में सुरत प्यारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
खिली पच रंग फुलवारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
जोत लख गगन गरजा री ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
चंद्र और सूर परखा री ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
अमरपुर बीन झनकारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
चरन राधास्वामी पर वारी ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ८ ॥

॥ शब्द १३ ॥

अजब राधास्वामी मत न्यारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥
बहत जहाँ प्रेम की धारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥
चरन गुरु भाव धर प्यारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥
सुनत धुन शब्द झनकारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥
होत अस सहज निरवारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥
चढ़त सुर्त फोड़ दस द्वारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ६ ॥
गई सतपुर्ष दरबारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ७ ॥
मेहर हुई आगे पग धारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ८ ॥
मिला राधास्वामी पद सारा ।
ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मिले मोहिं आज गुरु पूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ १ ॥

बजन लागे घट अनहद तूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ २ ॥

मान मद मोह हुए चूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ३ ॥

हुआ मन गुरु चरनन धूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ४ ॥

लखा अब घट में सत नूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ५ ॥

काल और करम रहे झूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ६ ॥

मेहर मोपे कीनी गुरु सूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ७ ॥

मिला अब राधास्वामी पद मूरे ।

ओहो हो हो अहा हाहा ॥ ८ ॥

॥ शब्द १५ ॥

बढ़त सतसंग अब दिन दिन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ १ ॥
जीव बहु लागे अब तरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ॥
दया राधास्वामी क्या बरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
पड़े जो जीव उन चरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
छूट गया जन्म और मरनन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
परस गुरु पद हुए तारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
सत्तपुर हंस गत[illegible]ारन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
सरन में राधास्वामी निज धावन ।
अहा हाहा ओहो हो हो ॥ ८ ॥